फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 239 प्रभात जयपुर, शुक्रवार 3 अप्रैल, 2026 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

The 'City of Witches' Centuries ago, it was said that Benevento was a gathering place for the occult. Today, superstitions still run deep

Marilyn Monroe and the Potato Sack Dress

The Love Story of Iqbal, Hasrat Jaipuri

महिला आरक्षण को चुनाव का मुद्दा बनाना चाहती है सरकार

इस सोच के तहत संसद में तीन दिन का विशेष सत्र आहूत किया जा रहा है, 16 से 18 अप्रैल को

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 अप्रैल। संसद के बजट सत्र में एक तीसरा विशेष सत्र देखने को मिलेगा, जिसे 16 से 18 अप्रैल तक तीन दिनों के लिए बुलाया जाएगा, ताकि महिला आरक्षण विधेयक पारित किया जा सके।

लोकसभा और राज्यसभा को आज निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार स्थगित कर दिया गया, लेकिन अनिश्चितकाल के लिए नहीं।

दोनों सदनों की 16 अप्रैल को फिर से बैठक होगी, जहां सरकार महिलाओं को आरक्षण देने के लिए संशोधित विधेयक पेश करेगी।

महिलाओं को आरक्षण देने की अपनी मंशा का संकेत देने की जल्दबाजी में सरकार इसे परिसीमन के लिए 2011 की जनगणना से जोड़ना चाहती है, जो अब पुरानी हो चुकी है और इसका कोई खास औचित्य नहीं माना जा रहा है।

- **इस मकसद से सत्र में विशेष संविधान संशोधन विधेयक पेश होगा। हालांकि, अभी सरकार के सांसदों की पर्याप्त संख्या नहीं है, इस संशोधन विधेयक को पारित कराने के लिए, पर फिर भी सरकार इस संशोधन विधेयक को पेश करने के लिए अड़ी हुई है।**
- **सरकार का मानना है कि अगर विधेयक पारित नहीं हुआ तो यह मैसेज तो जाएगा ही, कि सरकार महिला आरक्षण के पूर्णतया पक्ष में है। पर, विपक्ष सरकार के इस प्रयास को सफल नहीं होने दे रहा है।**
- **क्योंकि, विपक्ष, इस दौरान विधानसभा चुनाव में व्यस्त होगा। अतः सरकार की सोच है कि महिला आरक्षण संशोधन विधेयक पारित करने का पूरा नाटक वह आसानी से रच सकेगी।**

अन्य संशोधन भी प्रस्तावित हैं, लेकिन राजनीतिक दल अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए भी आरक्षण की मांग कर रहे हैं।

कुल मिलाकर, यह संवैधानिक संशोधन विधेयक पारित करना आसान नहीं है, क्योंकि सत्तारूढ़ भाजपा के पास पर्याप्त संख्या नहीं है।

भले ही यह पूरा मामला एक राजनीतिक नाटक साबित हो और विधेयक पारित न हो, पर सरकार यह प्रचार जारी रख सकती है कि वह विधेयक पास करना चाहती थी, लेकिन विपक्ष इसके लिए तैयार नहीं था।

यह रास्ता आसान नहीं है, लेकिन सरकार इस मुद्दे को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध दिख रही है।

इस बीच, विपक्षी दल विधानसभा चुनावों में व्यस्त हैं और भाजपा इससे राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश कर रही है।

महिलाओं के मुद्दे पर लोकसभा और राज्यसभा में तीन दिनों तक खींचतान और राजनीतिक टकराव देखने को मिलेगा।

एसआई भर्ती 2025 में 2021 के अभ्यर्थियों को शामिल करने के आदेश

जयपुर, 2 अप्रैल। सुप्रीम कोर्ट ने प्रदेश की एसआई, प्लाटून कमांडर भर्ती परीक्षा 2025 से जुड़े मामले में एसआई भर्ती, 2021 में भाग ले चुके अभ्यर्थियों को अंतरिम राहत दी है। अदालत ने इन्हें अस्थाई तौर पर 5 व 6 अप्रैल को होने वाली भर्ती परीक्षा में शामिल करने को कहा है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि परीक्षा में शामिल होने मात्र से अभ्यर्थियों को कोई विशेष अधिकार प्राप्त नहीं होगा। ऐसे अभ्यर्थियों के

- **सुप्रीम कोर्ट ने 2021 की एसआई भर्ती में भाग ले चुके अभ्यर्थियों को राहत दी।**

परिणाम तब तक घोषित नहीं किए जाएंगे, जब तक संबंधित हाईकोर्ट अपना अंतिम निर्णय नहीं सुना देता। जस्टिस दीपांकर दत्ता की खंडपीठ ने यह आदेश सूरजमल मीणा के प्रार्थना पत्र को निस्तारित करते हुए दिया। अदालत ने संबंधित अभ्यर्थियों को कहा है कि वे अदालती आदेश की कॉपी 4 अप्रैल तक परीक्षा प्राधिकरण के समक्ष उपस्थित होकर जमा कराए और वहां से अपने एडमिट कार्ड प्राप्त करें।

प्रार्थी पक्ष की ओर से सीनियर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सात जजों को नौ घंटे बंधक बनाकर रखा गया बंगाल के मालदा जिले में

ये जुडिशियल अफसर एसआईआर प्रक्रिया के तहत वोटर लिस्ट के सत्यापन का कार्य कर रहे थे

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 अप्रैल। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पश्चिम बंगाल में कानून-व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। राज्य विधानसभा चुनावों से पहले की जमीनी हकीकत बेहद चिंताजनक बताई जा रही है। हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि राज्य में अराजकता का माहौल व्याप्त है।

मालदा जिले के मोथाबाड़ी क्षेत्र में एक घटना सामने आई, जिसमें एसआईआर कार्य कर रहे न्यायिक अधिकारियों की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया। इसके बाद, सर्वोच्च न्यायालय ने चुनाव आयोग को निर्देश दिया है कि इन अधिकारियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। देर रात केन्द्रीय बलों की एक टुकड़ी ने मौके पर पहुंचकर इन अधिकारियों को सुरक्षित बाहर निकाला।

राज्य में कानून-व्यवस्था से जुड़े घटनाक्रम लगातार सामने आ रहे हैं। आरोप है कि ये घटनाएं उसी तरह हो रही हैं, जैसा कि राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी लोगों से करने का आ ान कर रही हैं। बताया गया कि महिलाओं

- **सुप्रीम कोर्ट ने इस घटना का उदाहरण देते हुए टिप्पणी की कि बंगाल में हर चीज का ''राजनीतिकरण'' हो चुका है। अतः सवाल यह उठ रहा है कि केन्द्रीय सरकार, प्रदेश में बढ़ती अराजकता व हिंसा के खिलाफ कोई कार्यवाही क्यों नहीं कर रही।**
- **ममता बनर्जी इस मुद्दे पर सार्वजनिक मंच से हिंसा प्रतिपादित कर रही है तथा कह रही हैं कि एसआईआर की प्रक्रिया के तहत वोटर लिस्ट के सत्यापन का कार्य पूरा नहीं होने देगें।**
- **यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इन जुडिशियल अफसरों ने राज्य सरकार को और कोलकाता हाई कोर्ट को पहले ही सूचित कर दिया, अपनी सुरक्षा के बारे में, विशेषकर उस क्षेत्र में जहाँ कि सत्यापन का काम कर रहे थे।**
- **सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने राज्य सरकार की भारी भर्त्सना की, इन जुडिशियल अफसरों को पूरी सुरक्षा प्रदान नहीं करने के कारण। सुप्रीम कोर्ट के अनुसार, अगर जुडिशियल अफसरों को ही सुरक्षा प्रदान नहीं की जा सकती तो निष्पक्ष, निडर, चुनाव होने की संभावना की कल्पना ही व्यर्थ है।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आप ने राघव चड्ढा को राज्यसभा में पार्टी के उपनेता पद से हटाया

आम आदमी पार्टी ने राघव चड्ढा की जगह लवली युनिवर्सिटी के चीफ अशोक मित्तल की नियुक्ति की है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 अप्रेल। आम आदमी पार्टी (आप) के शीर्ष नेतृत्व ने पार्टी लाइन का उल्लंघन करने के कारण राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा को उच्च सदन में पार्टी के उपनेता पद से हटा दिया है और उनकी जगह अशोक मित्तल को नियुक्त किया है, जो लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी के संस्थापक-चेयरमैन हैं।

गुरुवार को आप की ओर से राज्यसभा सचिवालय को एक पत्र भेजा गया, जिसमें पार्टी के उपनेता पद के लिये पंजाब से निर्विरोध चुने गए मित्तल का नाम प्रस्तावित किया गया।

मित्तल ने मीडिया से कहा, ''हमारी पार्टी में हर किसी को बोलने का समय मिलता है; यह एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया है। राघव चड्ढा को भी भविष्य में राज्यसभा में बोलने का अवसर दिया जाएगा।''

- **आम आदमी पार्टी की ओर से राज्यसभा सचिवालय को पत्र भेजकर मित्तल की नियुक्ति की सूचना दी गई तथा पत्र में राघव चड्ढा को वक्ताओं की सूची से बाहर रखने का आग्रह भी किया गया है।**
- **आप नेतृत्व का आरोप है कि राघव काफी समय से पार्टी लाइन फॉलो नहीं कर रहे थे, पार्टी के वॉकआउट के समय भी वे सदन में बैठे रहते थे, यही नहीं उन्होंने पार्टी नेतृत्व से भी दूरी बना ली है।**
- **चर्चा है कि राघव भाजपा नेतृत्व के सम्पर्क में भी है। इसलिए आप ने पंजाब से राज्यसभा सांसद और लवली युनिवर्सिटी के संस्थापक चेयरमैन अशोक मित्तल को राज्यसभा में उपनेता बना दिया है।**

आप ने राज्यसभा सचिवालय से यह भी अनुरोध किया है कि चड्ढा को वक्ताओं की सूची से बाहर रखा जाए।

सूत्रों के अनुसार, 37 वर्षीय चड्ढा पिछले कुछ महीनों में कई बार सदन में पार्टी लाइन के खिलाफ जाते रहे हैं।

12 मार्च को जब मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाया गया, जिस पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वृद्धा से 80 लाख की साइबर ठगी करने वाले की अग्रिम जमानत से इंकार

जयपुर, 2 अप्रेल (निसं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने अजमेर की 83 साल की वृद्धा को डिजिटल अरेस्ट कर करीब 80 लाख रुपए की ठगी के मामले में आरोपी को अग्रिम जमानत देने से इनकार कर दिया है। जस्टिस समीर जैन ने यह आदेश नवीन टेमानी की ओर से

- **हाई कोर्ट ने कहा कि यह कोई ऐसा मामला नहीं है, जो समझौते से सुलझाया जा सके।**

दायर द्वितीय अग्रिम जमानत याचिका को खारिज करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि यह कोई ऐसा मामला नहीं है, जिसे समझौते से सुलझाया जा सकता है, बल्कि यह एक संगठित अंतरराष्ट्रीय गंभीर अपराध है, अदालत ने कहा कि यह योजनाबद्ध तरीके से किया गया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'5037 बीघा में कितनी ज़मीन पर अतिक्रमण है, नक्शा बनाकर पेश करो'

हाई कोर्ट में 5037 बीघा ज़मीन पर से अतिक्रमण हटाने की दायर जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान आदेश दिया

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 2 अप्रेल। राजस्थान हाईकोर्ट ने हाउसिंग बोर्ड द्वारा जयपुर में अवाप्त की जा रही 5037 बीघा जमीन में से काफी बड़े हिस्से पर अतिक्रमण हटाने के संबंध में 'पब्लिक अगेन्सट करप्शन' नामक एनजीओ द्वारा दायर जनहित याचिका पर सुनवाई की। न्यायाधीश पुष्पेन्द्र भाटी और पुनीत कुमार माथुर ने एडिशनल सॉलिसीटर जनरल (ए.एस.जी.) के आश्वासन को मद्देनज़र रखते हुए आदेश दिये हैं कि राजस्थान सरकार सुनिश्चित करे कि उक्त भूखंड में शेष खुले स्थानों पर अतिक्रमण किसी भी हालत में नहीं होने दिये जायेगा। अदालत ने आदेश में आगे कहा कि हाउसिंग बोर्ड व याचिकाकर्ता के वकील पूरे क्षेत्र का विस्तृत मैप बनायें, जिसमें विवादित क्षेत्र और खुले क्षेत्रों को अच्छे से अंकित किया गया हो, ताकि अतिक्रमण होने से रोका जा सके।

- **याचिकाकर्ता, ''पब्लिक अगेन्स्ट करप्शन'' ने अदालत में याचिका दायर करते हुए कहा कि 12 मार्च 2025 को हाई कोर्ट ने आदेश दिये थे कि हाउसिंग बोर्ड के द्वारा अवाप्त की जा रही है, 5 हजार बीघा से भी अधिक भूमि पर से गैरकानूनी अतिक्रमण को पूरी तरह हटाया गया है, परंतु अदालती आदेशों के बावजूद, इस मामले में कोई कार्यवाही नहीं की जा रही थी।**
- **हाउसिंग बोर्ड ने कहा, कुल अवाप्त 5037 बीघा ज़मीन में से 4000 बीघा पर हमारा कब्ज़ा है, शेष 1037 बीघा ज़मीन पर कुछ जरुरतमंदों ने कब्ज़ा कर रखा है।**

अदालत ने इस दस्तावेज को बनाने व अदालत में पेश करने के लिये हाउसिंग बोर्ड व याचिकाकर्ता को समय दिया है और इस मामले की अगली तारीख 1 मई, 2026 तय की है।

इस मामले में याचिकाकर्ता की ओर से जनहित याचिका यह कहते हुए दायर की गई है कि 12 मार्च 2025 को अदालत ने आदेश दिये थे कि हाउसिंग बोर्ड के द्वारा अवाप्त की जा रही 5 हजार बीघा से भी अधिक भूमि पर से गैरकानूनी अतिक्रमण को पूरी तरह हटाया गया है, परंतु अदालती आदेशों के बावजूद इस मामले में कोई कार्यवाही नहीं की जा रही थी।

इस मामले की सुनवाई के दौरान एएसजी भरत व्यास की ओर से कहा गया है कि 5037 बीघा में से 4000 बीघा जमीन हाउसिंग बोर्ड द्वारा अवाप्त की जा चुकी है और उसका कब्जा है। शेष भूमि पर कई जगह अतिक्रमण हैं, परंतु वह इसलिये हैं कि जयपुर में शहरीकरण बहुत तेजी से हुआ है और बाहर से आये लोगों को शहर में बसाने के लिये गैरकानूनी कॉलोनियां काटी गई। उन्होंने कहा कि शहरीकरण रोकना अत्यंत ही मुश्किल काम है। हालांकि गैरकानूनी सोसायटी काटने से सुनियोजित विकास नहीं किया जा सकता है, परंतु राज्य सरकारों को शहर के बाहर से आये गरीबों और रोजगार की खोज में आये लोगों की आवश्यकताओं को भी देखना जरूरी है। उन्होंने अदालत को इस तथ्य से इस मुद्दे पर संवेदनशील करना चाहा कि अतिक्रमण हटाने से कई गरीबों के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आईपैक के विभिन्न ठिकानों पर ईडी की रेड

बेंगलुरु, 02 अप्रैल। पश्चिम बंगाल में वोटिंग से पहले एक बार फिर से आईपैक के कई ठिकानों पर ईडी ने रेड की। बेंगलुरु, हैदराबाद और दिल्ली में यह कार्यवाही चल रही है। इससे पहले कोलकाता स्थित ऑफिस में ईडी की रेड हुई थी। छापेमारी के दौरान पश्चिम बंगाल

- **आईपैक ममता बनर्जी की पार्टी का चुनाव प्रबंधन संभाल रही है और यह रेड कोयला तस्करी के मामले में की जा रही है।**

की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी वहां पहुंच गई थीं। इस दौरान खूब सियासी बवाल हुआ था।

दरअसल, ईडी की यह छापेमारी कोयले की तस्करी को लेकर चल रही है। दिल्ली, बेंगलुरु और हैदराबाद में चल रही है। आईपैक पश्चिम बंगाल में टीएमसी के लिए चुनाव प्रबंधन का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अदालती आदेश के बावजूद चुनाव कार्यक्रम आगे बढ़ाने पर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन आयोग को अवमानना नोटिस

हाईकोर्ट ने यह आदेश पूर्व विधायक संयम लोढ़ा की ओर से दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए दिये

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 2 अप्रेल। प्रदेश में अदालती आदेशों के बावजूद स्वायत्तशासी ग्रामीण व शहरी निकायों के चुनाव समय पर आयोजित नहीं कराये जाने के खिलाफ, पूर्व विधायक संयम लोढ़ा की ओर से दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई हुई। मामले पर नाराजगी जताते हुए कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश एस पी शर्मा और न्यायाधीश शुभा मेहता ने प्रदेश के निर्वाचन आयोग समेत, मुख्य चुनाव अधिकारियों को अवमानना नोटिस जारी कर दिये। अदालत ने मौखिक टिप्पणी में कहा, जब अदालत यह तय कर चुकी है कि 15 अप्रैल से पहले निकायों के चुनाव आयोजित किये जाने हैं तो निर्वाचन आयोग चुनाव के कार्यक्रम को स्वत: ही आगे कैसे बढ़ा सकता है, जबकि

- **याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता पूनीत सिंघवी ने अदालत को बताया कि 14 नवंबर 2025 को हाईकोर्ट की खंडपीठ ने 439 चुनावी याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए आदेश दिये थे कि 15 फरवरी 2026 तक प्रदेश के सभी स्वायतशासी निकायों के चुनाव आयोजित करा दिये जाये।**
- **परंतु अदालती आदेशों के बावजूद मुख्य निर्वाचन आयोग ने 20 फरवरी, 2026 को आदेश जारी करे, जिसके तहत मतदाता सूची 22 अप्रैल तक तय की जायेगी और फिर उसका अंतिम प्रकाशन होगा और चुनाव उसके बाद ही हो सकेगा।**

अदालत ने इसकी न तो कोई अनुमति दी है, और न ही अदालत से अनुमति मांगी गई है।

इस मामले में याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता पुनीत सिंघवी पैरवी के लिये प्रस्तुत हुए थे। उन्होंने अदालत को सूचित किया कि 14 नवंबर 2025 को हाईकोर्ट की खंडपीठ ने 439 चुनावी याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए आदेश दिये थे कि 15 फरवरी 2026 तक प्रदेश के सभी निकायों के चुनाव आयोजित करा दिये जायें। इस मामले में अदालत ने राज्य सरकार को यह भी आदेश दिये थे कि परिसीमन की प्रक्रिया 31 दिसंबर 2025 तक पूरी कर ली जाये। उन्होंने अदालत को यह भी बताया कि चुनाव आयोजित नहीं कराने की वजह से कई निकाय गैरकानूनी तरीके से अपने कार्यकाल से डेढ़ से दो वर्ष अधिक से कार्यरत हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव नहीं आयोजित होने की वजह से आम जनता के वोट डालने के संविधानिक हक को छीना जा रहा है। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया है कि इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए अदालत ने आदेश दिये थे कि 15 फरवरी तक चुनाव करा दिये जायें।

पुनीत सिंघवी ने अदालत को बताया कि अदालती आदेशों के बावजूद, निर्वाचन आयोग ने 20 फरवरी, 2026 को आदेश जारी किये, जिनके तहत मतदाता सूची 22 अप्रैल तक तय की जायेगी और उसका अंतिम प्रकाशन हो जायेगा। उन्होंने अदालत को कहा कि ऐसी स्थिति में 15 अप्रैल तक चुनाव आयोजित कराने के आदेश की पालना असंभव है। इस पर अदालत ने नाराजगी जताई और टिप्पणी की कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आईआरजीसी कमांडर फतह अलीजादेह की मौत

तेहरान, 02 अप्रैल। पश्चिम एशिया में जारी भारी तनाव के बीच ईरान को एक और झटका लगा है। ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) की बेहद खतरनाक मानी जाने वाली फतेहिन स्पेशल यूनिट के कमांडर मोहम्मद अली फतह

- **ईरानी मीडिया के मुताबिक, फतह अलीजादेह की मौत बुधवार को तेहरान में जारी अमेरिकी और इज़रायली हवाई हमलों के दौरान हुई।**

अलीजादेह की मौत हो गई है। ईरानी मीडिया के मुताबिक, फतह अलीजादेह की मौत बुधवार को तेहरान में जारी अमेरिकी और इज़रायली हवाई हमलों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

स्वयं को बदल दो, भाग्य बदल जायेगा –कहावत

एक जिला एक उत्पाद नीति राजस्थान : लोकल टू ग्लोबल

राजस्थान की आत्मनिर्भरता की यात्रा में एक जिला एक उत्पाद (ODOP) नीति एक क्रांतिकारी कदम साबित हो रही है। यह नीति स्थानीय कारीगरों, किसानों और छोटे उद्यमियों को वैश्विक पटल पर चमकाने का माध्यम बन गई है। राजस्थान सरकार ने इस नीति को अपनाते हुए रेगिस्तानी राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को आर्थिक शक्ति में बदलने का संकल्प लिया है। लोकल टू ग्लोबल का मंत्र यहां साकार हो रहा है, जहां जिले के पारंपरिक उत्पाद न केवल स्थानीय बाजारों में मजबूत हो रहे हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी अपनी पहचान बना रहे हैं। राजस्थान, जो अपनी रंगीन संस्कृति, हस्तशिल्प और कृषि उत्पादों के लिए जाना जाता है, इस नीति के माध्यम से आर्थिक विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2020 में शुरू की गई ODOP योजना का उद्देश्य प्रत्येक जिले की विशिष्टता को पहचानना और उसे बढ़ावा देना है। राजस्थान सरकार ने इसे तुरंत अपनाया और 2021 से राज्य स्तर पर इसे लागू किया। राजस्थान सरकार ने इसे प्राथमिकता दी। राज्य में 33 जिलों में से प्रत्येक के लिए एक प्रमुख उत्पाद चुना गया, जो स्थानीय संसाधनों, परंपराओं और बाजार क्षमति पर आधारित है। उदाहरणस्वरूप, बाड़मेर का लेहरीया प्रिंट, जोधपुर का मोतीकारी कढ़ाई, जयपुर का हस्तशिल्प, उदयपुर का मिनिएचर पेंटिंग और अलवर का मोर पंख शिल्प इनकी बानगी भर हैं। ये उत्पाद न केवल राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान हैं, बल्कि रोजगार सृजन के स्त्रोत भी बन रहे हैं।

राजस्थान सरकार के प्रयासों ने ODOP को ठोस जमीन प्रदान की है। उद्योग विभाग, RIICO और राजस्थान छोटे उद्योग एवं निर्यात निगम (RIICO) ने संयुक्त रूप से कार्य योजना बनाई। प्रत्येक जिले में ODOP हब स्थापित किए गए, जहां कारीगरों को प्रशिक्षण, डिजाइन सुधार, पैकेजिंग और मार्केटिंग की सुविधा दी जाती है। सरकार ने 100 करोड़ रुपये से अधिक का बजट आवंटित किया, जिसमें सब्सिडी, मशीनरी खरीद और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से जोड़ने पर जोर दिया गया। आर्ट ऑफ राजस्थान पोर्टल लॉन्च किया गया, जो ODOP उत्पादों को ऑनलाइन बेचने का केंद्र है। इसके अलावा, राजस्थान ग्रांडीयोज ब्रांड बनाया गया, जो वैश्विक बाजारों में राजस्थानी उत्पादों की एकरूप छवि प्रस्तुत करता है।

ODOP के तहत राजस्थान के जिलों ने अपनी विशिष्टताओं को निखारा है। बाड़मेर में लेहरीया और बंधेज साड़ियां अब दुबई और अमेरिका के बाजारों तक पहुंच रही हैं। यहां 500 से अधिक कारीगरों को प्रशिक्षित किया गया, जिससे उनका उत्पादन 40 प्रतिशत बढ़ा। जोधपुर का ब्लू सिटी अब मोतीकारी फर्नीचर के लिए जाना जाता है। सरकार ने यहां ODOP क्लस्टर विकसित किया, जहां डिजाइन वर्कशॉप आयोजित होते हैं। जयपुर का ब्लू पॉटरी और कीमती पत्थर उद्योग को बढ़ावा मिला। अलवर के हस्तशिल्प और दौसा के आंवला उत्पाद ने जैविक खेती को प्रोत्साहित किया। कोटा का कोटा स्टोन और बांसवाड़ा का बांस उत्पाद भी चमक रहे हैं। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि कैसे स्थानीय संसाधन वैश्विक अवसर बन रहे हैं।

यह नीति स्थानीय कारीगरों, किसानों और छोटे उद्यमियों को वैश्विक पटल पर चमकाने का माध्यम बन गई है। राजस्थान सरकार ने इस नीति को अपनाते हुए रेगिस्तानी राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को आर्थिक शक्ति में बदलने का संकल्प लिया है। लोकल टू ग्लोबल का मंत्र यहां साकार हो रहा है, जहां जिले के पारंपरिक उत्पाद न केवल स्थानीय बाजारों में मजबूत हो रहे हैं,

सरकार ने मार्केटिंग पर विशेष ध्यान दिया। इंडियन इंटरनेशनल ट्रेड फेयर (ODOP) में राजस्थान पवेलियन ODOP उत्पादों का केंद्र बना। दुबई एक्सपो 2020 और कंबोडिया के अंतरराष्ट्रीय मेलों में भागीदारी से निर्यात बढ़ा। ई-कॉमर्स के माध्यम से अमेजन, फ्लिपकार्ट और ईटीसी प्लेटफॉर्म पर ODOP स्टोर खोले गए। वोकल फॉर लोकल अभियान के तहत सोशल मीडिया कैंपेन चलाए गए, जिसमें इंस्टाग्राम और फेसबुक पर लाखों व्यूज मिले। राजस्थान पर्यटन के साथ लिंकेज बनाकर हैंडीक्राफ्ट टूर्स शुरू किए, जहां पर्यटक सीधे कारीगरों से उत्पाद खरीदते हैं। इससे न केवल बिक्री बढ़ी, बल्कि सांस्कृतिक पर्यटन को भी बल मिला।

प्रशिक्षण और स्किल डेवलपमेंट ध्॰ध्ङ्क का मजबूत आधार हैं। राजस्थान स्किल एंड लाइवलीहुड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (RSLDC) ने 10,000 से अधिक कारीगरों को डिजिटल मार्केटिंग, क्वालिटी कंट्रोल और पैकेजिंग का प्रशिक्षण दिया। महिला सशक्तिकरण पर जोर देते हुए स्वयं सहायता समूहों (SHG) को जोड़ा गया। उदाहरण के लिए, उदयपुर के बांसवाड़ा में आदिवासी महिलाओं को बांस उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण देकर बाजार से जोड़ा गया। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हुई। सरकार ने जीआई टैग आवेदन तेज किए, जैसे बाड़मेर का बंधेज और कोटा का डोरिया साड़ी को मान्यता मिली। यह ब्रांड वैल्यू बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ।

चुनौतियां भी हैं, जिन्हें सरकार दूर करने में जुटी है। कच्चे माल की कमी, बाजार पहुंच और तकनीकी पिछड़ापन प्रमुख हैं। रेगिस्तानी जलवायु में रंगाई-प्रक्रिया प्रभावित होती है, इसलिए सोलर ड्रायर और वाटर हार्वेस्टिंग योजनाएं शुरू की गईं। डिजिटल साक्षरता के अभाव को दूर करने हेतु मोबाइल वैन भेजी जा रही हैं। कोविड-19 के बाद सप्लाई चेन बाधित हुई, लेकिन ODOP ने इसे अवसर में बदला परिणामस्वरूप, 2023-24 में ODOP से 500 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जो पिछले वर्ष से 25 प्रतिशत अधिक है। 50,000 से अधिक रोजगार सृजित हुए, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

ODOP ने राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया है। पीढ़ियों से चली आ रही कला, जैसे जोधपुर की साफा बांधन कला या चित्तौड़गढ़ की तलवार नक्काशी, अब विलुप्त होने के कगार से लौट रही है। युवा पीढ़ी को जोड़ने हेतु स्कूलों में वर्कशॉप आयोजित हो रहे हैं। यह नीति सतत विकास का प्रतीक है, जहां पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों को प्राथमिकता दी जा रही है। जैविक रंगों का उपयोग और प्लास्टिक-मुक्त पैकेजिंग से ग्रीन ब्रांडिंग हो रही है। वैश्विक स्तर पर सस्टेनेबल हैंडीक्राफ्ट की मांग में राजस्थान अव्वल है।

भविष्य की योजनाएं उत्साहजनक हैं। सरकार 2026 तक 10,000 करोड़ का निर्यात लक्ष्य रख रही है। ODOP पार्क विकसित हो रहे हैं, जहां मॉडर्न इंफ्रास्ट्रक्चर होगा। एआई और ब्लॉकचेन से ट्रेसिबिलिटी सुनिश्चित की जाएगी, ताकि उत्पाद की प्रामाणिकता बनी रहे। स्टार्टअप इंडिया से जोड़कर युवा उद्यमियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय साझेदारियां, जैसे जापान और यूरोप के ब्रांड्स के साथ, नए द्वार खोल रही हैं। राजस्थान का ODOP मॉडल अन्य राज्यों के लिए प्रेरणा है।

एक जिला एक उत्पाद नीति ने राजस्थान को साबित कर दिया कि स्थानीयता वैश्विकता का आधार बन सकती है। यह न केवल आर्थिक उन्नति ला रही है, बल्कि सांस्कृतिक गौरव को भी पुनर्जीवित कर रही है। कारीगरों की मुस्कान, ग्रामीणों की समृद्धि और राज्य की प्रगति इसकी साक्षी हैं। लोकल टू ग्लोबल का सपना साकार हो रहा है, और राजस्थान इसकी अगुवाई कर रहा है। आने वाले वर्षों में यह नीति भारत की आर्थिक शक्ति को नई दिशा देगी।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

दिन में बिजली और सौर ऊर्जा क्रांति से सशक्त होता किसान

पुष्पेंद्र सिंह राणावत

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने प्रदेश के सभी जिलों में वर्ष 2027 तक किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध कराने का महत्वाकांक्षी संकल्प लेकर इसे तेजी से क्रियान्वित करवा रहे हैं। दौसा एवं करौली जिले के कृषि उपभोक्ताओं को खेती के लिए दिन के दो ब्लॉक में बिजली सुलभ कराने के साथ ही अब कुल 24 जिलों के कृषि उपभोक्ताओं को दिन में बिजली सुलभ करवाई जा रही है।

अब जयपुर डिस्कॉम के 9 जिलों-धौलपुर, बूंदी, कोटा, झालावाड़, जयपुर, डीग, दौसा, करौली एवं भरतपुर के किसानों को सिंचाई के लिए दिन के दो ब्लॉक में बिजली उपलब्ध हो रही है। इसी तरह अजमेर डिस्कॉम के 12 जिलों-अजमेर, ब्यावर, भीलवाड़ा, डीडवाना-कुचामन, उदयपुर, सलूंबर, राजसमंद, बांसवाड़ा, झुन्झुनूं, सीकर, चित्तौड़गढ़ एवं डूंगरपुर तथा जोधपुर डिस्कॉम के 3 जिलों-जालौर, सिरोही एवं पाली में भी कृषकों को दिन के दो ब्लॉक में आपूर्ति की जा रही है।

जयपुर डिस्कॉम ने विद्युत तंत्र को मजबूत करने के लिए दौसा जिले में 33 केवी के 18 तथा करौली जिले में 33 केवी के 6 नए ग्रिड सब स्टेशन स्थापित किए हैं। इसके साथ ही दौसा में 33 केवी के 47 सब स्टेशनों पर ट्रांसफार्मरों में 128.95 एमवीए की क्षमता वृद्धि की गई है। करौली में 33 केवी के 15 सब स्टेशनों पर 49.45 एमवीए की क्षमता बढ़ाई गई है। दोनों जिलों में पीएम कुसुम योजना के कम्पोनेंट-ए एवं कम्पोनेंट-सी में 32 मेगावाट क्षमता के 17 सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं। दौसा जिले के 52,460 तथा करौली जिले के 35,341 कृषि उपभोक्ता अब दिन में बिजली आपूर्ति का उपभोग कर सकते हैं।

कृषकों को इन जिलों में कड़ाके की सर्दी एवं बारिश में रात्रि के समय सिंचाई करने की मजबूरी नहीं रहेगी। इन 24 जिलों में दिन में बिजली मिलने से किसान सुरक्षित वातावरण में, बेहतर निगरानी के साथ अपनी फसल की सिंचाई कर सकते हैं। दिन में बिजली उपलब्ध कराए जाने वाले जिलों में हो रहे निरन्तर विस्तार से स्पष्ट है कि राज्य सरकार चरणबद्ध तरीके से इसे पूरे राज्य में लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्ष 2027 तक सभी जिलों में दिन में बिजली उपलब्ध कराने का लक्ष्य है।

इस परिवर्तन के पीछे सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मजबूत किए गए विद्युत ढांचे की है। नए ग्रिड सब स्टेशनों की स्थापना, ट्रांसफार्मरों की क्षमता में वृद्धि और वितरण नेटवर्क के विस्तार ने इस योजना को व्यवहारिक रूप दिया है। राज्य सरकार ने नीति बनाकर इसे क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक आधारभूत संरचना भी तैयार की है।

इस पूरी पहल का सबसे सशक्त आधार केवल पारंपरिक बिजली आपूर्ति नहीं, बल्कि सौर ऊर्जा के रूप में उभरती नई शक्ति है। पीएम-कुसुम योजना ने इस बदलाव को गति दी है और राजस्थान को हरित ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बना दिया है।राज्य में अब तक लगभग 1961 मेगावॉट क्षमता के 940 सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित हो चुके हैं। इनमें से अधिकांश पिछले दो वर्षों में ही पूरे हुए हैं। राजस्थान ने अब सूर्य की ऊर्जा को अपनी सबसे बड़ी ताकत बना लिया है। कुसुम योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने किसान की भूमिका को पूरी तरह बदल दिया है। किसान केवल बिजली का उपभोक्ता नहीं रहा, बल्कि वह ऊर्जा उत्पादक भी बन गया है। खेतों में लगे सोलर पंपों के माध्यम से किसान दिन में सिंचाई कर रहा है, डीजल पर उसकी निर्भरता समाप्त हो रही है और उत्पादन लागत कम हो रही है। अतिरिक्त बिजली को ग्रिड में बेचकर किसान आय का एक नया स्त्रोत भी प्राप्त कर रहा है। इस प्रकार, अन्नदाता अब ऊर्जादाता के रूप में भी उभर रहा है।

इस परिवर्तन का राज्य की अर्थव्यवस्था और ऊर्जा संरचना पर भी व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। सौर ऊर्जा संयंत्रों से उत्पन्न बिजली सीधे स्थानीय ग्रिड से जुड़ने के कारण ट्रांसमिशन लॉस में कमी आई है और बिजली वितरण अधिक प्रभावी हुआ है। लगभग 90 हजार करोड़ रुपये के अनुमानित निवेश के साथ राजस्थान का ऊर्जा क्षेत्र नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है। महंगे थर्मल पावर पर निर्भरता घट रही है और स्वच्छ ऊर्जा का अनुपात लगातार बढ़ रहा है। पर्यावरणीय दृष्टि से भी यह पहल अत्यंत महत्वपूर्ण है। सौर ऊर्जा के बढ़ते उपयोग से कार्बन उत्सर्जन में कमी आ रही है, जल संसाधनों पर दबाव कम हो रहा है और वायु प्रदूषण घट रहा है। यह योजना केवल ऊर्जा आत्मनिर्भरता नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का भी सशक्त माध्यम है। ग्रामीण विकास के संदर्भ में भी इस पहल के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। सोलर संयंत्रों की स्थापना, संचालन और रखरखाव ने नए रोजगार अवसर पैदा किए हैं। युवाओं को तकनीकी क्षेत्रों में काम करने के अवसर मिल रहे हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई गतिशीलता आई है। अब खेती फसल उत्पादन और ऊर्जा उत्पादन के साथ बहुआयामी गतिविधि बन चुकी है।

राज्य सरकार ने इस योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रशासनिक स्तर पर भी कई नवाचार किए हैं। सौर संयंत्रों की स्वीकृति, ऑनलाइन एग्रीमेंट, मीटर टेस्टिंग और ग्रिड कनेक्टिविटी जैसी प्रक्रियाओं को सरल और तेज बनाया गया है। वन-स्टॉप समाधान प्रणाली ने किसानों और निवेशकों के बीच विश्वास और पारदर्शिता को बढ़ाया है। इससे परियोजनाएं तेजी से धरातल पर उतर रही हैं। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के सभी क्षेत्रों में समान गुणवत्ता की बिजली आपूर्ति, तकनीकी रखरखाव, किसानों को नई तकनीकों का प्रशिक्षण और सौर परियोजनाओं के विस्तार में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए आवश्यक प्रयास किए जा रहे हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो राजस्थान में दिन में बिजली आपूर्ति और पीएम-कुसुम योजना के समन्वय का मॉडल देश के अन्य राज्यों के लिए भी अनुकरणीय बन सकता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, प्रशासनिक दक्षता और तकनीकी नवाचार के बेहतर समन्वय से राजस्थान अब प्रगति के नये सोपान अर्जित कर रहा है। अब राजस्थान का किसान अंधेरे में संघर्ष करने वाला नहीं, बल्कि उजाले में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किसान बन रहा है। खेतों में फसल के साथ ही ऊर्जा भी उग रही है और यही एक समृद्ध, सशक्त और आत्मनिर्भर राजस्थान की पहचान है।

–पुष्पेंद्र सिंह राणावत,
विधायक एवं पूर्व ऊर्जा मंत्री

सरकारी भर्ती में कट ऑफ से आगे की कहानी : जहां प्रतिभा हारती है और सिस्टम चूकता है

सुनील दत्त गोयल

भारत में सरकारी नौकरी केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा, प्रतिष्ठा और स्थायित्व का सबसे मजबूत स्तंभ मानी जाती है। यही कारण है कि हर वर्ष लाखों युवा अपनी उम्र के सबसे उत्पादक वर्ष इस तैयारी में लगा देते हैं – कोचिंग, किराया, किताबें, परीक्षा शुल्क और सबसे बढ़कर मानसिक दबाव – इन सबका बोझ उठाते हुए। यह केवल एक परीक्षा नहीं, बल्कि जीवन का एक लंबा संघर्ष बन जाता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह संघर्ष अंततः न्यायपूर्ण अवसर में बदलता है, या फिर एक ऐसी प्रणाली में फँस जाता है जहाँ प्रतिभा हारती है और सिस्टम चूक जाता है?

आज की सबसे कड़वी सच्चाई यह है कि सरकारी भर्ती प्रणाली धीरे-धीरे एंट्री सिस्टम बनती जा रही है, न कि करियर सिस्टम। न्यूनतम योग्यता 10वीं या 12वीं होने के बावजूद, चपरासी, क्लर्क और लोअर ग्रेड की नौकरियों के लिए डॉक्टर, इंजीनियर, सीए, सीएस और एमबीए जैसे उच्च शिक्षित उम्मीदवार आवेदन कर रहे हैं। यह स्वस्थ प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि एक विकृत रोजगार संरचना का संकेत है। इन उम्मीदवारों का उद्देश्य उस पद पर स्थायी रूप से कार्य करना नहीं होता, बल्कि किसी भी तरह सरकारी तंत्र में प्रवेश लेना होता है, ताकि आगे चलकर वे बेहतर पदों के लिए प्रयास कर सकें।

यहीं से शुरू होती है वह समस्या, जो पूरे सिस्टम को अंदर से खोखला कर रही है – जॉइन-ट्रेन-छोड़ संस्कृति। एक अभ्यर्थी पहले एक पद ग्रहण करता है, फिर कुछ महीनों या वर्षों में दूसरे, अधिक आकर्षक पद पर चयनित होकर उसे छोड़ देता है। यह अब अपवाद नहीं, बल्कि एक स्थापित प्रवृत्ति बन चुकी है। इसका सीधा परिणाम यह होता है कि एक ही व्यक्ति द्वारा कई पदों पर चयन और त्याग होता है, जिससे कई पिछली सीटें अनावश्यक रूप से खाली हो जाती हैं।

ऐसा देखा जाता है कि बहुत से लोगों का सपना सिर्फ आईएएस बनने का होता है , लेकिन उनका सिलेक्शन आईपीएस, आईआरएस या अन्य अधीनस्थ सेवाओं में होता है, तो वो उसको भी ज्वाइन कर लेते हैं और बाद में वह बार-बार आईएएस की परीक्षा देते रहते हैं और जब अंत में उनका आईएएस में सिलेक्शन हो जाता है तो अपनी तमन्ना पूरी होने पर वो पिछला पद छोड़ देते हैं।उनके इस कृत्य की वजह से पिछली दो तीन सीटें खराब हो जाती हैं, जिसकी वजह से ऐसे लोग रोजगार से वंचित रह जाते हैं, कायदे में जिनको वह पुरानी सीट मिलनी चाहिए थी। यदि हम आधिकारिक आंकड़ों को देखें, तो स्थिति और भी चिंताजनक हो जाती है। संसद में प्रस्तुत हालिया आंकड़ों के अनुसार, केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में लगभग 9.6 लाख से अधिक पद रिक्त रहे हैं। कुछ स्वतंत्र विश्लेषणों में यह संख्या 10 लाख के आसपास भी बताई गई है। कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी), रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी) और अन्य एजेंसियों के अनुभव बताते हैं कि 10 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक चयनित उम्मीदवार अंतिम रूप से सेवा में नहीं टिकते – या तो वे जॉइन नहीं करते या जॉइन करने के बाद जल्द ही सेवा छोड़ देते हैं। राज्यों की स्थिति इससे भी अधिक असंतुलित है। उत्तर प्रदेश में लगभग 5 लाख पद, राजस्थान में 1.5 से 2 लाख पद, और बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड जैसे राज्यों में भी लाखों पद लंबे समय तक रिक्त रहते हैं। यह केवल भर्ती में देरी नहीं, बल्कि पोस्ट-सेलेक्शन अस्थिरता का स्पष्ट संकेत है।

जब कोई उम्मीदवार चयनित होता है, तो सरकार उस पर प्रशिक्षण, वेतन, आवास और अन्य सुविधाओं के रूप में लाखों रुपये खर्च करती है। कई मामलों में यह खर्च प्रति उम्मीदवार 2 से 10 लाख रुपये या उससे अधिक होता है। उच्च सेवाओं में यह लागत और भी अधिक होती है। यह पैसा करदाताओं का होता है। लेकिन जब वही उम्मीदवार कुछ समय बाद सेवा छोड़ देता है, तो यह पूरा निवेश संक लागत बन जाता है – जिसका कोई प्रतिफल नहीं मिलता।

इससे भी बड़ी समस्या तब पैदा होती है जब वह सीट खाली रह जाती है और उसी भर्ती वर्ष की प्रतीक्षा सूची को सक्रिय नहीं किया जाता। यह स्थिति डेड सीट कहलाती है – जहाँ पद मौजूद है, बजट मौजूद है, जरूरत मौजूद है, लेकिन फिर भी कार्य नहीं हो रहा। जिला स्तर पर इसका असर बेहद गंभीर होता है – स्कूलों में शिक्षक नहीं, अस्पतालों में डॉक्टर नहीं, प्रशासन में अधिकारी नहीं – और इसका सीधा नुकसान आम नागरिक को उठाना पड़ता है। यहीं लास्ट कट-ऑफ की अवधारणा पूरी तरह सवालों के घेरे में आ जाती है। कट-ऑफ एक तकनीकी सीमा है, लेकिन जब चयनित उम्मीदवार सेवा में नहीं टिकते और प्रतीक्षा सूची के उम्मीदवारों को मौका नहीं मिलता, तो यह कट-ऑफ न्याय नहीं, बल्कि अन्याय का उपकरण बन जाती है। जो उम्मीदवार केवल कुछ अंकों से पीछे रह गए थे, वे केवल इसलिए बाहर रह जाते हैं क्योंकि सिस्टम उन्हें अवसर देने में विफल रहता है। यह न केवल प्रतिभा का नुकसान है, बल्कि सिस्टम की नैतिक विफलता भी है। इस पूरी समस्या को यदि चार बिंदुओं में समझें, तो स्थिति और स्पष्ट हो जाती है –

(1) एक ही व्यक्ति द्वारा कई पदों पर चयन और त्याग

(2) सरकारी संसाधनों – वेतन, प्रशिक्षण, समय – का दुरुपयोग

(3) प्रतीक्षा सूची के योग्य उम्मीदवारों को अवसर न मिलना

(4) चयन प्रक्रिया में देरी और रिक्त पदों की बढ़ती संख्या

अब सवाल यह है कि समाधान क्या है? और क्या केवल सुधार से काम चलेगा या एक कठोर नीति की आवश्यकता है? सबसे पहला और सबसे प्रभावी समाधान है – रोलिंग वेटलिस्ट प्रणाली का अनिवार्य क्रियान्वयन। इसका सिद्धांत बेहद सरल है – जिस भर्ती वर्ष की सीट खाली होती है, उसे उसी वर्ष की प्रतीक्षा सूची से 12-18 महीने के भीतर भर दिया जाए। यह कोई जटिल सुधार नहीं है, बल्कि एक बुनियादी प्रशासनिक जिम्मेदारी है, जिसे अब तक नजरअंदाज किया गया है। यदि यह प्रणाली लागू होती है, तो डेड सीट की समस्या लगभग समाप्त हो सकती है और अंतिम कट-ऑफ से थोड़ा पीछे रह गए उम्मीदवारों को वास्तविक न्याय मिल सकता है। लेकिन केवल रोलिंग वेटलिस्ट पर्याप्त नहीं है। अब समय आ गया है कि सरकार एक कठोर और स्पष्ट नीति ढांचा तैयार करे। उदाहरण के लिए – जब कोई अभ्यर्थी पहली बार किसी सरकारी पद के लिए आवेदन करे, तो वह यह लिखित घोषणा दे कि वह उसी पद के प्रति प्रतिबद्ध रहेगा।

इसके साथ ही न्यूनतम सेवा बांड (3-5 वर्ष) लागू किया जाना चाहिए। यदि कोई उम्मीदवार इस अवधि से पहले सेवा छोड़ता है, तो उससे प्रशिक्षण और अन्य खर्चों की वसूली की जाए। इसी तरह, क्रॉस-सर्विस परीक्षाओं के लिए सीमित प्रयास और कूल-ऑफ अवधि भी तय की जानी चाहिए, ताकि उम्मीदवार बिना जिम्मेदारी के बार-बार सिस्टम का उपयोग न कर सकें। नीति-निर्माण के स्तर पर पारदर्शिता भी अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में विभिन्न विभागों में डेटा बिखरा हुआ है – कितने पद भरे गए, कितने उम्मीदवारों ने जॉइन नहीं किया, कितनों ने सेवा छोड़ी, कितनी सीटें खाली रह गईं – इन सभी का समेकित और नियमित प्रकाशन नहीं होता। यदि यह डेटा सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हो, तो न केवल समस्या का सही आकलन हो सकेगा, बल्कि नीति-निर्माण भी अधिक डेटा-आधारित और प्रभावी होगा। इस पूरे मुद्दे का एक महत्वपूर्ण नैतिक आयाम भी है, जिसे अक्सर नजर अंदाज कर दिया जाता है। क्या यह उचित है कि कोई व्यक्ति अपने करियर के लिए बार-बार अवसर ले और फिर छोड़ दे, जबकि कोई दूसरा योग्य उम्मीदवार उसी अवसर के लिए वर्षों से इंतजार कर रहा हो? यह न केवल संसाधनों की बर्बादी है, बल्कि उन उम्मीदवारों के साथ भी अन्याय है, जिनके लिए वह नौकरी अंतिम लक्ष्य है। यदि कोई प्रशासनिक सेवा में जाना चाहता है, तो उसे सीधे उसी दिशा में प्रयास करना चाहिए, न कि अन्य पदों को बैकअप प्लान के रूप में उपयोग करना चाहिए। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि यह समस्या केवल तकनीकी नहीं, बल्कि नीति और नैतिकता दोनों की विफलता है। यदि इसे समय रहते नहीं सुधारा गया, तो यह न केवल प्रशासनिक क्षमता को कमजोर करेगा, बल्कि युवाओं के बीच सिस्टम के प्रति विश्वास को भी खत्म कर देगा। आज सरकार, भर्ती एजेंसियों और नीति-निर्माताओं के सामने एक सीधा प्रश्न खड़ा है – क्या वे एक ऐसी व्यवस्था बनाए रखना चाहते हैं, जहाँ सीटें खाली रहें, संसाधन बर्बाद हों और योग्य उम्मीदवार बाहर रह जाएँ? या वे एक ऐसी प्रणाली बनाना चाहते हैं, जहाँ हर सीट भरे, हर अवसर का सही उपयोग हो और हर योग्य व्यक्ति को उसका अधिकार मिले?

रोलिंग वेटलिस्ट + न्यूनतम सेवा प्रतिबद्धता + कूल-ऑफ नीति + पारदर्शी डेटा सिस्टम

अब आवश्यकता केवल इच्छाशक्ति की है। क्योंकि जब तक नीति नहीं बदलेगी, तब तक कट-ऑफ के उस पार खड़े लाखों युवाओं के लिए न्याय केवल एक सपना ही बना रहेगा।

–सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री।

राशिफल शुक्रवार 3 अप्रैल, 2026

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, चित्रा नक्षत्र सायं 7:25 तक, व्याघात योग दिन 2:08 तक, कौलव करण प्रातः 8:43 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 6:24 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मीन, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज राजयोग प्रातः 8:43 से सायं 7:25 तक है। आज एकलिंगजी पाटोत्सव उदयपुर में है। आज गुड फ्राइडे है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:52 तक, लाभ-अमृत 7:52 से 10:58 तक, शुभ 12:30 से 2:05 तक, चर 5:08 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:20, सूर्यास्त 6:41

मेष
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास बना रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आज अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आज व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कर्क
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

अटल निश्चय से उपजे विराट संकल्प की बदौलत प्रगति के विकास पथ पर सवार राजस्थान

रामसिंह

विकसित भारत 2047 के गन्तव्य तक पहुंचाने के लिए पीएमजीएसवाई महत्वपूर्ण बिन्दु भी है, साधन भी है। इस योजना के क्रियान्वयन से पूर्व राज्य के हजारों गांवों में हर मानसून में जन जीवन ठहर सा जाता था। पुराने और जर्जर पुल बाढ़ के पानी में डूब जाते थे, जिससे मरीज, विद्यार्थी और किसान अस्पतालों, स्कूलों और बाज़ारों जैसी सुविधाओं से कट जाते थे। इसी जरूरत को समझते हुए पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 25 दिसंबर, 2000 को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के रूप में भारत के असंबद्ध गांवों को सड़क से जोड़ने की मजबूत नींव रखी। सामान्य क्षेत्र की 500 से अधिक एवं मरूस्थलीय तथा आदिवासी क्षेत्र की 250 से अधिक आबादी की बसावटों को सर्वकालिक पक्की सड़कों से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया तथा आगे चलकर इसमें प्रमुख ग्रामीण सड़कों का चौड़ाईकरण व सुदृढ़ीकरण करने का लक्ष्य भी सम्मिलित किया गया। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण बस्तियों को ऑल वेदर सड़कों से जोड़ना है।

इसी लक्ष्य की प्राप्ति में राजस्थान ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। योजना के तहत सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा गत 25 वर्षों में प्रदेश में 75 हजार किमी. सड़कों का निर्माण किया गया एवं 15983 बसावटों/गांवों को ऑलवेदर पक्की सड़कों से जोड़ा गया। प्रथम चरण में प्रदेश में लगभग 12086 करोड़ रूपये की लागत से 49 हजार 730 किमी. लम्बाई की सड़कों का निर्माण कर 15 हजार 983 बसावटों को ऑलवेदर पक्की सड़कों से जोड़ा गया। इसके साथ ही 14043 किमी. सड़कों का चौड़ाईकरण व सुदृढ़ीकरण का कार्य किया गया तथा 26 पुलों का निर्माण करवाया गया।

जैसे-जैसे कार्यक्रम आगे बढ़ता गया, चयनित थ्रू रूट्स और ग्रामीण सड़क नेटवर्क को अधिक मजबूत करने की जरूरत महसूस की गई। योजना के दूसरे चरण में प्रदेश में करोड़ रुपये की लागत से 3 हजार 468 किमी. लम्बाई की 401 सड़कों का चौडाईकरण सृदृढ़ीकरण कार्य करवाया गया तथा 6 पुलों का निर्माण करवाया गया। योजना के तीसरे चरण में भी मौजूदा मार्गों व ग्रामीण संपर्क मार्गों को उन्नत किया गया ताकि बसावटों से कृषि बाजारों, कॉलेजों, अस्पतालों, अन्य किसान संबंधित उद्यमों तक सुगम एवं त्वरित कनेक्टिविटी स्थापित की जा सकें। इस चरण में अब तक प्रदेश में 4 हजार 113 करोड़ रुपये की लागत से 8 हजार 584 किमी. की 912 सड़कों का चौड़ाईकरण एवं सुदृढ़ीकरण करवाया गया तथा 36 करवाया जा चुका है तथा शेष कार्य प्रगतिरत हैं।

पीएम जनमन- इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्ष 2023 में देश के 75 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों के समग्र विकास के लिए पीएम-जनमन योजना का शुभारम्भ किया गया। प्रदेश में इस योजना के तहत बारां जिले की शाहबाद व किशनगंज ब्लॉक की सहरिया जनजाति बहुल 100 से अधिक आबादी की 31 बसावटों को ऑलवेदर पक्की सड़कों से जोड़ने की मुहिम शुरू की गई। इसके तहत् लगभग 33.48 करोड़ की लागत से 35 किमी. सड़क निर्माण कर 13 बसावटों को सड़के से जोड़नें का कार्य पूरा किया जा चुका है तथा शेष कार्य प्रगतिरत है। चौथे चरण में प्रवेश- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तीन चरण प्रदेश में पूरे हो चुके हैं ओर चौथे चरण का आगाज होने जा रहा है। चतुर्थ चरण में प्रदेश की 1216 बसावटों को ऑलवेदर पक्की सड़कों से जोड़ने व एक पुल के निर्माण के लिए बजट आ चुका है और निर्माण काम तेजी से प्रगति पर है। इस चरण की सड़कों व पुल की अनुमानित लम्बाई 3219 किमी. व लागत लगभग 2 हजार 89.37 करोड़ आंकी गई है। गौरतलब है कि चौथे चरण में 1638 बसावटों को सड़कों से जोड़े जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

योजना के चौथे चरण में प्रदेश की 1638 बसावटों को ऑलवेदर सड़कों से जोड़े जाने के लिए चिन्हित किया गया है। इसके प्रथम फेज में 1216 बसावटों के लिए सड़क व एक पुल का निर्माण करवाया जायेगा। प्रथम फेज में लगभग 2 हजार 89 करोड़ रूपये की लागत से 3219 किमी. नयी सड़कों का निर्माण करवाया जायेगा।

चौथे चरण के प्रथम बैच में अजमेर जिले में 7 किमी 60 मीटर लम्बी 5 सड़कों के लिए 4.80 करोड़ रू., अलवर में 2 किमी की 2 सड़क के लिए 2.88 करोड़, बालोतरा में 487 किमी लम्बाई की 161 सड़कों के लिए 280.13 करोड़ रू.,बांसवाड़ा में 90.1 किमी लम्बी 50 सड़कों के लिए 6067 लाख रू.,बारां में 36 किमी 12 सड़कों के लिए 2515.25 लाख, बाड़मेर में 748.1 किमी लम्बी 261 सड़कों के लिए 52377.28 लाख रू. ब्यावर में 4.8 किमी लम्बी 3 सड़कों के लिए 467 लाख रू. बजट उपलब्ध है।

–रामसिंह, पीआरओ,
सानिवि

सीएम के सक्रिय प्रयास व प्रभावी समन्वयन से केन्द्र से प्राप्त राशि में उल्लेखनीय वृद्धि

मार्च माह में ही केन्द्र ने राज्य को लगभग 19 हजार करोड़ रुपये की बड़ी राशि की जारी

जयपुर, (निसं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के सक्रिय प्रयासों के फलस्वरूप स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, शिक्षा, पेयजल, कृषि व आधारभूत संरचना आदि क्षेत्रों के विकास के लिए संचालित केन्द्रीय योजनाओं में राज्य को मिलने वाली राशि में उल्लेखनीय वृद्धि की गई है।

मार्च माह में ही राज्य को केंद्र सरकार के माध्यम से लगभग 19 हजार करोड़ रुपये की बड़ी राशि प्राप्त हुई। प्राप्त राशि से केन्द्र एवं राज्य की डबल इंजन सरकार प्रदेश का सर्वांगीण विकास कर रही है। केन्द्र सरकार ने पूंजीगत व्यय बढ़ाने के लिए राज्यों को ब्याज रहित ऋण प्रदान करने के लिए स्कीम फोर स्पेशल असिस्टेंस टू स्टेट्स फोर कैपिटल इन्वेस्टमेंट (सास्की) योजना की शुरूआत की थी।

इस योजना के अंतर्गत राज्य को वित्तीय वर्ष 2025-26 में 10 हजार 548 करोड़ की राशि प्राप्त हुई है, जबकि पूर्ववर्ती सरकार के कार्यकाल के तीन वर्ष (2020-21 से 2022-23 तक) में यह राशि मात्र 7 हजार 290 करोड़ रुपये ही थी।

एसएनए-स्पर्श पर संचालित केन्द्रीय प्रवर्तित योजनाओं के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान राशि 13 हजार 658 करोड़ रुपये जारी की गई है। इसी प्रकार वित्त आयोग की सिफारिश एवं अन्य योजनाओं के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान 15 हजार 666 करोड़ रुपये केन्द्र सरकार से प्राप्त हुए हैं। मुख्यमंत्री के विशेष प्रयासों से 15वें वित्त आयोग की सिफारिशों के अंतर्गत चिकित्सा क्षेत्र में इस वित्तीय वर्ष गत पांच वर्षों में सर्वाधिक 2 हजार 693 करोड़ से अधिक की राशि प्राप्त हुई है।

जबकि पूर्ववर्ती सरकार के अन्तिम तीन वर्षों में इस में 833 करोड रूपये ही प्राप्त हुये थे। उल्लेखनीय है कि एसएनए-स्पर्श पर संचालित योजनाओं के संबंध में राजस्थान देश में अग्रणी राज्य रहा है। जिसके फलस्वरूप केन्द्र ने प्रदेश को सास्की योजनाओं के तहत 350 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि भी जारी की है। समग्र शिक्षा में वित्तीय वर्ष 2025-26 में 2 हजार 972 करोड़ रुपये और 2024-25 में 3 हजार 93 करोड़ रुपये से अधिक की राशि प्राप्त हुई है। जबकि पूर्ववर्ती सरकार के समय वर्ष 2021-22 में 2 हजार 440 करोड़ और वर्ष 2022-23 में 2 हजार 138 करोड़ रुपये ही प्राप्त हुए थे।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने अधिकरियों के साथ बैठक कर स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, शिक्षा, पेयजल सम्बंधी दिशा निर्देश दिए।

- पूर्ववर्ती सरकार के कार्यकाल के किसी भी वर्ष की तुलना में अधिक राशि हुई प्राप्त

पूर्व उपमहापौर ने मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

जयपुर(निसं)। प्रदेश संयोजक स्थानीय निकाय प्रकोष्ठ एवं पूर्व उपमहापौर पुनीत कर्णावट ने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पत्र लिखकर अर्बन डेवलपमेंट टैक्स (यूडी टैक्स) में पेनल्टी एवं ब्याज छूट की अवधि बढ़ाने की मांग की है।

पुनीत कर्णावट ने अपने पत्र में उल्लेख किया कि अर्बन डेवलपमेंट टैक्स शहरी निकायों की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जिससे नगरीय विकास एवं आधारभूत सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण में सहायता मिलती है। राज्य सरकार द्वारा इस कर के बकाया भुगतान पर पेनल्टी एवं ब्याज में दी ग छूट, जो 31 मार्च 2026 तक प्रभावी थी, एक सराहनीय कदम रहा है। इससे करदाताओं को राहत मिलने के साथ-साथ राजस्व संग्रह में भी सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई।

उन्होंने बताया कि मार्च माह में वेतनभोगी, व्यापारी एवं उद्यमियों पर विभिन्न करों एवं वित्तीय दायित्वों का अधिक दबाव रहता है, जिसके कारण अनेक करदाता समय पर अर्बन डेवलपमेंट टैक्स का भुगतान नहीं कर सके। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2007 से 2026 तक की अवधि के लिए एकमुश्त देय राशि अधिक होने से भी भुगतान में कठिनाई उत्पन्न हुई है।

सार-समाचार

डॉ. रश्मि शर्मा ने समग्र शिक्षा राजस्थान के रूप में कार्यभार संभाला

जयपुर(निसं)। भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ अधिकारी आरएएस डॉ. रश्मि शर्मा ने 2 अप्रैल को राजस्थान शिक्षा विभाग में राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त, समग्र शिक्षा राजस्थान के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात उन्होंने उसी दिन विभागीय अधिकारियों की बैठक लेकर कार्यों की समीक्षा की। बैठक में प्रेजेंटेशन के माध्यम से राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् की प्रशासनिक व्यवस्था, विभिन्न योजनाओं, गतिविधियों एवं अन्य प्रमुख बिंदुओं की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई। राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त ने विभिन्न कॉम्पोनेंट्स द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशानिर्देश दिए तथा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका फोकस राज्य सरकार की प्राथमिकताओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था को और अधिक सशक्त, समावेशी एवं परिणामोन्मुख बनाने पर रहेगा। डॉ. शर्मा के पास प्रशासनिक क्षेत्र में व्यापक अनुभव है और उन्होंने पूर्व में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए शिक्षा, महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक विकास से जुड़े विषयों पर उल्लेखनीय कार्य किया है। बैठक में वित्त सलाहकार अनुपमा शर्मा, अतिरिक्त राज्य परियोजना निदेशक प्रथम श्रीमती सीमा शर्मा, द्वितीय श्री अशोक कुमार मीणा, सहित विभिन्न उपायुक्त, उपनिदेशक एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

पंचायतों और निकायों के चुनाव तय समय में नहीं कराने पर अफसरों को अवमानना नोटिस

जयपुर, (निसं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने अदालती आदेश के बावजूद भी प्रदेश की ग्राम पंचायतों व निकायों के चुनाव 15 अप्रैल तक नहीं कराने पर राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह और आयोग सचिव राजेश वर्मा को अवमानना नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब तलब किया है। एक्टिंग सीजे संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस शुभा मेहता ने यह आदेश पूर्व विधायक संयम लोढा की अवमानना याचिका परदिए। इसके साथ ही अदालत ने पंचायत चुनाव के मामले में गिरिराज सिंह की ओर से दायर अवमानना याचिका को इस याचिका के साथ सूचीबद्ध कर दिया है। सुनवाई के दौरान महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि राज्य सरकार की ओर से चुनाव की तय समय सीमा को आगे बढाने के लिए प्रार्थना पत्र पेश किया जा रहा है। इस पर अदालत ने कहा कि यह सीधे तौर पर अदालती आदेश की अवमानना है। इसके साथ ही अदालत ने राज्य चुनाव आयोग को अवमानना नोटिस जारी किए हैं। अवमानना याचिका में कहा गया कि हाईकोर्ट ने 14 नवंबर 2025 को निर्देश दिया था कि प्रदेश की ग्राम पंचायत व निकायों के चुनाव एक साथ 15 अप्रैल 2026 तक कराए। इसके साथ ही राज्य सरकार को 31 दिसंबर 2025 तक परिसीमन प्रक्रिया पूरी करने के लिए कहा था। इस आदेश के खिलाफ दायर कई याचिकाओं पर सुनवाई के समय सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के आदेश में दखल से मना करते हुए 15 अप्रैल तक चुनाव कराने के लिए कहा था। याचिका में कहा गया कि राज्य निर्वाचन आयोग ने निकाय चुनाव के लिए गत फरवरी माह में जारी किए कार्यक्रम में 22 अप्रैल तक अंतिम मतदाता सूची जारी करना तय किया है। इससे साफ है कि किसी भी सूरत में 15 अप्रैल तक चुनाव नहीं हो सकते हैं। वहीं गिरिराज सिंह की ओर से अधिवक्ता प्रेमचंद देवंदा ने अदालत को बताया कि अदालत ने निकाय और पंचायत चुनाव एक साथ कराने के आदेश दिए थे। पंचायत चुनाव की अंतिम मतदाता सूची जारी कर दी गई है, लेकिन दोनों चुनाव एक साथ नहीं कराए जा रहे। ऐसे में अवमानना कर्ता अफसरों को अदालती आदेश की अवमानना करने को लेकर दंडित किया जाए।

सरस ब्राण्ड से मिलते-जुलते नाम से घी के उत्पादन एवं बिक्री पर रोक

जयपुर, (निसं)। वाणिज्यिक न्यायालय क्रम 2 जयपुर महानगर द्वितीय ने राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन के पक्ष में बड़ा फैसला किया है। कोर्ट ने आरसीडीएफ के प्रतिष्ठित ब्राण्ड सरस के नाम से मिलते-जुलते ब्राण्ड श् श्री पार्श्व सारस श् ब्राण्ड के उत्पादन और बिक्री पर रोक लगा दी है। न्यायालय ने सरस ब्राण्ड को सुप्रसिद्व ट्रेड मार्क मानते हुऐ इसके नाम का दुरुपयोग करने पर पाली की फर्म मैसर्स रत्नदीप मिल्क प्रोडक्टस को क्षतिपूर्ति के रुप में आरसीडीएफ को 50 हजार रुपये के भुगतान का आदेश भी पारित किया है। न्यायालय ने फर्म को श्री पार्श्व सारस के उत्पादन से संबंधित सभी सामान को नष्ट करने के आदेश भी दिये हैं। राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन की ओर से अधिवक्ता यशवर्धन सिंह ने माननीय न्यायालय में वाद प्रस्तुत कर निवेदन किया कि आरसीडीएफ का सरस ब्राण्ड एक प्रतिष्ठित ब्राण्ड है और आम उपभोक्ता इसकी गुणवत्ता पर पूरा भरोसा करते हैं। प्रतिवादी फर्म ने समान और भ्रामक रुप से मिलते जुलते ट्रेड मार्क श्री पार्श्व सारस ब्राण्ड के नाम से घी का उत्पादन कर आरसीडीएफ के पंजीकृत ट्रेड मार्क का उल्लंघन किया। आरसीडीएफ द्वारा माननीय न्यायालय में सरस से मिलते-जुलते नाम से घी के उत्पादन एवं विक्रय पर रोक लगाने और प्रतिवादी को दंडित किये जाने के लिये वाद प्रस्तुत किया। न्यायालय के इस निर्णय से प्रतिष्ठित सरस ब्राण्ड के नाम से मिलते-जुलते ब्राण्डस से आम उपभोक्ताओं को निजात मिलेगी और उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्तायुक्त सरस ब्राण्ड का घी एवं उत्पाद आसानी से उपलब्ध होंगे।

युवक की हत्या कर प्लास्टिक के कट्टे में बांधकर शव खाली प्लॉट में फेंका

जयपुर (निसं)। करधनी थाना इलाके में अज्ञात बदमाशों ने एक युवक की हत्या कर उसके शव को प्लास्टिक के कट्टे में बांधकर खाली प्लॉट में ले जाकर फैंक दिया और शिनाख्त नहीं होने के कारण केमिकल डालकर आग लगा कर जला दिया। लेकिन शव पूरा नहीं जल पाया और आग बुझ गई। घटना की जानकारी मिलते ही इलाके में सनसनी फैल गई। स्थानीय लोगों ने अद्धजला युवक का शव पड़ा देख मामले की जानकारी पुलिस को दी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने एफएसएल टीम और डॉग स्क्वायड टीम की मदद से घटना स्थल से महत्वपूर्ण साक्ष्य जुटाकर शव को कांवटिया अस्पताल के मुर्दाघर में भिजवाया। जहां से पुलिस ने मृतक की शिनाख्त कर मामले की जानकारी उसके परिजनों को दी। एडि.डीसीपी (वेस्ट) राजेश कुमार गुप्ता ने बताया कि गुरुवार सुबह करीब साढ़े 6 बजे पुलिस कंट्रोल रुम को स्थानीय लोगों ने खाली प्लॉट में अद्धर्जला युवक का शव पड़ा होने की सूचना दी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने निवारू पुलिया से कुछ ही दूरी पर एक खाली प्लॉट से युवक का अद्धर्जला शव बरामद किया। पुलिस ने घटना स्थल से एफएसएल टीम व डॉग स्क्वायड टीम की सहायता से महत्वपूर्ण साक्ष्य जुटाए। प्रारम्भिक जांच में पुलिस का मानना है कि युवक की किसी दूसरी जगह हत्या की गई, जिसके बाद प्लास्टिक के एक बड़े कट्टे में शव को बांधकर देर रात यहां फेंककर ठिकाने लगाया गया। मृतक की पहचान छिपाने के लिए उसके मुंह और शरीर पर किसी ज्वलनशील केमिकल को डालकर आग लगाई गई है।

न्यू टैक्स वसूली में सरकार की सख्ती, जनता बेहाल राहत की अवधि बढ़ाने की मांग तेज

जयपुर (निसं)। राजस्थान में नगरीय विकास कर(टैक्स) को लेकर सरकार की सख्त नीति अब आम जनता पर भारी पड़ रही है। एक तरफ सरकार राजस्व बढ़ाने के दावे कर रही है, वहीं दूसरी ओर हजारों करदाता पेनल्टी और ब्याज के बोझ तले दबते जा रहे हैं। नगर निगम जयपुर में नेता प्रतिपक्ष रहे गिरिराज खंडेलवाल ने इस पूरे मुद्दे पर सरकार को सीधे तौर पर घेरते हुए कहा कि सरकार ने 31 मार्च 2026 तक पेनल्टी और ब्याज में छूट देकर राहत का दिखावा जरूर किया, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि इस अवधि में अधिकांश लोग भुगतान ही नहीं कर पाए।

विवाह स्थलों की पार्किंग में राहत देने की मांग की

जयपुर विवाह स्थल समिति, जयपुर के पदाधिकारीओं ने उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी को मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा।

जयपुर,(निसं)। आज सिटी पैलेस में जयपुर विवाह स्थल समिति, जयपुर के पदाधिकारीओं ने उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी को ज्ञापन पत्र देकर नगर निगम द्वारा विवाह स्थलों पर पार्किंग अनिवार्य करने के नियम में राहत देने का अनुरोध किया।

समिति ने पत्र में बताया कि विवाह स्थल समिति जयपुर नगर निगम क्षेत्र में लगभग 25 वर्षों से कार्यरत है और यहाँ आयोजित विवाह समारोहों में कई विवाह स्थलों में पार्किंग की कोई अतिरिक्त सुविधा उपलब्ध नहीं है। नगर निगम के नए नियमों के अनुसार 25 प्रतिशत पार्किंग विवाह स्थलों में अनिवार्य कर दिया गया है जबकि छोटे विवाह स्थलों पर यह सुविधा प्रदान नहीं है। छोटे विवाह स्थलों में मध्यम एवं गरीब वर्ग के लोग अपने शादी समारोह आदि आयोजन कम खर्चे में कर लेते हैं अब इन गार्डनो के बंद होने से मध्यम एवं गरीब वर्ग पर आर्थिक भार पड़ेगा।

समिति ने यह भी अवगत कराया कि वर्ष 2026-27 के लिए सैकड़ों विवाह स्थलों का नवीनीकरण किया जाना है लेकिन पार्किंग नियमों के कारण विवाह स्थलों का नवीनीकरण नहीं हो पा रहा है।

अतिरिक्त सचिव चालीस हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर(निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की सीकर टीम ने गुरुवार को कार्रवाई करते हुए कृषि उपज मंडी नीमकाथाना के अतिरिक्त चार्ज सचिव एवं सीकर मंडी के अतिरिक्त सचिव रणधीर सिंह को चालीस हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। एसीबी के महानिदेशक पुलिस गोविन्द गुप्ता ने बताया कि आरोपी रणधीर सिंह परिवादी के परिजनों के नाम चार दुकानों के लाइसेंस जारी करने की एवज में रिश्वत की मांग कर रहा था। शिकायत मिलने के बाद एसीबी चौकी सीकर ने मामले का सत्यापन किया, जिसमें आरोपी द्वारा अस्सी हजार रुपए की रिश्वत मांगने की पुष्टि हुई। इसके बाद एसीबी जयपुर के उप महानिरीक्षक अनिल कयाल के सुपरविजन में सीकर इकाई के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विजय कुमार के निर्देशन में पुलिस निरीक्षक सुभाष मील एवं उनकी टीम ने ट्रैप कार्रवाई की। कार्रवाई के दौरान आरोपी को परिवादी से चालीस हजार रुपए की रिश्वत राशि लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया।

संदेश नायक ने संभाला जयपुर जिला कलेक्टर का पदभार

सुशासन, पारदर्शिता और जनकेन्द्रित प्रशासन को दी प्राथमिकता

जयपुर, (निसं)। जिला कलेक्टर संदेश नायक ने गुरुवार को जयपुर जिला कलक्टर का पदभार ग्रहण किया। निवर्तमान जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने उन्हें औपचारिक रूप से कार्यभार सौंपा। इस अवसर पर जिला कलेक्ट्रेट में एक गरिमामय वातावरण में पदभार ग्रहण की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। पदभार संभालने के पश्चात संदेश नायक ने कहा कि जयपुर जैसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील जिले की जिम्मेदारी संभालना उनके लिए गर्व के साथ-साथ एक बड़ी चुनौती भी है। उन्होंने विश्वास जताया कि जिला प्रशासन की समर्पित टीम के सहयोग से राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी, पारदर्शी और समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि गुड गवर्नेंस केवल एक अवधारणा नहीं, बल्कि उसे धरातल पर उतारना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रशासन का मुख्य उद्देश्य आमजन को राहत पहुंचाना और उनकी समस्याओं का समयबद्ध समाधान करना हैइसी क्रम में जनसुनवाई व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ एवं परिणामोन्मुखी बनाया जाएगा, ताकि प्रत्येक परिवेदना का त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित हो सके। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि आमजन के साथ संवाद को प्राथमिकता दें और संवेदनशीलता के साथ उनकी समस्याओं का समाधान करें। नायक ने प्रशासनिक कार्यप्रणाली में तकनीकी नवाचारों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि ई-गवर्नेंस को बढावा देकर पारदर्शिता, जवाबदेही और कार्यक्षमता में वृद्धि की जाएगी। ई-फाइल प्रणाली सहित विभिन्न आईटी आधारित व्यवस्थाओं को और अधिक प्रभावी बनाया जाएगा, जिससे निर्णय प्रक्रिया में गति आएगी और अनावश्यक विलंब को रोका जा सकेगा।उन्होंने यह भी कहा कि विकास कार्यों की निरंतर मॉनिटरिंग और फील्ड विजिट्स के माध्यम से योजनाओं के वास्तविक क्रियान्वयन की समीक्षा की जाएगी, ताकि योजनाओं का लाभ अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंच सके।

संदेश नायक ने गुरुवार को जयपुर जिला कलेक्टर का पदभार ग्रहण किया।

- योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और त्वरित जनसुनवाई पर रहेगा फोकस

आमजन के आशियाने का सपना साकार करना रहेगी प्राथमिकता : आवासन आयुक्त

जयपुर, (निसं)। आमजन के आशियाने के सपने को साकार करना आवासन मंडल की सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह कहना है आवासन आयुक्त श्री अरविंद पोसवाल का।

- आवास भवन का किया दौरा, व्यवस्थाओं का लिया निरीक्षण

भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी अरविंद पोसवाल ने को आवासन मंडल के मुख्यालय आवास भवन में आयुक्त का कार्यभार संभाला। उन्होंने मुख्यालय पर पदस्थापित अधिकारियों के साथ औपचारिक बैठक लेकर चल रही विभिन्न परियोजनाओं की जानकारी भी ली। पोसवाल ने मंडल टीम द्वारा पिछले वर्षों में किए गए बेहतरीन कार्यों के लिए बधाई दी और इस गति को निरंतर बनाए रखने को कहा। उन्होंने कहा कि आवासन मंडल ने गुणवत्तायुक्त और समयबद्ध तरीके से कार्य करते हुए आमजन का विश्वास पाया है।सभी अधकारिगण इस विश्वास को बरकरार रखें। उन्होंने कहा कि टीम भावना के साथ काम करते हुए ही हम आवासन मंडल की हमारा प्रयास-सबको आवास थीम को मजबूत करते हुए आमजन को सुविधा संपन्न और गुणवत्ता युक्त आवास उपलब्ध करा सकते हैं।

अधिकारियों के साथ औपचारिक बैठक लेकर ली विभिन्न परियोजनाओं की जानकारी।

जयपुर में अवैध एलपीजी रिफिलिंग का भंडाफोड़

जयपुर(निसं)। जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल जिला स्पेशल टीम (क्राइम ब्रांच सीएसटी) ने शहर में अवैध एलपीजी गैस रिफिलिंग के खिलाफ कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। साथ ही पुलिस टीम ने कार्रवाई के दौरान आरोपियों के कब्जे से गैस सिलेंडर और रिफिलिंग उपकरण भी बरामद किए गए।पुलिस उपायुक्त (अपराध) संजीव नैन ने बताया कि पुलिस कमिश्नर सचिन मित्तल के मार्गदर्शन में विशेष पुलिस आयुक्त (ऑपरेशंस) ओमप्रकाश के निर्देशन के सुपरविजन में सीएसटी टीम ने यह कार्रवाई की। टीम ने विश्वकर्मा थाना क्षेत्र में रसद विभाग के साथ संयुक्त अभियान चलाते हुए अवैध गैस रिफिलिंग के खिलाफ कार्रवाई की।पुलिस उपायुक्त (अपराध) के अनुसार श्रीराम कच्ची बस्ती रोड नंबर 17 पर अवैध रूप से एलपीजी गैस सिलेंडरों की रिफिलिंग की जा रही थी।

'पेपर लीक या नकल की सूचना देने पर मिलेगा एक लाख का इनाम'

जयपुर(निसं)। राजस्थान पुलिस उप निरीक्षक (एसआई) भर्ती परीक्षा 2025 को लेकर स्पेशल ऑपरेशन्स ग्रुप (एसओजी) पूरी तरह अलर्ट मोड पर है। आगामी 05 और 06 अप्रैल 2026 को राज्य भर में आयोजित होने वाली इस परीक्षा की शुचिता बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन ने कड़े कदम उठाए हैं।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक पुलिस (एसओजी) विशाल बंसल द्वारा जारी आदेश के अनुसार यदि कोई भी व्यक्ति परीक्षा में गड़बड़ी करने वाले तत्वों की सटीक जानकारी देता है, तो उसे एक लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। विभाग ने स्पष्ट किया है कि सूचना देने वाले व्यक्ति की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी।

एसओजी ने इन आपराधिक गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए एक विशेष व्हाट्सएप हेल्पलाइन नंबर 9530429258 भी जारी किया है, जिस पर मैसेज के जरिए सूचना साझा की जा सकती है । पुलिस को अंदेशा है कि कुछ आपराधिक तत्व परीक्षा को प्रभावित करने की कोशिश कर सकते हैं। विशेष रूप से प्रश्न पत्र लीक करने के प्रयास,ब्लूटूथ या अन्य इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेस के जरिए नकल।,असली अभ्यर्थी के स्थान पर डमी कैंडिडेट (मुन्ना भाई) बैठाना और अन्य किसी भी प्रकार की अनुचित गतिविधि पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। पुरस्कार वितरण के संबंध में अंतिम निर्णय अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, स्पेशल ऑपरेशन्स ग्रुप, जयपुर का होगा। इस आदेश की प्रतिलिपि गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक सहित सभी संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई हेतु भेज दी गई है।

- पुलिस को अंदेशा है कि कुछ आपराधिक तत्व परीक्षा को प्रभावित करने की कोशिश कर सकते हैं

जयपुर पासपोर्ट ऑफिस को फिर बम से उड़ाने की मिली धमकी

जयपुर(निसं)। जयपुर स्थित झालाना के रीजनल पासपोर्ट ऑफिस (आरपीओ) को एक बार फिर बम से उड़ाने की धमकी मिलने से हड़कंप मच गया। गुरुवार को पासपोर्ट ऑफिस की आधिकारिक ईमेल आईडी पर भेजे गए धमकी भरे मेल में बम विस्फोट की बात कही गई थी। सूचना मिलते ही पुलिस, प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट हो गईं और तुरंत कार्रवाई शुरू की गई।

एसीपी (गांधीनगर) नारायण बाजिया ने बताया कि धमकी मिलने के बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची और एहतियातन कार्यालय परिसर को खाली करवाया गया। इसके बाद एटीएस के बम निरोधक दस्ता और डॉग स्क्वॉड की मदद से सघन सर्च ऑपरेशन चलाया गया।

हालांकि, जांच के दौरान किसी भी प्रकार की संदिग्ध वस्तु या विस्फोटक सामग्री नहीं मिली। वहीं धमकी के बाद पासपोर्ट कार्यालय की सुरक्षा व्यवस्था को और सख्त कर दिया गया है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार इस तरह की धमकियों को हल्के में नहीं लिया जा सकता, इसलिए हर एंगल से जांच की जा रही है। ई-मेल भेजने वाले की पहचान के लिए साइबर एक्सपर्ट्स की मदद ली जा रही है और यह पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है कि मेल किस लोकेशन और डिवाइस से भेजा गया।

गौरतलब है कि पिछले 23 दिनों में यह तीसरा मौका है। जब जयपुर पासपोर्ट कार्यालय को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। जयपुर के अलावा अलवर और अजमेर के पासपोर्ट सेवा केंद्रों को भी इसी तरह के धमकी भरे ई-मेल मिल चुके हैं।

तलाशी अभियान के दौरान एक दिलचस्प स्थिति भी सामने आई। जब पासपोर्ट ऑफिस के कुछ कर्मचारी टिफिन खोलकर भोजन करने लगे। जिन्हें सुरक्षा में लगे जवानों ने तत्काल रोका और सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि जयपुर में पिछले कुछ समय से सरकारी और निजी संस्थानों को बम से उड़ाने की धमकियों का सिलसिला जारी है।

विकसित ग्राम-विकसित वार्ड अभियान गांव व शहरों के सुनियोजित विकास का रोडमैप

जयपुर, (निसं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि विकसित ग्राम-विकसित वार्ड अभियान के अंतर्गत स्थानीय लोगों से सुझाव लेते हुए वर्ष 2030, 2035 एवं 2047 तक की आवश्यकताओं के अनुरूप गांव एवं शहरों के विकास का मास्टर प्लान एवं रोडमैप तैयार किया जा रहा है। मैपिंग इस अभियान का अत्यंत महत्वपूर्ण स्तभ है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस अभियान की डिजिटल मैपिंग के लिए भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग एवं भू-सूचना विज्ञान संस्थान (बीआईएसएजी-एन) से सहयोग प्राप्त करते हुए ठोस कार्ययोजना बनाई जाए। शर्मा गुरुवार को मुख्यमंत्री निवास पर बीआईएसएजी (एन) द्वारा विभिन्न विभागीय परियोजनाओं में डिजिटल मैपिंग को बढ़ावा देने के संबंध में बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विकसित ग्राम-विकसित वार्ड अभियान में इस तकनीक से गांवों और शहरों की वास्तविक जरूरतों को समझकर योजना तैयार करने में मदद मिलेगी। साथ ही, क्षेत्र विशेष की मूलभूत आवश्यकताओं को समझते हुए प्लानिंग बनाने में यह सहायक होगा। उन्होंने अधिकारियों को अभियान के तहत डिजिटल मैपिंग का अधिक से अधिक उपयोग करने के निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि 19 मार्च से 15 मई तक संचालित इस अभियान के अंतर्गत 14 हजार से अधिक ग्राम पंचायत एवं 10 हजार से अधिक शहरी वार्ड शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बीआईएसएजी (एन) द्वारा पीएम गतिशक्ति के तहत विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एकीकृत किया जा रहा है। इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से सभी विभागों की परियोजनाओं को एकीकृत करके कार्यों की रीयल टाइम मॉनिटरिंग संभव है, जिससे योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी आएगी, सिस्टम में पारदर्शिता बढ़ेगी एवं संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव हो सकेगा।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस प्लेटफॉर्म का प्रयोग करते हुए परियोजनाओं में विकास से लेकर क्रियान्वयन तक हर स्तर पर इसका उपयोग किया जाए।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बीआईएसएजी (एन) द्वारा विभिन्न विभागीय परियोजनाओं की समीक्षा की।

- पीएम गतिशक्ति के माध्यम से विकास परियोजनाओं की हो सकेगी रीयल टाइम मॉनिटरिंग

उदयपुर : अनियंत्रित टैंकर ने हाइवे पर कई वाहनों को चपेट में लिया, बड़ा हादसा टला

बताया जा रहा है कि हादसे में कई लोग घायल हुए हैं, बाइक सवार युवक भी गंभीर घायल, नौ लोग हॉस्पिटल में भर्ती

हादसे के बाद मौके पर पहुंचे लोगों ने घायलों को गाड़ियों से निकाला।

एक के बाद एक कई वाहन टैंकर में पिछे से टकरा गये।

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर शहर के प्रतापनगर थाना क्षेत्र के देबारी पावर हाउस के पास गुरूवार दोपहर भीषण हादसा हो गया। चित्तौड़गढ़ से उदयपुर की तरफ आ रहे एक टैंकर ने हाइवे पर देबारी पावर हाउस के पास अचानक अनियंत्रित होकर कई वाहनों को चपेट में ले लिया। इस दौरान पीछे आ रही कारें भी टैंकर से टकरा एक-दूसरे से भिड़ती चली गयी। 10 से 12 कारें, ऑटो, टेंपो और एक बाइक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और मौके पर चीख-पुकार मच गयी।

घटना की सूचना पर आसपास के लोग बचाव के लिए दौड़े। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। क्षतिग्रस्त वाहनों से घायलों को निकाला गया। बताया जा रहा है कि हादसे में कई लोग घायल हुए हैं जबकि बाइक सवार युवक गंभीर घायल है, जिनमें नौ लोग हॉस्पिटल भर्ती हैं, बाकि क्षतिग्रस्त वाहन चालकों के चोटें आयी हैं, जो प्राथमिक उपचार के बाद घर चले गए।

थानाधिकारी पूरण सिंह राजपुरोहित ने बताया कि देबारी पावर हाउस के सामने हाइवे पर चित्तौड़गढ़ से उदयपुर की तरफ आ रहा एक टैंकर अचानक ढलान पर अनियंत्रित हो गया, अनियंत्रित टैंकर ने आगे चल रहे कई वाहनों को चपेट में लिया। इस दौरान पीछे आ रही कारें भी टैंकर से टकरा एक-दूसरे से भिड़ती चली गई। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी का माहौल हो गया और कई लोग क्षतिग्रस्त वाहनों में फंस गए। पुलिस ने सभी घायलों ने स्थानीय लोगों की मदद से रेस्क्यू कर हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां सुनील कुमार पुत्र रमेश कुमार निवासी डबोक, पूरण कुल्मी पुत्र कालू लाल निवासी मंगलवाड़, रमेश पुत्र जवेरा निवासी रेबारियों का गुडा, अभिषेक शर्मा पुत्र खूबी लाल निवासी बडगांव, डालूराम पुत्र सूरता, निवासी आवरीमाता, रेती स्टैण्ड, नारायण लाल पुत्र जय चंद कुल्मी, निवासी देवली, पीराना, अर्पित पालीवाल पुत्र रूप लाल निवासी देवली, मनमीत पुत्र ब्रिजकिशोर निवासी बदला रोड का एक निजी अस्पताल में उपचार चल रहा है। हादसे में गंभीर घायल अमजद खान पुत्र जमालुद्दीन निवासी बैरा तहसील बाली, जिला पाली को एमबी चिकित्सालय में भर्ती करवाया,जहां युवक की हालत गंभीर बनी हुई है।

प्रथमदृष्टया टैंकर के ब्रेक फेल होने या ढलान पर टैंकर के अनियंत्रित होने से हादसा हुआ है। हॉस्पिटल में उपचाररत घायलों और उनके परिजनों के बयान लिए जा रहे हैं और अग्रिम कार्रवाई जारी है। पुलिस ने बताया कि सभी वाहनों को मौके से हटाकर या साइड कर यातायात सुचारू कर दिया गया है। जानकारी के अनुसार सुबह देबारी हाइवे पर इसी जगह के पास एक कैमिकल टैंकर भी पलटा था। तब मौके पर पहुंची पुलिस ने टैंकर को साइड करवा दिया था और फायरब्रिगेड की मदद से कैमिकल को सड़क से धो दिया गया था। इसके कुछ घंटों बाद ही यहां यह भीषण हादसा हो गया।

- **पीछे आ रही कारें भी टैंकर से टकरा एक-दूसरे से भिड़ती चली गयी, 10 से 12 कारें, ऑटो, टेंपो और एक बाइक क्षतिग्रस्त हो गई**
- **देबारी पावर हाउस के सामने हाइवे पर चित्तौड़गढ़ से उदयपुर की तरफ आ रहा एक टैंकर अचानक ढलान पर अनियंत्रित हो गया और कई वाहनों को चपेट में ले लिया**

प्लॉट की चौकीदारी कर रहे बुजुर्ग की गला काटकर हत्या

बीकानेर, (निसं)। चौकीदार की गला काटकर हत्या करने का मामला सामने आया है। 70 साल का बुजुर्ग एक प्लॉट की चौकीदारी कर रहा था। उसने दो दिन पहले ही यहां चौकीदारी का काम शुरू किया था। मामला जयनारायण व्यास कॉलोनी थाना की मदन विहार कॉलोनी का है।

जानकारी के अनुसार राहगीरों ने भंवरलाल रेगर (70) निवासी शिवबाड़ी का शव पड़े देखा और पुलिस को सूचना दी थी। अज्ञात हमलावरों ने भंवरलाल रेगर की गला रेतकर बेरहमी से हत्या कर दी। सूचना मिलते ही सीओ अनुष्ठा कालिया और थानाधिकारी विक्रम तिवारी मौके पर पहुंचे। पुलिस ने घटनास्थल पर जांच शुरू की और एफएसएल टीम को बुलाया गया, जिसने मौके से साक्ष्य जुटाने का काम शुरू किया। बताया जा रहा है कि जिस प्लॉट पर मृतक चौकीदारी कर रहा था, वह जैसलमेर निवासी कुंदन सिंह का है। भंवरलाल हाल ही में 30 मार्च को ही यहां काम पर लगा था। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है और हत्या के पीछे के कारणों का पता लगाने में जुटी है। घटना के बाद क्षेत्र में दहशत का माहौल है।

- **पुलिस और एफएसएल टीम ने घटनास्थल साक्ष्य जुटाये**

अवैध पिस्टल के साथ यूपी का युवक गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह द्वारा जिले में आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने और अवैध हथियार रखने वालों के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत गांधीनगर थाना पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने नाकाबंदी के दौरान एक युवक को अवैध देशी पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी डॉ. नेहा राव ने बताया कि अवैध हथियारों के खिलाफ गश्त के दौरान मुखबिर से सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर पुलिस टीम अहिंसा बंगलों के सामने 80 फीट रोड पर पहुँची। वहां पुलिस जाब्ते को देखकर एक युवक संदिग्ध अवस्था में भागने लगा। पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए घेराबंदी कर युवक को दबोच लिया। पकड़े गए युवक की पहचान शिवकुमार भदोरिया (20) निवासी हरदोई, उत्तर प्रदेश हाल निवासी आजादनगर भीलवाड़ा के रूप में हुई है। जाब्ते द्वारा युवक की तलाशी लेने पर उसके पास एक देशी पिस्टल बरामद हुई। जांच करने पर पिस्टल अनलोड पाई गई जिसमें मैग्जीन लगी हुई थी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर पिस्टल जब्त कर ली है। आरोपी यह हथियार कहां से लाया था और इसे किसे बेचने या किस वारदात को अंजाम देने की फिराक में था, इस संबंध में पुलिस गहनता से अनुसंधान कर रही है। पुलिस अब हथियारों की खरीद-फरोख्त से जुड़े नेटवर्क का पता लगाने में जुटी है।

- **पुलिस आरोपी से पूछताछ में जुटी**

प्राध्यापक भर्ती परीक्षा 2022 में फर्जीवाड़े का खुलासा

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग की तरफ से वर्ष 2022 में आयोजित प्राध्यापक भर्ती परीक्षा में अब फर्जीवाड़े का खुलासा हुआ है। मूल अभ्यर्थी ने किसी डमी अभ्यर्थी को परीक्षा में बैठाकर परीक्षा दिलाई थी। इस पर एसओजी की तरफ से शास्त्रीनगर थाने में केस दर्ज कराया गया है। मामले में अग्रिम तफ्तीश की जा रही है। एसओजी ग्रुप यूनिट के एएसपी श्यामसुंदर विश्नोई ने यह रिपोर्ट दी है।

प्रकरण के अनुसार मूल अभ्यर्थी दिनेश कुमार पुत्र बाबूलाल द्वारा परीक्षा में अपने स्थान पर डमी अभ्यर्थी बैठाने का खुलासा हुआ है। जांच में सामने आया कि 15 अक्टूबर 2022 को आयोजित प्रथम प्रश्न पत्र (सामान्य ज्ञान एवं सामान्य अध्ययन) की परीक्षा में दिनेश कुमार स्वयं उपस्थित नहीं हुआ, बल्कि उसके स्थान पर एक अन्य अभ्यर्थी को बैठाया गया। जांच के दौरान राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर से प्राप्त मूल उपस्थिति पत्रक एवं ओएमआर शीट के अवलोकन में फोटो और हस्ताक्षरों में स्पष्ट भिन्नता पाई गई। प्रथम प्रश्न पत्र में हस्ताक्षर हिन्दी में तथा द्वितीय प्रश्न पत्र (हिन्दी विषय) में हस्ताक्षर अंग्रेजी में पाए गए। दोनों परीक्षाओं के दस्तावेजों में फोटो और हस्ताक्षर मेल नहीं खाते, जिससे फर्जीवाड़े की पुष्टि हुई। अनुसंधान में यह भी सामने आया कि दिनेश कुमार ने अपने परिचित मनोहर लाल निवासी सांचौर जिला जालोर के माध्यम से डमी अभ्यर्थी की व्यवस्था की थी। इसके लिए प्रवेश पत्र में छेड़छाड़ कर फोटो व हस्ताक्षर बदलकर फर्जी एडमिट कार्ड तैयार किया गया। उक्त डमी अभ्यर्थी को जोधपुर के सरदारपुरा स्थित परीक्षा केंद्र पर बैठाकर परीक्षा दिलवाई गई।

प्रकरण में पूछताछ में पता लगा कि द्वितीय प्रश्न पत्र हिन्दी की परीक्षा दिनेश कुमार ने स्वयं दी। पूछताछ में उसने यह स्वीकार भी किया कि प्रथम प्रश्न पत्र उसने स्वयं नहीं दिया था। यह परिवाद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एसओजी यूनिट अजमेर द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिस पर कार्रवाई करते हुए शास्त्रीनगर थाना पुलिस ने अब मामला दर्ज किया है। फिलहाल मामले की जांच एडीसीपी वेस्ट की तरफ से की जा रही है।

- **मूल अभ्यर्थी ने किसी डमी अभ्यर्थी को परीक्षा में बैठाकर परीक्षा दिलाई थी**
- **एसओजी की तरफ से शास्त्रीनगर थाने में केस दर्ज कराया**

हत्या के 12 दोषियों को आजीवन कारावास

कोटा, (निसं)। युवक की हत्या के साढ़े छह साल पुराने मामले में महिला उत्पीडन न्यायालय क्रम-1 न्यायालय ने सुनवाई करते हुए मामले में दो महिलाओं सहित 12 जनों को दोषी मानते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

जानकारी के अनुसार 31 अगस्त 2018 को फरियादी जाहिद हुसैन ने उद्योग नगर थाने में रिपोर्ट दी। फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि उसका मामा अब्दुल अजीज उर्फ पप्पू जो बोम्बे योजना में परिवार सहित रहता है, रिपोर्ट में कहा कि उसके मामा अब्दुल अजीज उर्फ पप्पू का उसके पड़ौसी रमजानी के बीच बकरे के मामले को लेकर विवाद हो गया था। वह व उसका भाई इस्तियाक हुसैन उर्फ गुड्डू तथा दो मित्र यशपाल व कालू उसके मामा के घर मिलने आये थे।

फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि उसका भाई इस्तियाक हुसैन उर्फ गुड्डु व यशपाल दुकान पर कुछ सामान लेने गये, उसी समय बकरे की लड़ाई की रंजिश के चलते रमजानी ने अपने दो बेटे मुख्तार मोहम्मद, मुशताक मोहम्मद उर्फ भुरू, एवं शोयब, सद्दाम, जहीर, शाहरूख, मुबारिक व सात-आठ अन्य ने चाकू, लकड़ियां व धारदार हथियार लेकर एकराय होकर जान से मारने की नियत से उसके भाई इस्तियाक हुसैन उर्फ गुड्डु पर हमला कर दिया। जहीर, शाहरूख व मुबारिक ने उसके भाई के उपर चाकू से ताबातोड़ वार किये। बीच बचाव में यशपाल को भी चोट आई, हमलावर हमला कर मौके से फरार हो गये।

रिपोर्ट में कहा कि हमले में गंभीर रूप से घायल हुए इस्तियाक हुसैन उर्फ गुड्डु को उपचार के लिये निजि अस्पताल ले गये, जहां डॉक्टर ने जांच के बाद उसके भाई इस्तियाक हुसैन उर्फ गुड्डु को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर हत्या सहित अन्य धाराओ में आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया।

पुलिस ने मामले में कार्यवाही व अनुसंधान करते हुए बोम्बे योजना निवासी रमजानी मोहम्मद (57), उसकी पत्नी फरजाना (43), दो बेटे मुश्ताक मोहम्मद उर्फ भुरू (29), मुख्तार मोहम्मद (31) एवं मुबारिक अली (26), लाडपुरा निवासी सद्दाम खान (32), किशोरपुरा निवासी जहीर खान (35), बोम्बे योजन निवासी शाहिन खानम (37), शाहरूख उर्फ लंगडा (26), नईमुद्दीन उर्फ शोयब (26), शाहदत (30) एवं लाडपुरा निवासी शाहरूख (32) को गिरफ्तार किया। वहीं मामले में पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ न्यायालय में चालान पेश किया, मामले में 25 गवाहों के बयान दर्ज कराये गये।

- **पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ न्यायालय में चालान पेश किया, मामले में 25 गवाहों के बयान दर्ज कराये**

प्रेमी ने साथियों के साथ मिलकर प्रेमिका के पति की हत्या की

श्रीगंगानगर, (निसं)। प्रेमी ने साथियों के साथ मिलकर प्रेमिका के पति की हत्या कर दी। आरोपी ने पति पर सोते समय धारदार हथियारों से हमला कर दिया। पत्नी के अवैध संबंधों का पता चलने के बाद पति की एक दिन पहले आरोपी प्रेमी के साथ बहस हुई थी। जिसके बाद महिला ने प्रेमी से पति की हत्या करवा दी।

एसएचओ बलवंत कुमार ने बताया कि बुधवार रात एक बजे सूचना मिली कि एक गांव में स्थित चौधरी ईंट भट्टे पर दो युवकों पर धारदार हथियार से हमला कर दिया है। सूचना पर टीम मौके पर पहुंची और घायल भादर सिंह, और अमरीक को रावला अस्पताल पहुंचाया। जहां से गंभीर हालत में दोनों को बीकानेर रेफर कर दिया। भादर सिंह ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया, जबकि अमरीक सिंह को बीकानेर के पीबीएम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आरोपी सतनाम अपने साथियों के साथ भादर सिंह के कमरे पर पहुंचा और मारपीट के बाद मौके से फरार हो गया।

मृतक भादर सिंह के बड़े भाई वीर प्रताप सिंह ने बताया कि मेरे भाई भादर सिंह की पांच साल पहले मनप्रीत कौर से शादी हुई थी। दोनों की एक साल की बेटी है। भादर सिंह (मृतक) एक ईंट भट्टे पर ट्रैक्टर चलाने का काम करता था। इसी भट्टे पर सतनाम सिंह पुत्र बख्तावर सिंह भी काम करता था। आठ महीने पहले मनप्रीत और सतनाम सिंह के बीच में अवैध संबंध शुरू हो गया। वीर प्रताप को जब मनप्रीत के अफेयर के बारे में पता चला तो उसने उसे काफी समझाने की कोशिश की। मगर मनप्रीत ने सतनाम से मिलना बंद नहीं किया। एक महीने पहले मनप्रीत के मामा के साथ उसने फिर से समझाया, इस पर उसने अपनी गलती मान ली और आश्वासन दिया कि वह सतनाम से नहीं मिलेगी। पत्नी के अवैध संबंध को लेकर भादर सिंह काफी तनाव में रहता था। कुछ दिन पहले ही मनप्रीत अपनी बेटी को लेकर पीहर खाजूवाला चली गई।

वीरप्रताप ने बताया कि बुधवार को मनप्रीत से अवैध संबंधों को लेकर भादर का सतनाम से विवाद हुआ। इसके बाद मनप्रीत ने सतनाम को मेरे भाई भादर की हत्या के लिए उकसाया। इसके बाद रात 1 बजे सतनाम सिंह, गुरदास सिंह, गुरमीत सिंह बावरी, गुरजंट, गुरचरण सिंह ने एकराय होकर भट्टे पर अपने कमरे में सो रहे मेरे भाई भादर सिंह और उसके साथ अमरीक सिंह पर हमला कर दिया।

चौधरी ईंट भट्टे के मालिक कुलदीप भाम्भू ने बताया कि ईंट भट्टे पर काम करने वाले कुछ मजदूरों ने बताया कि बुधवार शाम भादर सिंह और सतनाम सिंह के बीच कहासुनी हुई थी। इस पर कुछ मजदूरों ने दोनों पक्षों से समझाइश कर एक बार की मामले को शांत कर दिया। इसके सतनाम सिंह मौके से चला गया। बुधवार रात में भादर सिंह अपने ट्रैक्टर के ड्राइवर अमरीक सिंह (35) साथ ईंट भट्टे पर बनी झुग्गी में सो रहा था। रात करीब एक बजे सतनाम सिंह अपने भाई और 2-3 अन्य लोगों के साथ उसकी झुग्गी में आया। इस के बाद लाठी, डंडों और गंडासी से सो रहे भादर सिंह और अमरीक सिंह में ताबड़तोड़ हमला कर दिया। शोर सुनकर जब बाकी लोग जाग गए तो आरोपी मौके से भाग निकले।

रावला एसएचओ बलवंत कुमार ने बताया कि मृतक और घायलों के परिजनों के द्वारा अभी तक कोई लिखित रिपोर्ट दी गई है। घायल अमरीक के बयान ले लिए हैं। आरोपियों की तलाश के लिए दबिश दी जा रही है।

- **पत्नी के अवैध संबंधों का पता चलने के बाद पति की एक दिन पहले आरोपी प्रेमी के साथ बहस हुई थी**

दुष्कर्म के दोषी को 20 वर्ष की सजा सुनाई

कोटा, (निसं)। नाबालिग से दुष्कर्म के लगभग 14 माह पुराने मामले में पॉक्सो कोर्ट क्रम- 4 न्यायालय ने पकड़े गये आरोपी को दोषी मानते हुए 20 वर्ष कठोर कारावास की सजा सुनाई साथ ही 20 हजार के अर्थ दंड से दंडित किया है।

विशिष्ट लोक अभियोजक वंदना नागर ने बताया कि नाबालिग पीड़िता ने 22 फरवरी 2025 को ग्रामीण के एक थाने में एक रिपोर्ट दर्ज करवाई थी, जिसमें कहा कि 21 फरवरी 2025 को उसकी छोटी बहन को ढूंढने के लिए वह पड़ौसी युवक के घर गई थी, वहां पर युवक ने उसे दूसरे कमरे में ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज किया, पुलिस ने मामले में कार्यवाही व अनुसंधान करते हुए आरोपी को गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ न्यायालय में चालान पेश किया। मामले में 13 गवाहों के बयान दर्ज किये गये और 28 दस्तावेज पेश किए गए।

- **पॉक्सो कोर्ट क्रम- 4 न्यायालय ने आरोपी को 20 हजार के अर्थ दंड से दंडित किया**

युवक का शव मिला

टोंक, (निसं)। उनियारा थाना क्षेत्र में गुरुवार को टोंक-सवाई माधोपुर नेशनल हाइवे की पुलिया के नीचे करीब डेढ़ फीट के पानी में युवक का शव मिलने से सनसनी फैल गई। इस शव पर बाहरी चोट के निशान नहीं थे उसके दोनों पैर के अंगूठे प्लास्टिक की रस्सी से आपस में बंधे थे। सूचना मिलने के बाद उनियारा डीएसपी आकांक्षा चौधरी मौके पर पहुंची और शव को शिनाख्त के लिए उनियारा अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया है। डीएसपी आकांक्षा चौधरी ने बताया कि गुरूवार को सूचना मिलने के बाद टोंक-सवाई माधोपुर नेशनल हाइवे-552 पर कामधेनु सर्किल और कोर्ट के बीच की बाईपास पर गलवा नगर की पुलिया के नीचे भरे पानी में एक युवक का शव मिला, इसके बाद उनियारा थाना पुलिस के साथ मौके पर पहुंच कर जांच की। इसके बाद शव को पानी से बाहर निकलवाया, जो दो दिन पुरानी लग रही है। बाहरी चोट के निशान नजर नहीं आए और न ही किसी से लड़ाई झगड़े में होने वाली चोट हैं। जिसके बाद उनियारा पुलिस ने प्रकरण में अनुसंधान प्रारम्भ कर दिया है।

- **शव को शिनाख्त के लिए उनियारा अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया**

अजमेर-ब्यावर नेशनल हाइवे पर बायोडीजल टैंकर में भीषण आग लगी

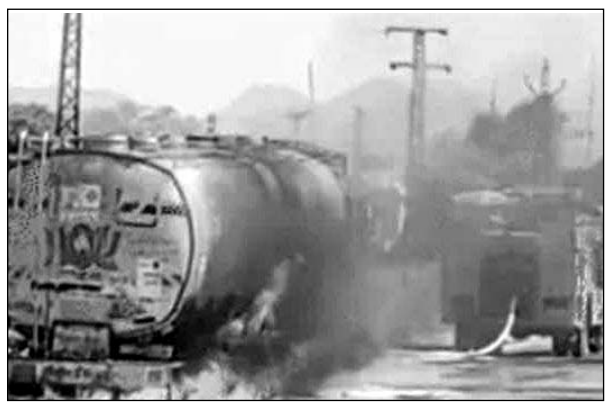

आग की लपटें दूर तक दिखाई दी। वहीं दमकल कर्मियों ने करीब डेढ़ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

अजमेर, (कासं)। जिले के मांगलियावास क्षेत्र में गुरुवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया, जब ब्यावर से अजमेर की ओर आ रहा बायोडीजल से भरा एक टैंकर अचानक आग की चपेट में आ गया। टायर फटने के कारण लगी आग ने कुछ ही पलों में विकराल रूप ले लिया और टैंकर आग के गोले में तब्दील हो गया। आग लगते ही टैंकर चालक और खलासी ने तत्परता दिखाते हुए वाहन को तुरंत किनारे खड़ा किया और सुरक्षित बाहर निकल गए। उनकी सूझबूझ के कारण एक बड़ा हादसा होने से टल गया। बताया जा रहा है कि टैंकर गुजरात से अजमेर की ओर आ रहा था।

जानकारी के अनुसार हादसा अजमेर-ब्यावर नेशनल हाइवे-8 पर सुबह करीब साढ़े आठ बजे हुआ। सूचना मिलते ही मांगलियावास थाना पुलिस और दमकल विभाग की पांच गाड़ियां मौके पर पहुंची। दमकल कर्मियों ने करीब डेढ़ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तुरंत हाइवे पर यातायात रोक दिया और वैकल्पिक मार्गों पर डायवर्ट कर ट्रैफिक व्यवस्था को नियंत्रित किया। हादसे के दौरान पुलिस की बार-बार चेतावनी के बावजूद कुछ लोग अपनी जान जोखिम में डालते हुए सुलगते टैंकर के बेहद करीब से दुपहिया वाहनों पर निकालते हुए नजर आए। इस लापरवाही के चलते हाइवे के दोनों ओर करीब डेढ़ से दो किलोमीटर तक लंबा जाम लग गया, जिससे यातायात पूरी तरह प्रभावित रहा।

- **चालक और खलासी ने टैंकर को सड़क किनारे खड़ा किया और सुरक्षित बाहर निकल गए**
- **टायर फटने के कारण लगी आग ने कुछ ही पलों में विकराल रूप ले लिया और टैंकर आग के गोले में तब्दील हो गया**

किसान पर हमला कर रहे पैंथर को बंदरों ने भगाया

बंदरों के हमले और लोगों को आता देखकर पैंथर मौके से भाग निकला

उदयपुर, (कास)। उदयपुर जिले में खेत पर काम कर रहे किसान पर एक पैंथर ने हमला कर दिया। किसान को संघर्ष करता देख कुछ बंदरों ने पैंथर पर अटैक कर दिया और पैंथर को वहां से भगाकर किसान की जान बचाई। इस घटना को लेकर क्षेत्र में चर्चा का माहौल है। लोगों का कहना है कि किसान की गुहार सुनकर महाबली ने अपनी वानर सेना भेजी। किसान भी हनुमानजी का भक्त है और गुरुवार को हनुमान जन्मोत्सव भी है।

जानकारी के अनुसार लोसिंग गांव निवासी वार्ड पंच तुलसीराम पालीवाल (55) सुबह करीब साढे ग्यारह बजे अपने खेत में गेहूं की फसल काट रहे थे। काम के बाद वे पास ही पेड़ की छाया में आराम करने बैठे तभी झाड़ियों में छिपे पैंथर ने अचानक उन पर हमला कर दिया। पैंथर ने उनकी गर्दन पर पंजा मार दिया, जिससे वे घबरा गए। तुलसीराम पालीवाल ने बताया कि अचानक हुए हमले के दौरान पास के पेड़ों पर बैठे बंदरों का झुंड शोर मचाते हुए नीचे आ गया और पैंथर पर हमला कर दिया। इसी बीच आसपास खेतों में काम कर रहे ग्रामीणों ने भी शोर मचाना शुरू कर दिया। बंदरों के हमले और लोगों को आता देखकर पैंथर मौके से भाग निकला।

पीड़ित ने भावुक होकर बताया कि दो बंदर तो जैसे हनुमान जी बनकर आए और मेरी जान बचा ली। हमले में उनके हाथ और पीठ पर मामूली खरोंचें आई हैं। घटना के बाद आसपास के ग्रामीण तुरंत मौके पर पहुंचे और तुलसीराम को लोसिंग के अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका प्राथमिक उपचार किया गया। इस घटना के बाद क्षेत्र में दहशत का माहौल है। ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचना देकर पैंथर को पकड़ने के लिए पिंजरा लगाने की मांग की है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं से बचाव हो सके।

- **हमले में किसान के हाथ और पीठ पर मामूली खरोंचें आई, आसपास के ग्रामीण तुरंत मौके पर पहुंचे और तुलसीराम को लोसिंग के अस्पताल पहुंचाया**

दो बाल अपचारी डिटेन किये

उदयपुर, (निसं)। शहर के सूरजपोल थाना क्षेत्र में अपचारी पर चाकू से प्राणघातक हमला करने के मामले में विधी से संघर्षरत दो बाल आपचारियों को सूरजपोल थानाधिकारी रतनसिंह मय टीम ने डिटेन किया।

Office of the Executive Engineer, PHED, Distt Rural Div I Bikaner
Email ID - eepheddn1bkn@gmail.com Contact No. 0151-2941473
No.5966-85 Date: 27/03/2026

Notice Inviting Bid : 145-150/2025-26

Bid for various works are invited to registered interested bidder upto 10.04.2026 upto 02.00 PM. Other particulars of bid may be visited on the Procurement Portal http://eproc.rajasthan.gov.in and http://sppp.raj.nic.in of the state. The approximate value of the procurement of Rs. 248.20 Lacs.

UBN No. PHE2526WSOB15958, PHE2526WSOB15959, PHE2526WSOB15960, PHE2526WSOB15961, PHE2526WSOB15962, PHE2526WSOB15963

जल सीमित है, इसकी बचत करें।

(Aditya Shrimali)
Executive Engineer
PHED, Distt (R) Div I Bikaner

DIPR/C/6330/2026

कार्यालय नगरपरिषद कुचामन सिटी (डीडवाना-कुचामन)

Email : eo.mcorp.kuchaman@rajasthan.gov.in
munibkcity@gmail.com
फोन नं. 01586-220022
01586-221526

क्रमांक :– न.प.कु./ 2025–26/116 दिनांक :– 02.04.2026

–:पट्टा निरस्तीकरण आदेश:–

निदेशालय स्वायत्त शासन विभाग, राज. जयपुर की अधिसूचना दिनांक 09.05.2022 की अनुपालना में राजस्थान नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 73–ख राजस्थान नगरपालिका अधिनियम 2009 (जिसे उक्त आदेश में आगे अधिनियम–2009 संबोधित किया गया है) के द्वारा निम्नानुसार निर्णय पारित किया जाना प्रस्तावित है:–

क्र. सं.	पट्टा संख्या	पत्रावली संख्या	आवेदक का नाम	पिता/पति का नाम	खसरा नं.	भूखण्ड संख्या	योजना का नाम	क्षैत्रफल (वर्ग गज में)	प्रयोजन
1	1 / 2021	285 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	176	SAI VAISHALI NAGAR	53.33	आवासीय
2	3 / 2021	175 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	11	SAI VAISHALI NAGAR	138.88	आवासीय
3	4 / 2021	374 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	157	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
4	5 / 2021	321 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	195	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
5	6 / 2021	322 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	225	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
6	7 / 2021	354 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	165	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
7	8 / 2021	362 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	241	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
8	9 / 2021	278 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	114	SAI VAISHALI NAGAR	91.00	आवासीय
9	10 / 2021	328 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	204	SAI VAISHALI NAGAR	107.88	आवासीय
10	11 / 2021	288 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	227	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
11	12 / 2021	291 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	148	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
12	14 / 2021	373 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	145	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
13	15 / 2021	366 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	119	SAI VAISHALI NAGAR	88.66	आवासीय
14	16 / 2021	367 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	120	SAI VAISHALI NAGAR	88.22	आवासीय
15	17 / 2021	368 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	244	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
16	18 / 2021	161 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	12	SAI VAISHALI NAGAR	138.88	आवासीय
17	19 / 2021	327 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	135	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
18	20 / 2021	356 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	146	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
19	21 / 2021	339 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	199	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
20	22 / 2021	338 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	191	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
21	23 / 2021	276 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	203	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
22	24 / 2021	352 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	137	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
23	25 / 2021	355 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	121	SAI VAISHALI NAGAR	87.95	आवासीय
24	26 / 2021	363 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	184	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
25	27 / 2021	357 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	170	SAI VAISHALI NAGAR	111.11	आवासीय
26	28 / 2021	337 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	240	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
27	29 / 2021	336 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	110	SAI VAISHALI NAGAR	95.64	आवासीय
28	30 / 2021	361 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	154	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
29	31 / 2021	292 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	152	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
30	32 / 2021	280 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	175	SAI VAISHALI NAGAR	53.33	आवासीय
31	33 / 2021	360 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	217	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
32	34 / 2021	359 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	219	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
33	35 / 2021	290 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	226	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
34	36 / 2021	208 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	45	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
35	37 / 2021	345 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	161	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
36	38 / 2021	340 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	231	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
37	39 / 2021	347 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	178	SAI VAISHALI NAGAR	53.33	आवासीय
38	40 / 2021	323 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	223	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
39	41 / 2021	329 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	205	SAI VAISHALI NAGAR	104.53	आवासीय
40	42 / 2021	331 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	156	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
41	43 / 2021	369 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	246	SAI VAISHALI NAGAR	53.33	आवासीय
42	44 / 2021	353 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	194	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
43	45 / 2021	343 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	124	SAI VAISHALI NAGAR	87.57	आवासीय
44	46 / 2021	341 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	233	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
45	47 / 2021	348 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	162	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
46	48 / 2021	326 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	125	SAI VAISHALI NAGAR	87.31	आवासीय
47	49 / 2021	350 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	147	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
48	50 / 2021	351 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	173	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
49	51 / 2021	283 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	168	SAI VAISHALI NAGAR	143.72	आवासीय
50	52 / 2021	349 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	150	SAI VAISHALI NAGAR	98.80	आवासीय
51	53 / 2021	272 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	186	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
52	54 / 2021	306 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	209	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
53	55 / 2021	195 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	93	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
54	56 / 2021	190 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	96	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
55	57 / 2021	204 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	44	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
56	59 / 2021	335 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	123	SAI VAISHALI NAGAR	87.95	आवासीय
57	60 / 2021	305 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	213	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
58	61 / 2021	207 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	1	SAI VAISHALI NAGAR	392.26	आवासीय
59	62 / 2021	203 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	26	SAI VAISHALI NAGAR	140.81	आवासीय
60	63 / 2021	160 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	13	SAI VAISHALI NAGAR	138.88	आवासीय
61	65 / 2021	153 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	6	SAI VAISHALI NAGAR	100.00	आवासीय
62	66 / 2021	333 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	216	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
63	68 / 2021	215 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	84	SAI VAISHALI NAGAR	312.93	आवासीय
64	69 / 2021	192 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	89	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
65	70 / 2021	332 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	155	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
66	71 / 2021	318 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	109	SAI VAISHALI NAGAR	91.66	आवासीय
67	73 / 2021	155 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	64	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
68	74 / 2021	371 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	187	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
69	77 / 2021	164 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	2	SAI VAISHALI NAGAR	337.04	आवासीय
70	78 / 2021	183 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	99	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
71	79 / 2021	162 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	34	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
72	80 / 2021	178 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	4	SAI VAISHALI NAGAR	99.53	आवासीय
73	81 / 2021	168 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	20	SAI VAISHALI NAGAR	100.00	आवासीय
74	82 / 2021	370 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	245	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
75	83 / 2021	136 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	80	SAI VAISHALI NAGAR	80.17	आवासीय
76	85 / 2021	135 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	86	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
77	86 / 2021	122 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	36	SAI VAISHALI NAGAR	93.11	आवासीय
78	87 / 2021	187 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	103	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
79	88 / 2021	129 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	87	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
80	89 / 2021	173 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	70	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
81	90 / 2021	144 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	7	SAI VAISHALI NAGAR	100.00	आवासीय
82	91 / 2021	184 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	60	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
83	92 / 2021	372 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	188	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
84	94 / 2021	185 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	98	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
85	95 / 2021	131 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	101	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
86	96 / 2021	149 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	82	SAI VAISHALI NAGAR	138.88	आवासीय
87	97 / 2021	182 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	94	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
88	98 / 2021	138 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	72	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
89	99 / 2021	179 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	8	SAI VAISHALI NAGAR	133.10	आवासीय
90	100 / 2021	124 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	35	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
91	101 / 2021	188 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	97	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
92	102 / 2021	186 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	102	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
93	103 / 2021	156 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	53	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
94	104 / 2021	172 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	105	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
95	105 / 2021	148 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	83	SAI VAISHALI NAGAR	215.25	आवासीय
96	106 / 2021	137 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	75	SAI VAISHALI NAGAR	159.13	आवासीय
97	107 / 2021	261 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	141	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
98	108 / 2021	375 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	189	SAI VAISHALI NAGAR	66.67	आवासीय
99	109 / 2021	377 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	190	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
100	110 / 2021	378 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	158	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
101	111 / 2021	342 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	232	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
102	112 / 2021	344 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	144	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
103	113 / 2021	218 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	61	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
104	114 / 2021	259 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	182	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
105	115 / 2021	263 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	208	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
106	116 / 2021	273 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	131	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
107	117 / 2021	293 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	132	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
108	118 / 2021	386 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	174	SAI VAISHALI NAGAR	53.33	आवासीय
109	119 / 2021	376 / 21	श्री रिद्धी सिद्धी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	193	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय

शेष पृष्ठ II पर

ARBiT
it happens here...

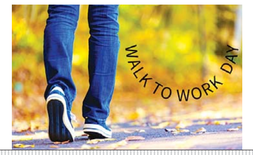

Step Into Wellness: Celebrating Walk to Work Day

Walk to Work Day encourages people to embrace the simple habit of walking instead of relying on motorised transport for daily commutes. This initiative promotes physical fitness, reduces carbon emissions, and fosters a healthier relationship with the environment. Even small changes, such as walking a portion of the journey or choosing stairs over lifts, can significantly improve cardiovascular health and mental well-being. Beyond health benefits, walking also helps reduce traffic congestion and air pollution in urban areas. As cities become more crowded, adopting sustainable commuting habits can contribute to cleaner, greener communities while enhancing personal fitness and mindfulness.

राष्ट्रदूत
FRIDAY
03 April 2026
A-B

#RESILIENCE AND WIT

Marilyn Monroe and the Potato Sack Dress

One particularly sharp-tongued reporter criticized the gown, calling it 'cheap' and 'vulgar.' The reporter said that Monroe would look better in a 'potato sack.'

Marilyn Monroe, one of the most iconic and beloved actresses of the 20th century, was no stranger to public scrutiny. Her beauty, talent, and personal life were often the subject of intense media attention. However, one particular moment in Monroe's career highlighted not only the harshness of the media but also her ability to turn criticism into a clever, witty response.

In 1952, Marilyn attended the Photoplay Awards in a stunning red gown that accentuated her natural curves and glamorous allure. But, as was often the case with her, not everyone was enamored with her appearance. One particularly sharp-tongued reporter criticized the gown, calling it 'cheap' and 'vulgar.' The reporter even went so far as to say that Monroe would look better in a 'potato sack.' It was a cruel, dismissive remark that both questioned her taste and dismissed her beauty in the most superficial way.

Monroe, ever the savvy woman, turned this insult into a moment of both humor and brilliance. In a move that showcased her wit and grace, costume designer Jean Louis (who had worked with her on many films) designed a 'potato sack' dress as a playful and satirical response to the harsh criticism. The dress, created for the Academy Awards in 1953, was a clever comment on the absurdity of the reporter's insult. Monroe wore it with confidence, making a statement that beauty is not about the price tag or the label but about owning who you are, regardless of what the world thinks.

The Great Depression and the Potato Sack as a Symbol

The 'potato sack' also had a deeper meaning, linked to the economic realities of the Great Depression. During that time, women were often forced to make do with limited resources. Financial hardships meant that many families, particularly in rural America, had to resort to using potato sacks as makeshift clothing. The simplicity of the sack became a symbol of economic struggle, but also of resourcefulness and resilience.

The 'potato sack' dress wasn't merely a piece of fabric but a symbol of strength and ingenuity. Monroe's use of this symbolism, combined with her unapologetic beauty, was an act of defiance against societal norms that reduced women to nothing more than their physical appearance or their ability to adhere to beauty standards set by the media.

Beauty Beyond the Price Tag

Monroe's response also challenged the prevailing notion that beauty is defined by the price tag of a dress or the extravagance of a gown. The media often reduced women like Monroe to their clothes, bodies, and public personas, rather than acknowledging their complexity as individuals. By wearing the 'potato sack' dress, Monroe made a powerful statement: that beauty transcends appearance and is not dependent on wealth, status, or expensive attire.

Cultural Impact and Legacy

Monroe's response to the 'potato sack' comment remains one of the most memorable moments in Hollywood history. It is a perfect example of her ability to embrace her persona and transform criticism into empowerment. Over time, the 'potato sack' dress has become more than just a witty response; it symbolizes the tension between beauty and the societal expectations placed on women, and how these standards can be subverted and redefined.

The 'City of Witches'

Benevento is a little more than two hours by train from Rome.

The hunting and persecution of so-called witches was a practice that began to take root in Italy in the late 1300s, supervised and carried out in many ways by the Catholic Church. By 1542, Pope Paul III had created the Congregation of the Holy Office of the Inquisition, which tasked the church with criminalizing those who would speak against the faith. It was an amorphous crime because any misfortune to befall a person or town could be attributed to a witch, around 80 per cent of the people charged with witchcraft in early-modern Europe were women. Academics estimate that 22,000 to 33,000 witchcraft trials took place in Italy, with very few of these ending in capital punishment. Witch hunting appeared to largely come to an end by the 18th century.

The Walnut of Benevento (Sabbath of Witches), 1822-1826, by Giuseppe Pietro Bagetti Molteni & Motta.

● Kshema Jatuhkarna

Stepping off the train in the southern Italian city of Benevento is not a particularly haunting experience, in the sense that the air on a brisk October day yields nothing other than cloud cover and fog. That this is the so-called 'city of witches,' the site where women from all over the country might have flown in the middle of the night to dance around a famous walnut tree and to learn, effectively, how to be a witch, is not immediately apparent.

Where the witchiness of Benevento, a city of over 55,000 with a Roman theater and Arch of Trajan from ancient times, may be most felt is in the traditions of its residents, many of whom still hold close these passed-down superstitions. Depending on whom you ask, a curse of the evil eye must still be warded off with a specific ritual involving oil and water and a traditional prayer. Leaving a broom at your door is a good way to ensure that the local witches, known as the Janare, won't sneak under the threshold, they'll be too distracted counting the strands of straw. And if you wake to find that your horse's mane has been braided, a Janara must have taken it for a late-night ride.

Even now, when Maria Scarinzi, an anthropologist and head of education programs at Janua, Benevento's Museum of Witches, interviews older residents about their beliefs, she finds that they hesitate to share everything for fear of retribution.

"They still believe that if you name the Janara, she will come to your house at night and she will harm you in some way," Scarinzi says. "They still believe that if I tell you that I know the formula for getting rid of maggots, you will think that I am a Janara and you'll distance me from society."

How Benevento became the city of witches

Some researchers argue that this southern Italian town, a little more than two hours by train from Rome, became known for its witches because of its unique political position. But to understand the root of the myth, we have to go back to 1428.

The hunting and persecution of so-called witches was a practice that began to take root in Italy in the late 1300s, supervised and carried out in many ways by the Catholic Church. By 1542, Pope Paul III had created the Congregation of the Holy Office of the Inquisition, which tasked the church with criminalizing those who would speak against the faith. It was an amorphous crime because any misfortune to befall a person or town could be attributed to a witch, around 80 per cent of the people charged with witchcraft in early-modern Europe were women. Academics estimate that 22,000 to 33,000 witchcraft trials took place in Italy, with very few of these ending in capital punishment. Witch hunting appeared to largely come to an end by the 18th century.

The first reference to Benevento as a place where witches gather dates to 1428. It comes from the transcriptions of the trial of Matteuccia di Francesco, a 40-year-old woman, who was eventually sentenced to death and burned at the stake for witchcraft by the Franciscan Bernardino of Siena in the Umbrian town of Todi.

From Matteuccia, we receive the famous formula, or incantation, that has since become inextricably associated with Benevento: *"Unguento, unguento / mandame a la noce de Benivento, / supra aqua et supra ad vento / et supra ad omne maltempo."*

Translation: "Ointment, ointment/ send me to the walnut tree of Benevento/ over water and over wind/ and over all bad weather."

During the trial, Matteuccia confesses that she spreads a cream on herself and chants to be sent to the walnut tree of Benevento, which had demonic associations and was thought to be near the river Sabato.

"From that moment on, the inquisitors try to make the witches confess that they went to Benevento, because it becomes a sort of indictment," says Paola Caruso, who has published books on the folklore of Benevento. "If they went to Benevento, then that means they're witches."

In fact, according to Caruso, after Matteuccia's confession, nearly all the Italian witch trials of the 15th and 16th centuries reference, in some way, Benevento as a gathering place for witches. No records exist, however, of witch trials in Benevento itself, though this could be attributed to the World War II bombing of the city's central cathedral that destroyed much of the ecclesiastical archives, Scarinzi says.

By 1640, local medical examiner Pietro Piperno penned his historical treatise on, among other things, the walnut tree of Benevento, explaining the origins of its supernatural powers. He claimed, according to Caruso, that it is not those from Benevento who participate in the late-night gathering of witches around the walnut tree, but people coming from elsewhere. In many ways, this only reinforced the link between Benevento and the witches.

Caruso's research is built on the idea that Benevento became the 'city of witches' because of its political isolation. Even when surrounded by the Romans, up until the third century B.C.E., the city once called Maleventum was ruled by the Samnites. It was eventually subsumed into the Romans' dominion, but after the fall of the Empire, by the sixth century C.E., the Lombards arrived, establishing Spoleto in Umbria and Benevento as their two southern duchies. What makes Benevento unique is that, despite its association with the Lombards, it managed to remain in large part independent from centralized control until the late 11th century C.E., when it was taken over by the papacy and largely stayed under papal control until becoming part of Italy in 1860. The fact that it had retained some sense of governing autonomy for so long sowed insecurity in the political leaders of the time.

"We must imagine Benevento as a very rich city, a papal city, an obligatory halfway point, you had to pass through Benevento," Scarinzi says. "We have to imagine it also as a kind of island in what was the Kingdom of Naples, difficult to conquer with all this wealth. So, how can I discredit someone? It's what we still do today: I speak ill of that person."

The targets of this abuse were generally local women known as healers, 'almost women of science,' Scarinzi says, or practitioners of what would today be called herbal medicine. These were women who knew the medicinal value of herbs like St. John's wort, lavender and dandelion, gleaned from information passed down to them through generations.

"The negativity around these women was linked to the fact that people were afraid," Scarinzi says, "because they were women who had a power, which, in many cases, was medicine."

The modern-day legacy

The Museum of Witches, located in the Palazzo Paolo V off the city's pedestrian Corso Garibaldi, is a testament to how the customs survive in the daily lives of its residents.

For a couple of decades, anthropologists have been interviewing people about the history and customs of the larger province of Benevento. Part of this effort has been to talk with the elderly, mostly those 70 years and older, to preserve the superstitions and legends of the witches before they disappear. About 10 years ago, they had enough to open a museum.

"Our goal was to recount the figure of the Benevento witch, that is, who the Janara is, for the people of Benevento," Scarinzi says. "What is this magical world today, for older people, more than anything else, who continue to perform certain practices and certain rituals?"

The museum opens with a short video punctuated by the voices of residents describing how the legend of the Janare has seeped into their way of life. Artifacts show the roots of rituals. A pair of small coffee cups tells the story of how a woman could entice the man of her dreams by serving a drop of her menstrual blood in his coffee.

"The belief was that, in the moment in which the woman made her proposal of love, the man had to, naturally, accept, otherwise he would die," Scarinzi says. "It was the Janara who gave the blood and the object a power."

A woman proposing rather than a man went against the customs of the time, but therein lay the power of the witch: she could rewrite the social order.

A 19th-century prayer, handwritten by a young child to protect her from any potential enemies, is on display. At the time, children would have donned amulets and charms to ward off evil. Another display explains how laundry hung outside to dry should be taken in by dusk for fear that evil spirits might be present after the setting of the sun.

The oral histories that the museum has collected shed more light on the behaviours that have grown out of these beliefs. Scarinzi learned that some local women have never been to a hairdresser, concerned that their hair would be kept and used against them in a spell.

Keeping the legend alive

Outside of the customs and superstitions ingrained in the culture of Benevento, there's a capitalist reason why the legend has survived: the Liquore Strega, founded in 1860 by Giuseppe Alberti, who opened his bar in the center of Benevento.

"He decided to name the product after the legend of the city where it was born," says Kenia Palma, marketing manager for Strega Alberti, the company that produces the liquor.

Strega means 'witch' in Italian.

It didn't take long for Strega to become a symbol of Benevento, the marketing of the yellow-colored liqueur, made in part with saffron, juniper and mint and bearing a slightly sweet yet smooth taste, was indelibly linked to the city and its witches. The label bears an illustration of witches dancing around a walnut tree. Today, its store is the first thing you see when descending from the train station. Palma notes that, on bottles of the liqueur, the location is even written as 'near the train station,' because Benevento has long been considered an important junction that connected north and south.

The Alberti family worked to make Liquore Strega a symbol of Italy itself. In the 1920s, the brand enlisted well-known Futurist artist Fortunato Depero to create stylized advertisements. After the war, Guido Alberti helped to start the country's famous literary prize, Premio Strega, named in the brand's honour.

In a way, Palma hypothesizes, the liqueur has kept the witches of Benevento alive, but with a more positive characterization than that of the witch trials of Italy's past.

"We have always recounted the dance of the witches, the Sabbath, the magical rituals, the magical potions," Palma says, pointing out that one of the brand's chocolates is even called Incantesimo, or 'magic spell.' "We have always had a positive communication."

It's not only Italians that have remained enchanted by the legend.

rajeshsharma1049@gmail.com

#SUPERSTITION

The marketing of the yellow-colored liqueur, made in part with saffron, juniper and mint and bearing a slightly sweet yet smooth taste, was indelibly linked to the city and its witches.

The logo of Benevento's professional football club, which features a witch.

Witches of Benevento's cover.

The Museum of Witches, located in the Palazzo Paolo V off the city's pedestrian Corso Garibaldi, is a testament to how the customs survive in the daily lives of its residents.

The Arch of Trajan in Benevento dates back to 114 C.E.

#HASRAT

The Love Story of Iqbal, Hasrat Jaipuri

Iqbal fell in love with a Hindu girl, Radha. She would often come to Jhakora of her home. And Iqbal would simply wait there

Iqbal, born in 1922 in Jaipur, came from a modest background. His early life was marked by a deep passion for poetry. Even as a young boy, Iqbal was known for his soulful expression through words, weaving emotions into his verses. His connection with poetry began to blossom in his teenage years, after he fell in love with Radha. Iqbal fell in love with a Hindu girl, Radha. She would often come to Jhakora of her home. And Iqbal would simply wait there. In their brief but intense relationship, Iqbal and Radha's love story faced enormous obstacles. They came from two vastly different cultural and religious backgrounds, Iqbal, a Muslim from a deeply spiritual and intellectual family, and Radha, a Hindu girl, rooted in the traditions of her people. At one point, he even worked as a bus conductor in Bombay (now Mumbai), hoping to find a better future.

The Move to Bombay and the Beginnings of a New Life

Iqbal moved to Bombay, like many young dreamers, hoping to make a name for himself in the bustling city of opportunities. However, his start was far from glamorous. As a bus conductor, Iqbal lived a life far removed from the world of glamour and poetry that he dreamed of. He wrote his pain of separation with Radha in his verses and poetry.

Iqbal's breakthrough came when his poetic skills were recognized at Mushairas in Bombay. His pen name, Hasrat Jaipuri, became known in the literary world. His eloquent verses and passionate delivery captured the attention of several influential people in the city, including those from the world of cinema.

Meeting Prithviraj Kapoor and the First Steps into Bollywood

It was at one of these Mushairas that Iqbal's life took a significant turn. Prithviraj Kapoor, the legendary actor and father of Raj Kapoor, attended a Mushaira where Iqbal recited his poetry. Kapoor was deeply impressed by Iqbal's verses and invited him to explore opportunities in Bollywood. This was a turning point for Iqbal, and he began his journey into the world of film music.

The Big Break: 'Barsaat' and the Rise of Hasrat Jaipuri

Iqbal's first big break in Bollywood came when he was hired to write lyrics for the film *Barsaat* (1949), directed by Raj Kapoor. Raj Kapoor, impressed by Iqbal's work, entrusted him with several key songs for the film. This marked the beginning of a long and successful collaboration between Iqbal and Raj Kapoor.

The Iconic Song in 'Brahmachari'

As Iqbal's (Hasrat Jaipuri's) fame grew, he continued to collaborate with Raj Kapoor and other renowned composers. One of his most famous works came in 1968, with the iconic song 'Main nashe mein hoon,' from the film *Brahmachari*. The song, composed by Shankar Jaikishan, was a playful yet emotionally charged piece, which became an anthem for many.

Iqbal's Legacy and the Influence of Love in His Lyrics

Despite his professional success, Iqbal's personal life remained marked by sacrifice and devotion. His love for poetry and music was the driving force of his life, and his lyrics became an outlet for his emotions.

Throughout his career, Hasrat Jaipuri's pen captured the essence of longing and love. His words became an expression of a romantic idealism that resonated with millions. His songs reflected a tender side of romance, often invoking themes of separation, yearning, and hope.

THE WALL

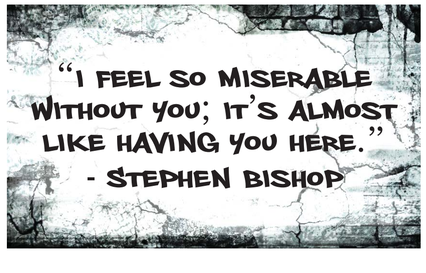

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

क्र. सं.	पट्टा संख्या	पत्रावली संख्या	आवेदक का नाम	पिता/पति का नाम	खसरा नं.	भूखण्ड संख्या	योजना का नाम	क्षेत्रफल (वर्ग गज में)	प्रयोजन
110	120 / 2021	379 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	172	SAI VAISHALI NAGAR	133.47	आवासीय
111	121 / 2021	387 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	177	SAI VAISHALI NAGAR	53.33	आवासीय
112	122 / 2021	248 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	207	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
113	123 / 2021	211 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	81	SAI VAISHALI NAGAR	88.86	आवासीय
114	124 / 2021	260 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	220	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
115	125 / 2021	262 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	218	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
116	126 / 2021	380 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	166	SAI VAISHALI NAGAR	106.66	आवासीय
117	127 / 2021	251 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	126	SAI VAISHALI NAGAR	86.93	आवासीय
118	128 / 2021	249 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	134	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
119	129 / 2021	274 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	128	SAI VAISHALI NAGAR	112.52	आवासीय
120	130 / 2021	250 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	116	SAI VAISHALI NAGAR	89.80	आवासीय
121	131 / 2021	253 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	185	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
122	132 / 2021	302 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	112	SAI VAISHALI NAGAR	94.22	आवासीय
123	133 / 2021	287 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	133	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
124	134 / 2021	289 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	222	SAI VAISHALI NAGAR	59.96	आवासीय
125	135 / 2021	284 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	228	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
126	136 / 2021	315 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	151	SAI VAISHALI NAGAR	98.13	आवासीय
127	137 / 2021	313 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	171	SAI VAISHALI NAGAR	113.51	आवासीय
128	138 / 2021	299 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	238	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
129	139 / 2021	307 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	197	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
130	140 / 2021	310 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	235	SAI VAISHALI NAGAR	97.40	आवासीय
131	141 / 2021	314 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	237	SAI VAISHALI NAGAR	90.55	आवासीय
132	142 / 2021	227 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	79	SAI VAISHALI NAGAR	96.93	आवासीय
133	143 / 2021	309 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	138	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
134	144 / 2021	308 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	221	SAI VAISHALI NAGAR	66.67	आवासीय
135	145 / 2021	189 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	95	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
136	146 / 2021	286 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	196	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
137	147 / 2021	142 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	5	SAI VAISHALI NAGAR	100.00	आवासीय
138	148 / 2021	200 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	100	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
139	33 / 2021	637 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	22	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
140	152 / 2021	320 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	211	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
141	153 / 2021	324 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	224	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
142	154 / 2021	133 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	17	SAI VAISHALI NAGAR	100.00	आवासीय
143	155 / 2021	219 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	62	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
144	156 / 2021	330 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	167	SAI VAISHALI NAGAR	180.69	आवासीय
145	157 / 2021	213 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	78	SAI VAISHALI NAGAR	113.77	आवासीय
146	158 / 2021	176 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	91	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
147	159 / 2021	126 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	63	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
148	160 / 2021	170 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	3	SAI VAISHALI NAGAR	97.68	आवासीय
149	162 / 2021	258 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	139	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
150	163 / 2021	220 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	19	SAI VAISHALI NAGAR	100.00	आवासीय
151	164 / 2021	319 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	108	SAI VAISHALI NAGAR	86.00	आवासीय
152	165 / 2021	169 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	68	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
153	166 / 2021	301 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	201	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
154	167 / 2021	317 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	159	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
155	168 / 2021	225 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	77	SAI VAISHALI NAGAR	157.97	आवासीय
156	169 / 2021	177 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	23	SAI VAISHALI NAGAR	147.08	आवासीय
157	170 / 2021	303 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	136	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
158	171 / 2021	226 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	76	SAI VAISHALI NAGAR	158.77	आवासीय
159	172 / 2021	130 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	85	SAI VAISHALI NAGAR	130.71	आवासीय
160	173 / 2021	282 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	212	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
161	174 / 2021	191 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	46	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
162	175 / 2021	166 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	15	SAI VAISHALI NAGAR	109.15	आवासीय
163	177 / 2021	167 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	16	SAI VAISHALI NAGAR	100.00	आवासीय
164	178 / 2021	194 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	92	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
165	181 / 2021	163 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	25	SAI VAISHALI NAGAR	149.90	आवासीय
166	182 / 2021	254 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	153	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
167	183 / 2021	252 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	127	SAI VAISHALI NAGAR	86.55	आवासीय
168	184 / 2021	193 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	90	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
169	185 / 2021	139 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	71	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
170	187 / 2021	277 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	234	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
171	188 / 2021	165 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	67	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
172	189 / 2021	275 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	198	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
173	190 / 2021	346 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	163	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
174	191 / 2021	180 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	47	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
175	192 / 2021	217 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	69	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
176	193 / 2021	201 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	106	SAI VAISHALI NAGAR	272.56	आवासीय
177	194 / 2021	134 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	88	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
178	196 / 2021	358 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	169	SAI VAISHALI NAGAR	111.11	आवासीय
179	197 / 2021	298 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	111	SAI VAISHALI NAGAR	95.00	आवासीय
180	198 / 2021	297 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	179	SAI VAISHALI NAGAR	66.33	आवासीय
181	199 / 2021	279 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	210	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
182	200 / 2021	216 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	14	SAI VAISHALI NAGAR	323.83	आवासीय
183	201 / 2021	334 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	113	SAI VAISHALI NAGAR	91.65	आवासीय
184	202 / 2021	214 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	73	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
185	203 / 2021	171 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	74	SAI VAISHALI NAGAR	159.25	आवासीय
186	204 / 2021	181 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	9	SAI VAISHALI NAGAR	150.44	आवासीय
187	205 / 2021	325 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	117	SAI VAISHALI NAGAR	89.17	आवासीय
188	206 / 2021	147 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	18	SAI VAISHALI NAGAR	100.00	आवासीय
189	207 / 2021	281 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	115	SAI VAISHALI NAGAR	89.80	आवासीय
190	208 / 2021	146 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	104	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
191	209 / 2021	294 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	214	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
192	210 / 2021	300 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	242	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
193	211 / 2021	296 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	180	SAI VAISHALI NAGAR	56.56	आवासीय
194	212 / 2021	132 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	59	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
195	213 / 2021	222 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	21	SAI VAISHALI NAGAR	310.75	आवासीय
196	214 / 2021	210 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	65	SAI VAISHALI NAGAR	93.11	आवासीय
197	215 / 2021	295 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	181	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
198	216 / 2021	312 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	142	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
199	217 / 2021	255 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	183	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
200	218 / 2021	224 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	10	SAI VAISHALI NAGAR	138.88	आवासीय
201	220 / 2021	385 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	236	SAI VAISHALI NAGAR	93.97	आवासीय
202	221 / 2021	316 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	202	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
203	222 / 2021	264 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	129	SAI VAISHALI NAGAR	102.75	आवासीय
204	223 / 2021	364 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	160	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
205	224 / 2021	270 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	229	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
206	225 / 2021	365 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	140	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
207	226 / 2021	383 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	192	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
208	227 / 2021	384 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	107	SAI VAISHALI NAGAR	121.57	आवासीय
209	228 / 2021	268 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	118	SAI VAISHALI NAGAR	88.91	आवासीय
210	229 / 2021	382 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	164	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
211	230 / 2021	381 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	215	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
212	231 / 2021	271 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	243	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
213	232 / 2021	257 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	206	SAI VAISHALI NAGAR	101.11	आवासीय
214	233 / 2021	267 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	239	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
215	234 / 2021	269 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	122	SAI VAISHALI NAGAR	88.04	आवासीय
216	235 / 2021	266 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	130	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
217	236 / 2021	304 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	143	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
218	237 / 2021	311 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	200	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
219	238 / 2021	265 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	230	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
220	239 / 2021	256 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	149	SAI VAISHALI NAGAR	88.88	आवासीय
221	273 / 2021	621 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	270	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
222	274 / 2021	620 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	305	SAI VAISHALI NAGAR	72.66	आवासीय
223	275 / 2021	584 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	297	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
224	276 / 2021	585 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	249	SAI VAISHALI NAGAR	73.66	आवासीय
225	277 / 2021	587 / 21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	279	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय

शेष पृष्ठ 5 पर

क्र. सं.	पट्टा संख्या			पत्रावली संख्या			आवेदक का नाम	पिता/पति का नाम	खसरा नं.	भूखण्ड संख्या	योजना का नाम	क्षैत्रफल (वर्ग गज में)	प्रयोजन
226	278	/	2021	588	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	278	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
227	279	/	2021	589	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	277	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
228	280	/	2021	590	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	286	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
229	281	/	2021	591	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	294	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
230	282	/	2021	592	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	263	SAI VAISHALI NAGAR	73.51	आवासीय
231	283	/	2021	593	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	295	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
232	284	/	2021	284	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	273	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
233	285	/	2021	595	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	280	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
234	286	/	2021	596	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	262	SAI VAISHALI NAGAR	76.75	आवासीय
235	287	/	2021	597	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	307	SAI VAISHALI NAGAR	94.24	आवासीय
236	288	/	2021	598	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	308	SAI VAISHALI NAGAR	105.08	आवासीय
237	289	/	2021	599	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	311	SAI VAISHALI NAGAR	129.27	आवासीय
238	290	/	2021	600	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	287	SAI VAISHALI NAGAR	50.26	आवासीय
239	291	/	2021	601	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	281	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
240	292	/	2021	602	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	306	SAI VAISHALI NAGAR	83.51	आवासीय
241	293	/	2021	619	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	310	SAI VAISHALI NAGAR	126.75	आवासीय
242	429	/	2021	553	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	275	SAI VAISHALI NAGAR	42.83	आवासीय
243	430	/	2021	607	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	272	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
244	431	/	2021	578	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	288	SAI VAISHALI NAGAR	48.25	आवासीय
245	432	/	2021	606	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	259	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
246	433	/	2021	582	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	296	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
247	434	/	2021	605	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	434	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
248	435	/	2021	572	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	304	SAI VAISHALI NAGAR	47.50	आवासीय
249	436	/	2021	577	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	289	SAI VAISHALI NAGAR	45.61	आवासीय
250	437	/	2021	576	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	290	SAI VAISHALI NAGAR	42.83	आवासीय
251	438	/	2021	583	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	285	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
252	439	/	2021	560	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	309	SAI VAISHALI NAGAR	115.91	आवासीय
253	440	/	2021	613	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	247	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
254	441	/	2021	558	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	250	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
255	442	/	2021	559	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	249	SAI VAISHALI NAGAR	59.00	आवासीय
256	443	/	2021	614	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	274	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
257	444	/	2021	563	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	291	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
258	445	/	2021	552	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	293	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
259	446	/	2021	580	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	284	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
260	447	/	2021	608	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	252	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
261	448	/	2021	557	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	268	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
262	449	/	2021	565	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	299	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
263	450	/	2021	571	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	261	SAI VAISHALI NAGAR	80.82	आवासीय
264	451	/	2021	561	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	266	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
265	452	/	2021	609	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	258	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
266	453	/	2021	562	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	253	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
267	454	/	2021	615	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	256	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
268	455	/	2021	616	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	255	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
269	456	/	2021	568	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	298	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
270	457	/	2021	575	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	265	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
271	458	/	2021	574	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	264	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
272	459	/	2021	573	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	257	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
273	460	/	2021	566	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	303	SAI VAISHALI NAGAR	41.66	आवासीय
274	461	/	2021	556	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	292	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
275	462	/	2021	554	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	267	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
276	463	/	2021	581	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	271	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
277	464	/	2021	567	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	302	SAI VAISHALI NAGAR	68.77	आवासीय
278	465	/	2021	603	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	276	SAI VAISHALI NAGAR	46.22	आवासीय
279	466	/	2021	604	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	254	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
280	467	/	2021	569	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	301	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
281	468	/	2021	570	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	300	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
282	469	/	2021	555	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	269	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
283	470	/	2021	564	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	282	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
284	471	/	2021	579	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	283	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
285	472	/	2021	612	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	251	SAI VAISHALI NAGAR	50.00	आवासीय
286	3	/	2021	547	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	4	SAI VAISHALI NAGAR	12.19	वाणिज्यिक
287	4	/	2021	544	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	16	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
288	5	/	2021	545	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	2	SAI VAISHALI NAGAR	19.33	वाणिज्यिक
289	6	/	2021	546	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	5	SAI VAISHALI NAGAR	29.00	वाणिज्यिक
290	7	/	2021	548	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	8	SAI VAISHALI NAGAR	23.13	वाणिज्यिक
291	9	/	2021	550	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	14	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
292	10	/	2021	551	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	28	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
293	11	/	2021	543	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	9	SAI VAISHALI NAGAR	22.66	वाणिज्यिक
294	16	/	2021	524	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	17	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
295	19	/	2021	527	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	3	SAI VAISHALI NAGAR	13.77	वाणिज्यिक
296	20	/	2021	532	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	24	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
297	21	/	2021	535	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	23	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
298	22	/	2021	624	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	9	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
299	23	/	2021	625	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	7	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
300	24	/	2021	533	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	21	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
301	25	/	2021	622	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	2	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
302	26	/	2021	623	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	8	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
303	27	/	2021	611	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	4	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
304	28	/	2021	536	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	10	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
305	29	/	2021	539	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	27	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
306	30	/	2021	540	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	12	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
307	31	/	2021	531	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	25	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
308	32	/	2021	602	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	3	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
309	34	/	2021	530	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	15	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
310	36	/	2021	526	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	26	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
311	37	/	2021	523	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	18	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
312	38	/	2021	541	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	11	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
313	39	/	2021	601	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	5	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
314	40	/	2021	526	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	20	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
315	41	/	2021	549	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	19	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
316	42	/	2021	538	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	13	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
317	43	/	2021	610	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	6	SAI VAISHALI NAGAR	33.33	वाणिज्यिक
318	44	/	2021	586	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	1	SAI VAISHALI NAGAR	22.77	वाणिज्यिक
319	45	/	2021	534	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	7	SAI VAISHALI NAGAR	21.16	वाणिज्यिक
320	46	/	2021	525	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	6	SAI VAISHALI NAGAR	23.05	वाणिज्यिक
321	47	/	2021	542	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	29	SAI VAISHALI NAGAR	34.13	वाणिज्यिक
322	48	/	2021	529	/	21	श्री रिद्वी सिद्वी डवलसपर्स जरिये पार्टनर श्रीमती सिमा बवेजा पत्नी हरमेश कुमार बवेजा		956,959, 960, 1025, 1026	1	SAI VAISHALI NAGAR	25.21	वाणिज्यिक

नगरपरिषद् कार्यालय में आवेदक हेम कंवर पत्नी दलपत सिंह द्वारा आवेदन प्रस्तुत कर बताया गया उक्त पट्टे में धोखे से प्रोजेक्ट में आवश्यक होने का बोलकर स्टाम्प पेपर व खाली पेपर पर दस्तखत करवायें तथा धोखे से इन पेपर पर शपथ–पत्र बनाकर भुगतान प्राप्त करने का नगरपालिका में देकर पट्टे बनवा लिये जबकि हेम कंवर पत्नी दलपत सिंह को जमीन का कोई भी प्रतिफल प्राप्त नही हुआ। नगरपरिषद् को गलत दस्तावेज प्रस्तुत किये जाकर पट्टा प्राप्त किया जाना पाया गया, जो कि विधि के उल्लघंन में तथा प्रावधानों के विपरीत होने के कारण निदेशालय स्वायत्त शासन विभाग, राजस्थान जयपुर की अधिसूचना दिनांक 09.05.2022 की अनुपालना में राजस्थान नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 73–ख की उपधारा (1) के तहत निरस्त योग्य है।

तथा कुचामन सिटी के खसरा नं. 956, 959, 960, 1025, 1026 में विकसित साई वै"ाली नगर कॉलोनी को एम्पावर्ड कमेठी के बैठक दिनांक 30.09.2021 के प्रस्ताव सं. 03 द्वारा मुख्यमंत्री जन आवास योजना, 2015 के प्रावधान 3–सी के अंतर्गत अनुमोदन प्रदान किया गया था। स्वीकृति योजना प्रावधानों के अनुसार अनुमोदन दिनांक से 30 माह की अवधि में सभी EWS/LIS भूखण्ड एवं आवास निर्माण व समस्त आधारभूत विकास कार्य (सड़क, नाली, जलापूर्ति, विद्युत, सीवरेज, सार्वजनिक सुविधाएँ आदि) पूर्ण किया जाना, तथा सक्षम प्राधिकारी से भवन पूर्णता प्रमाण–पत्र (Completion Certificate) प्राप्त किया जाना अनिवार्य था।

कार्यालय अभिलेखों एवं स्थल निरीक्षण के आधार अधोहस्ताकर्ता के संज्ञान में आया की निर्धारित 30 माह की अवधि मार्च 2024 को पूर्ण हो चुकी है। भवन पूर्णता प्रमाण–पत्र हेतु कोई आवेदन प्रस्तुत नहीं किया गया है।

उक्त्त सलंग्न सूचि पट्टो को निदेशालय स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर की अधिसूचना दिनांक 09.05.2022 की अनुपालना में राजस्थान नगपालिका अधिनियम 2009 की धारा 73–ख के तहत एतद्वारा निरस्त किया जाना प्रस्तावित है। अगर इस संबंध मे किसी व्यक्ति/संस्था आदि को आपत्ति है, तो 07 दिवस में इस कार्यालय में प्रस्तुत एवं सुचित करें।

आयुक्त
नगरपरिशद् कुचामन सिटी

संक्षिप्त

किसानों की समस्याएं सुनी

पावटा। विधायक आपके द्वार कार्यक्रम के तहत ग्राम पंचायत मण्ढा में विधायक ने पहुंचकर किसान भाइयों से संवाद किया और उनके हाल-चाल जाने। इस दौरान किसानों द्वारा बताई गई विभिन्न क्षेत्रीय समस्याओं को गंभीरता से सुनते हुए उनके त्वरित समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए। कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में ग्रामीणजन व किसान उपस्थित रहे, जिन्होंने खुलकर अपनी समस्याएं और सुझाव विधायक के समक्ष रखे। विधायक ने आश्वासन दिया कि क्षेत्र की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान कराया जाएगा और विकास कार्यों में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। इस अवसर पर ग्रामवासियों ने विधायक का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए स्नेहपूर्ण आशीर्वाद प्रदान किया। विधायक ने भी सभी ग्रामवासियों का आभार व्यक्त करते हुए उनके विश्वास और सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

गुणसारिया अध्यक्ष बने

टोंक । मुख्यालय स्थित न्यायालय परिसर में राजस्थान अंबेडकर वेलफेयर सोसाइटी जिला इकाई टोंक के अध्यक्ष बनाने पर बाबूलाल गुणसरिया को एवं देवकरण राजवंशी को उपाध्यक्ष बनने पर एडवोकेट कमलेश चौहान, अक्षय बेरवा, रामलाल सेलीवान, तुलसीराम चावला, अनिल मिश्रा, कमलेश चावला, मुकेश साहू, दिनेश बेरवा, कमलेश खींची, मूलचंद बेरवा, विनोद लंबा, पुष्पेंद्र मीणा, बनवारी राजावत, विकास लोधी इत्यादि ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष व उपाध्यक्ष को माला पहनकर उनका हार्दिक स्वागत किया गया। इस मौके पर मौजूद सभी अधिवक्ताओं ने उन्हे बधाइयां देकर शुभकामनाएं प्रेषित की।

गैस सप्लाई पर बैठक

खैरथल । पश्चिम एशिया में वर्तमान परिस्थितियों के चलते गैस सप्लाई बाधित होने से भिवाड़ी एवं आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में उत्पादन में कमी और श्रमिकों के पलायन की सूचना पर उप श्रम आयुक्त खैरथल-तिजारा प्रज्ञा शर्मा ने भिवाड़ी में औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों की बैठक आयोजित की। बैठक के दौरान उद्योगपतियों ने गैस आपूर्ति में कमी के कारण उत्पादन प्रभावित होने, लागत बढ़ने और श्रमिकों के पलायन जैसी समस्याओं को विस्तार से रखा। साथ ही वर्तमान संकट से निपटने के लिए वैकल्पिक सुझाव भी प्रस्तुत किए गए।

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य रामकृष्ण केदावत पुत्र श्री प्रभदयाल केदावत आयु 62 वर्ष, निवासी 12 मोरी बावा भवन के पहले, शिवाजी चौक, ब्रह्मपुरी, जयपुर ने उनके पुत्र अतुल केदावत एवं पुत्रवधु श्रीमती सोनम केदावत पत्नी श्री अतुल केदावत से अपने पारिवारिक सम्बंध तोड लिये है, क्योंकि मेरे अभिभाष्य के पुत्र अतुल केदावत व पुत्र वधु सोनम केदावत उनके कहे में नहीं है, इस कारण अतुल केदावत एवं सोनम केदावत को अपनी सम्पूर्ण सम्पतियों एवं विधिक अधिकारो से बेदखल कर दिया है । पुत्र अतुल केदावत व पुत्र वधु सोनम केदावत के किसी भी कृत्य व दायित्वों से मेरे अभिभाष्य का कोई सम्बन्ध या सरोकार नही होगा तथा उनके वर्तमान व भविष्य के किसी भी लेन देन व विवादों से मेरे अभिभाष्य की कोई जिम्मेदारी नही होगी।
(प्रशान्त शर्मा) एडवोकेट, मो.-9414044441

खोया पाया

मेरे आवास संख्या 61/29, मानसरोवर जयपुर का नियमितीकरण एवं अदेय प्रमाण पत्र दिनांक 07.02.1997, जो कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा श्री राजेन्द्र सिंह के हित में जारी किया गया था, कहीं गुम हो गया है। मिलने पर कृपया सूचित करें। सरिता अग्रवाल मो.नं.-9462775549

आवास संख्या 4 M49 जवाहर सर्किल जयपुर का मूल आवंटन पत्र, कब्जा पत्र (handing over taken over) और अदेय प्रमाण पत्र व 7 Days Letter गिर/गुम हो गया मिलने पर सूचित करें। राजू गुरनानी मो. 9414196673

मेरे भूखण्ड संख्या-1 & 28-A योजना-मरुधर विहार, जयपुर, जविप्रा का मूल पट्टा व साईट प्लान व स्टाम्प पेपर कही गुम हो गया है मिलने पर संपर्क करें। पूनम देवी गुप्ता शशि देवी-9928030616

मेरे भूखंड संख्या 560 जे.डी.ए. की आवासीय योजना आनंद लोक द्वितीय का जेडीए से जारी आवंटन पत्र, कब्ज़ा पत्र, साईट प्लान कही गुम हो गया है मिलने पर सूचित करे। मंजू गुप्ता मो. 8560095555

अलाटमेन्ट संख्या 6211 दिनांक 17/01/05 एवं डिक्लरेशन फ्लेट संख्या 84/272, प्रताप नगर, सांगानेर जयपुर के कुंभा मार्ग में खो गये है। सम्पर्क करें- 9829993208

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

ट्रोले ने मिनी ट्रैक्टर-ट्रॉली के मारी टक्कर, चालक की मौत

निवाई/गुंसी । राष्ट्रीय राजमार्ग पर गुंसी पुलिस चौकी के सामने एक अनियंत्रित ट्रोले ने मिनी ट्रैक्टर-ट्रॉली के टक्कर मार दी।

जिससे ट्रैक्टर चालक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। सदर थानाधिकारी राजेन्द्र प्रसाद ने बताया कि शिवाजी कॉलोनी गली नंबर 14

- **ट्रोला चालक तेज रफ्तार से भाग गया**

निवासी पवन कुमार (50)पुत्र मोतीलाल रैगर हनुमान जन्मोत्सव पर कौथून के बालाजी मंदिर में आयोजित कार्यक्रम के लिए भगवान श्रीराम व हनुमान जी की झांकी ले जा रहा था।

इसी दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित गुंसी चौकी के समीप पीछे से तेज गति में आ रहे एक अनियंत्रित ट्रोले ने मिनी ट्रैक्टर-ट्रॉली के टक्कर मार दी। जिससे ट्रैक्टर चालक पवन कुमार की मौके पर ही मौत हो गई।

ट्रोले के चालक ने मौके से भागने का प्रयास किया और तेज रफ्तार में ट्रोले को भगाकर ले गया। घटना की सूचना पर सदर थानाधिकारी राजेंद्र प्रसाद के नेतृत्व में पुलिस टीम ने तत्परता से फरार ट्रोले का करीब दो किलो मीटर तक पीछा किया और ट्रोले को रुकवाकर चालक को हिरासत में ले लिया। पुलिस ने क्रेन की सहायता ट्रैक्टर-ट्रॉली को सडक के किनारे करवाकर यातायात को पुनः सुचारू किया। पुलिस ने मृतक के शव का निवाई उप जिला अस्पताल में पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सुपुर्द कर दिया।

निवाई के गुंसी पुलिस चौकी के सामने हुई दुर्घटना के बाद मौके पर जमा भीड़।

आदिवासी आदिमजाति समुदाय को पृथक जनगणना कॉलम दिये जाने की मांग

कोटपूतली। अखिल भारतीय आदिवासी कांठोस जिला कोटपूतली-बहरोड़ द्वारा भारत के आदिवासी आदिमजाति समुदाय को पृथक जनगणना कॉलम दिये जाने की मांग को लेकर गुरूवार को राज्यपाल के नाम एडीएम ओमप्रकाश सहारण को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में बताया कि आदिवासी आदिमजाति समुदाय भारत का प्राचीनतम व प्रथम मूल निवासी समुदाय है। आदिमजाति आदिवासी समुदाय को पृथक जनगणना कॉलम दिये जाने हेतु विभिन्न बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित किये जाने की मांग भी की गई हैं।

मंदिरों में विशेष साज-सज्जा

पावटा। श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ हनुमान जन्मोत्सव क्षेत्रभर में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर किला हनुमान मंदिर, हखडेत हनुमान मंदिर सहित अन्य मंदिरों में विशेष साज-सज्जा की गई और सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। भक्तों ने भगवान हनुमान के दर्शन कर सुख-समृद्धि की कामना की। ललित शर्मा, निखिल शर्मा, हिमांशु शर्मा ने बताया कि हखडेत हनुमान मंदिर में अखंड रामायण पाठ, विशेष पूजा-अर्चना, सुंदरकांड पाठ और हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ आयोजित किया गया। मंदिरों को रंग-बिरंगी रोशनी और फूलों से आकर्षक रूप से सजाया गया, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। इसके साथ ही मंदिर परिसर में भंडारे का आयोजन कर श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरित की गई। भंडारे में बडी संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया और सेवा कार्य में भी बढ-चढकर भाग लिया। वही किला धाम हनुमान मंदिर में मेले का आयोजन किया गया।

हनुमान जन्मोत्सव पर भक्तों की उमड़ी भीड़, भंडारे में सेवा व आस्था का अनूठा संगम

- **मंदिर पर हवन यज्ञ व महाआरती का आयोजन, सुबह 11 बजे से सायं 4 बजे तक हजारों लोगों ने पंगत में बैठकर की प्रसादी ग्रहण**

किशनगढ़ बास। शहर के पुराना बाजार स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर पर हनुमान जी महाराज के जन्म उत्सव पर आयोजित भंडारे में सेवा और आस्था का अनूठा संगम देखने को मिला।

सुबह 11 बजे शुरू हुए भंडारे में दोपहर 4 बजे तक पंगत में बैठकर प्रसादी पाने वाले श्रद्धालुओं की लाईन नहीं टूटी वहीं भंडारे में सेवा देने वाले भक्तों में होड़ लगी थी। महिलाओं के बैठने व प्रसादी के लिए गंगा मंदिर में व्यवस्था की गई। मंदिर के महंत पंडित कालूराम शर्मा ने बताया कि गुरुवार को भंडारे से पहले सुबह अखंड रामायणपाठ का समापन हुआ । इसके पश्चात हवन यज्ञ किया गया जिसमें सामुहिक हनुमान भक्तों ने आहुति दी और महा आरती की।

हजारों की संख्या में भंडारे में पहुच श्रद्धालु भक्तो का दिनभर भीड़ रही मंदिर में हनुमान जी के आगे ढोक लगाई और पूजा कर घर परिवार की खुशहाली के लिए प्रार्थना की। भंडारा आयोजन समिति के विनय टिंटू गोयल ने बताया कि भंडारे में आलू व कोले की सब्जी और पुरी व बूंदी दाने का प्रसाद बनाया गया।

भंडारे में 8 क्विंटल आटे की पूरी बनाई, 8 बोरी आलू 2 कैरेट टमाटर तथा 5 क्विंटल कोला व 60 किलो केरी की सब्जी तैयार की गई। इसके अलावा 160 किलो बेसन व 20 किलो मैदा तथा 4 क्विंटल चीनी के बूंदी दाने बने। इसमें 20 टीन रिफाइंड, 6 टीन डालडा व 6 टीन देसी घी इस्तेमाल किया गया। आयोजन के दौरान गैस सिलेंडर की कमी भी देखने को मिली। जानकारी के अनुसार, सिलेंडर उपलब्ध नहीं होने पर आयोजकों ने लकड़ी की भट्टी का सहारा लेकर प्रसादी तैयार करवाई। हालांकि, आरोप यह भी सामने आया कि कुछ सिलेंडर ब्लैक में 2500 रुपये प्रति सिलेंडर की दर से खरीदे गए। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि प्रशासन की सख्ती के बावजूद कालाबाजारी कैसे हो रही है। यह मामला स्थानीय स्तर पर चर्चा का विषय बना हुआ है और प्रशासन की निगरानी पर भी सवाल खड़े हो रहे हैं।

बालाजी की जीवंत झांकी के दर्शन

सांभरझील, (निसं)। खेड़ापति बालाजी मंडल के तत्वाधान में 45 श्री हनुमान जन्मोत्सव की शोभायात्रा इस बार और अधिक खास तो होगी ही साथ ही भक्ति मार्ग पर चलने वाले श्रद्धालुओ को आत्म जागृति का संदेश भी देगी।

भूत पिशाच निकट नहीं आवै, महावीर जब नाम सुनावे..,,, संकट कटे मिटे सब पीरा जो सुमरै हनुमत बलबीरा के पठन से नकारात्मक शक्तियों का विनाश करते हुए हर वैश्विक संकट को जड़ मूल से समाप्त करने की बालाजी से अरदास की जाएगी। झाकियों को विशेष रूप प्रदान करने के लिए अपनी खास पहचान बना चुके खेड़ापति बालाजी मंडल के उपाध्यक्ष मुकेश उर्फ पप्पू पाराशर संपूर्ण आत्मिक भाव के साथ प्रभु के निमित्त इस कार्य में जुटे हैं। झांकियों में सांवरिया सेठ की प्रतिमा के दर्शन कर श्रद्धालु अपनी मनोकामना पूर्ण होने की भी कामना करेंगे। खेड़ापति बालाजी की फूल बंगला की भव्य झांकी शोभायात्रा का प्रमुख आकर्षण होगी। झांकी के दर्शन कर लोगों को इसका आध्यात्मिक लाभ तो होगा ही तथा काया का कष्ट भी दूर होगा। शोभा यात्रा में बजरंग अखाड़ा दल के सदस्यों की ओर अनेक रोचक प्रस्तुतियां दी जाएगी जो लोगों को दांतों तले अंगुली दबाने को विवश कर देगी।

कुश्ती परंपरा को आगे बढ़ाने पर जोर दिया

- **कई युवा खिलाड़ियों ने स्कूल एवं कॉलेज स्तर पर मैट कुश्ती में गोल्ड मेडल प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है**

भरतपुर (निस)। पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य विभाग एवं गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म गुरुवार को भरतपुर के एक दिवसीय दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में श्री वायुवृक्ष आश्रम ट्रस्ट द्वारा हनुमान मंदिर परिसर, काली की बगीची चौराहे पर नव निर्मित अखाड़े का फीता काटकर उद्घाटन किया । समारोह को संबोधित करते हुए राज्यमंत्री ने कहा कि ब्रज क्षेत्र में मल्ल विद्या की परंपरा अत्यंत प्राचीन है, जिसका संबंध भगवान श्री कृष्ण एवं बलराम के समय से जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि उस समय शुद्ध खान-पान एवं दूध-दही की परंपरा के कारण प्रत्येक परिवार में कुश्ती से जुड़ा कोई न कोई व्यक्ति अवश्य होता था, जिससे क्षेत्र में मल्ल कला का व्यापक विकास हुआ। उन्होंने कहा कि भरतपुर जिले के अनेक पहलवानों ने राष्ट्रीय स्तर की कुश्ती प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर जिले का नाम गौरवान्वित किया है। हनुमान शाला एवं अखाड़ों के माध्यम से कुश्ती खेल को जीवित रखा गया है और यहां के पहलवानों ने विभिन्न अखाड़ों में अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए पहचान बनाई है। राज्यमंत्री ने कहा कि भरतपुर, डीग एवं धौलपुर क्षेत्र के पहलवानों का एक समय पूरे राजस्थान में दबदबा रहा है तथा उन्होंने हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली तक अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। वर्तमान समय में कुश्ती प्रतियोगिताओं में बदलाव आया है और मिट्टी के अखाड़ों के स्थान पर अब मैट पर कुश्ती आयोजित की जा रही है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर, विशेषकर ओलंपिक में भागीदारी के लिए मैट पर कुश्ती का प्रशिक्षण आवश्यक है। इसी उद्देश्य से नए खिलाड़ियों को आधुनिक तकनीकों के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि वे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन कर सकें। उन्होंने कहा कि कई युवा खिलाड़ियों ने स्कूल एवं कॉलेज स्तर पर मैट कुश्ती में गोल्ड मेडल प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। राज्यमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश में खेल, रोजगार, शिक्षा एवं आधारभूत संरचना के क्षेत्र में व्यापक विकास कार्य किए जा रहे हैं। भरतपुर में भी विभिन्न विकास कार्यों के लिए पर्याप्त बजट प्रावधान किया गया है। उन्होंने काली की बगीची स्थित हनुमान मंदिर के नव अखाड़े के विकास हेतु टीन शेड निर्माण, मार्ग सुदृढ़ीकरण एवं कुंड की चारदीवारी एवं सौंदर्यकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को अवगत कराने की बात कही।

पावटा में भाजपा नेत्री रत्ना कुमारी का भव्य स्वागत

पावटा। भारतीय जनता पार्टी की सक्रिय एवं लोकप्रिय नेत्री रत्ना कुमारी शाहपुरा को भाजपा राजस्थान की प्रदेश कार्यसमिति का सदस्य बनाए जाने के उपलक्ष्य में पावटा पंचायत समिति के भोनावास स्थित पावन बागौरी माता मंदिर में भव्य स्वागत एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बागौरी माता सेवा समिति के तत्वावधान में आयोजित हुआ, जिसमें क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों, समिति पदाधिकारियों एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समारोह के दौरान रत्ना कुमारी का पारंपरिक रीति-रिवाज से माल्यार्पण एवं साफा पहनाकर आत्मीय स्वागत किया गया।

- **क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगी**

उपस्थित जनसमूह ने जोरदार अभिनंदन करते हुए उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं। अपने संबोधन में रत्ना कुमारी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें मिला यह स्नेह, सम्मान एवं विश्वास उनके लिए अमूल्य है। उन्होंने कहा कि यह सम्मान केवल उनका नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र का है। आप सभी के सहयोग, विश्वास एवं प्रोत्साहन से उन्हें जनसेवा के कार्यों को और अधिक समर्पण, निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि वे पार्टी की विचारधारा एवं जनसेवा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगी। कार्यक्रम के अंत में बागौरी माता सेवा समिति द्वारा सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया। इस दौरान सैकडों की संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे, जिससे आयोजन का माहौल उत्साहपूर्ण बना रहा।

लोकप्रिय नेत्री रत्ना कुमारी को भाजपा राजस्थान की प्रदेश कार्यसमिति का सदस्य बनाए जाने पर भव्य स्वागत किया।

नाम परिवर्तन

मैने अपना नाम पुष्पा देवी पांचाल से बदलकर पुष्पा कर लिया है। पुष्पा पत्नी श्री नवल, निवासी- मकान नंबर 207, पर्वतपुरी, गोलीमार गार्डन के पीछे, जयपुर राजस्थान

मैने अपना नाम महेंद्र सुथार से बदलकर महेंद्र कुमार सुथार कर लिया है। महेंद्र कुमार सुथार पुत्र श्री बजरंग लाल सुथार, निवासी- राजपूतों का मोहल्ला, देराजसर, सरदारशहर, चूरू, राजस्थान-331402, भविष्य में मुझे महेंद्र कुमार सुथार के नाम से जाना जावे।

मै सीमा रानी W/o JC-293540M सूबेदार मलकीत सिंह निवासी तर(263), चौड़मस्तपुर, अंबाला शहर, हरियाणा पिन-134003 मेरे पती के सर्विस रिकॉर्ड में मेरा सीमा रानी गलत नाम दर्ज है । मेरे डॉक्यूमेंट और आधार और पैन कार्ड में मेरा सही नाम सीमा है। जो सही है।

We have changed our Daughter name Sanidhya to Sanidhya Gupta D/o Saurav Gupta & Preeti Gupta R/o 67, Jaganathpuri, Boring Road, Jhotwara, Jaipur. For all purpose.

I, Ram Binod Singh is legally father of No. 8037294N Hav Akhilesh Kumar, Presently Residing at, Village: Chatra, Post: Harpur Bochaha. Teh: Dalsinghsarai Police Station: Vidyapattinagar, Dist: Samastipur, State: Bihar, Pincode -848503 have changed my name from Ram Binod Singh to Ram Vinod Singh Vide affidavit No. CE722878 Date 30/03/2026

आम सभा की सूचना

दी सांगानेर को आपरेटिव हाउसिंग सोसायटी लि. की वार्षिक आम सभा दिनांक 19/04/2026 को समिति के वर्तमान कार्यालय 12, श्रीराम नगर कालोनी सांगानेर में प्रातः 11:00 बजे अयोजित की जानी है। बैठक का एजेण्डा समिति कार्यालय पर पृथक से प्रकाशित कर दिया गया है, सभी सदस्य सूचित रहे ।
सचिव
दी सांगानेर को आपरेटिव हाउसिंग सोसायटी लि.

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)

व्यवहार मिश्रित (मुत्तफरिक) वाद सं. 172/2025
विषय- उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र।
प्रार्थी नाम पूजा रोहतगी पत्नी जोगेन्द्र सिंह जाति..
विवाद स्थान 24 वार्ड नं.12 सुमेर नगर मानसरोवर मृतक आदिती सिंह पुत्री जोगेन्द्र सिंह की सम्पत्ति के विषय में।
पेशी दिनांक- 04.04.2026
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम आदिती सिंह पुत्री जोगेन्द्र सिंह जाति... निवासी 24 वार्ड नं.12 सुमेर नगर मानसरोवर का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र, प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, प्रदान किया जावें।
अतः उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 04 माह 04 सन् 2026 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।
आज दिनांक 27 माह 03 सन् 2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।
मोहर अदालत
आज्ञा न्यायालय से-वरिष्ठ मुंसरिम
अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश क्रम-2, जयपुर महानगर प्रथम सांगानेर

(नियम 130 व 131)
अपील की सूचना के अन्तर्गत धारा 426 (1) बी एन एस एस 2023
न्यायालय श्रीमान् अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश क्रम-4 जयपुर महानगर ।। जयपुर
दिनांक :- 28/04/2026
मनोज कुमार जांगिड़
बनाम
राज्य सरकार व अन्य
अपील/निगरानी सं.73/2025
अपील/निगरानी विरुद्धआदेश दिनां 03/10/2025 के न्यायालय ए सी जे एम नं. 3 जयपुर महानगर जयपुर द्वितीय मुकदमा नं. मुकदमा नंबर 108/2025 अन्तर्गत धारा 316(2),316(5), 318(2), 318 (4) सपठित धारा 61 (2), (ए) बी एन एस एस 2023 को धारा 426 (1) बी एन एस एस 2023 के अन्तर्गत सूचित किया जाता है कि अपीलाण्ट को उपरोक्त अपील / रिविजन इस न्यायालय में दिनांक 28/04/2026 को बजे 7.30 ए.एम. पर सुनी एवं निर्णीत की जावेगी।
मोहर
वरिष्ठ रीडर
अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश क्रम-4 जयपुर महानगर द्वितीय

कार्यालय नगर पालिका मण्डल, सांभर लेक जिला जयपुर (राज0)
E-mail-sambharnagarpalika@gmail.com Phone No. 01425-228245
eosambhar.lsg@rajasthan.gov.in
क्रमांक – न.पा.सा./स्वच्छ भारत मिशन/2026/2931 दिनांकः– 30.03.2026

सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक 18 सितम्बर 2013 को भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय राजपत्र 2013 के अधिनियम संख्या 25 के अन्तर्गत "हाथ से मैला उठाने वाले कर्मियों के नियोजन का प्रतिषेध एवं उनका पुनर्वास अधिनियम, 2013" लागू किया गया है। उक्त अधिनियम के अन्तर्गत –

- हाथ से मैला उठाने की प्रथा
- बिना सुरक्षा उपकरण के सीवर, सेप्टिक टेंक, नाले अथवा अन्य बंद स्थानों में मैनुअल खतरनाक प्रवेश (Manual Hazardous Entry) पूर्णतः प्रतिबंधित है।

अतः नगरपालिका सांभर लेक की सीमा क्षेत्र में इस प्रकार की कोई भी गतिविधि पूर्णतः प्रतिबंधित एवं गैरकानूनी है। यदि कोई व्यक्ति, ठेकेदार, ऐजेंसी अथवा संस्था उक्त कार्यवाही में संलिप्त पाई जाती है, तो अधिनियम के अध्याय–3 की धारा 8 के अन्तर्गत संबंधित के विरूद्ध चालानी/दंडात्मक कार्यवाही की जाएगी, जिसमें न्यूनतम रूपये 50,000 (पचास हजार रूपये) तक का जुर्माना अथवा 01 वर्ष का कारावास या दोनों का प्रावधान है।
राज.संवाद/सी/26/258 अधिशाषी अधिकारी

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2026/2046
चूंकि प्रार्थी श्री YASH PAL JAIN, 486 ADARSH NAGAR JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत प्रन्यास श्री मुल्तान जैन वेताम्बर जैन K-8-B MUNI JAYANAND MARG FATEH TIBA ADARSH NAGAR JAIPUR के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 30.03.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 08.06.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2026/1982
चूंकि श्री राज कुमार कन्दौई पुत्र श्री मांगी लाल कन्दौई निवासी आई टी एस 1 एण्ड 2, आई टी पार्क, सीतापुरा, ई पी आई पी, जयपुर 302022 ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अंतर्गत प्रन्यास ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी सोसायटी, आई टी एस 1, 2 आई टी पार्क, ई पी आई पी, रिको इंडस्ट्रियल एरिया, जयपुर 302022 के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 25.03.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 04.06.2026
मोहर अदालत
रतन लाल योगी
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 33/2026
(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि प्रार्थी श्री निर्मल पंवार ने पंजीकृत प्रन्यास श्याम लाल पंवार आनन्दी देवी चेरिटेबल ट्रस्ट 136, रामनगर विस्तार, न्यू सांगानेर रोड, जयपुर जिसका पंजीयन क्रमांक 47/जयपुर/2003 है के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अन्तर्गत प्रपत्र-8 प्रस्तुत किया जिसमें उनके द्वारा प्रन्यासी श्रीमती विमला देवी का स्वर्गवास राधा श्रीमती प्रकाश महावर द्वारा त्याग पत्र देने के कारण उनका नाम प्रन्यास रिकार्ड से हटाने तथा प्रन्यास विधान में नवीन उद्देश्यों को समायोजित कर उक्त संशोधनों को प्रन्यास रिकार्ड में दर्ज अभिलेख किये जाने का निवेदन कर जांच किये जाने के लिए प्रपत्र-8 में आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुये परिवर्तन/संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 30.06.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 7.5.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 34/2026
(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि प्रार्थी श्री राकेश शर्मा ने पंजीकृत प्रन्यास श्री रामाकृष्णा फाउण्डेशन ट्रस्ट श्री रामकृष्णा हॉस्पिटल, बी-13, कृष्णा नगर-प्रथम, कैलाश टॉवर के पास गांधी नगर मोड़ के पास, लाल कोठी, टोंक रोड़, जयपुर जिसका पंजीयन कमांक 211/जयपुर/2025 है के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अन्तर्गत प्रपत्र 8 प्रस्तुत किया जिसमें प्रन्यास की बैठक दिनांक 10.01.2026 को लिये गये निर्णय के अनुसार प्रन्यास के विधान के बिन्दु संख्या 3 (घ) धार्मिक उद्देश्यों को हटाकर नवीन उद्देश्यों को समायोजित कर उक्त संशोधनों को प्रन्यास रिकार्ड में दर्ज अभिलेख किये जाने का निवेदन कर जांच किये जाने के लिए प्रपत्र-8 में आवेदन पत्र दिया है।
अतएव धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुए परिवर्तन / संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 30.03.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 7.5.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 36/2026
(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि प्रार्थी श्री प्रशान्त शर्मा ने पंजीकृत प्रन्यास पोद्दार ट्रस्ट, सेक्टर 7, शिप्रा पथ मानसनीवर जयपुर जिसका पंजीयन कमांक 17/जयपुर/2021 है के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अन्तर्गत प्रपत्र 8 प्रस्तुत किया जिसमें प्रन्यास के प्रन्यास विधान में नवीन उद्देश्यों को समायोजित कर संशोधित विधान को प्रन्यास रिकार्ड में दर्ज अभिलेख किये जाने का निवेदन कर जांच किये जाने के लिए प्रपत्र-8 में आवेदन पत्र दिया है।
अतएव धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुए परिवर्तन / संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 01.04.2026 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 8.5.2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

कार्यालय नगर निगम, भरतपुर

क्रमांक / शहरी सेवा शिविर/न.नि.भ./2025-26/174 दिनांक :- 02.04.2026

आपत्ति सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर निगम भरतपुर शहरी क्षेत्र में निम्न आवेदकों द्वारा स्टेट ग्रान्ट एक्ट / नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 69ए / स्टेटग्रान्ट / कच्ची बस्ती का पट्टा चाहने हेतु ऑनलाइन आवेदन कर पत्रावलियाँ प्राप्त हुई हैं। यदि इस सम्बन्ध में किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति सूचना प्रकाशित होने की तिथि से 7 दिवस के अन्दर मय साक्ष्य प्रस्तुत करें। बाद अवधि के किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा तथा बाद समस्त जाँच के आवेदक को स्टेट ग्रान्ट एक्ट / नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 69ए के तहत् / कच्ची बस्ती के तहत पट्टा जारी किये जाने की अग्रिम कार्यवाही की जावेगी।

क्र. स.	ऑनलाईन पत्रावली सं.	आवेदक का नाम	पति/पत्नि का नाम	वार्ड नं.	भूखण्ड जहां स्थित है	आवेदन का प्रकार
1	350527	अजीत सिंह	दलवीर सिंह	59	रेडक्रोस सर्किल, भरतपुर	69ए
2	354279	संध्या व तनुज गर्ग	उमेशचन्द	23	सेढ़ का मढ़, भरतपुर	69ए
3	354258	संध्या व तनुज गर्ग	उमेशचन्द	23	बर्तन बाजार गंगा मंदिर भरतपुर	69ए
4	344189	मनोज कुमार	राधेलाल	36	बासन गेट भरतपुर	स्टेटग्रान्ट
5	345579	मंजीत सिंह चौधरी	जीतेन्द्र सिंह	25	कमला रोड कुम्हेर गेट, भरतपुर	स्टेटग्रान्ट
6	345630	मुकेशचन्द	आनन्दस्वरूप	33	बासन गेट, भरतपुर	स्टेटग्रान्ट
7	39360	ओमप्रकाश	उदय सिंह	50	पक्का बाग अछनेरा रोड भरतपुर	स्टेटग्रान्ट
8	354617	काव्या जैन	नीरज जैन	28	मौहल्ला गोपालगढ़, भरतपुर	69ए
9	354581	चरन कौर	दर्शन सिंह	21	अटलबंध दरवाजा, भरतपुर	स्टेटग्रान्ट
10	354544	वंशीवारे	रामखिलाडी	10	सिंगीवाला मौहल्ला सेवर, भरतपुर	स्टेटग्रान्ट

प्राधिकृत अधिकारी
नगर निगम, भरतपुर

पंत शीर्ष क्रम में खेलकर भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज अपने खेल का आनंद लेने के बजाय खुद पर दबाव बना रहा है।

- केविन पीटरसन

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान, पंत के शीर्ष क्रम में खेलने को लेकर बोलते हुए।

आज का खिलाड़ी

नुवान तुषारा

श्रीलंका के तेज गेंदबाज नुवान तुषारा ने आईपीएल के मौजूदा सत्र में खेलने के लिए अपने क्रिकेट बोर्ड से ही टक्कर ले ली है। उन्होंने अदालत से खुद को एनओसी दिए जाने के मामले में हस्तक्षेप करने की मांग की है। श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने फिटनेस टेस्ट में नाकाम रहने के कारण तुषारा को अनापत्ति प्रमाण पत्र देने से इनकार कर दिया था। एसएलसी ने राष्ट्रीय टीम में चयन के लिए फिटनेस टेस्ट अनिवार्य कर दिया है। तुषारा ने कहा कि उनकी फिटनेस का स्तर कभी भी कम नहीं पाया गया और उन्हें पहले भी एसएलसी ने इसी तरह के फिटनेस स्तर पर खेलने की अनुमति दी थी।

क्या आप जानते हैं ?... सचिन तेंदुलकर ने टेस्ट क्रिकेट में भारत के लिए सबसे ज्यादा रन बनाए हैं।

सनराइजर्स हैदराबाद का जीत का खाता खुला, केकेआर को 65 रनों से हराया

कोलकाता, 2अप्रैल। सनराइजर्स हैदराबाद ने गुरुवार को कोलकाता नाइट राइडर्स को 65 रनों से हराकर आईपीएल 2026 में जीत का खाता खोला।

सनराइजर्स हैदराबाद ने पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 226 रन बनाए, इसके जवाब में कोलकाता नाइट राइडर्स की टीम 16 ओवर में सभी विकेट खोकर 161 रन ही बना सकी। कोलकाता की ओर से अंगकृष रघुवंशी ने सर्वाधिक 52 रन बनाए। हैदराबाद के लिए उनादकट ने तीन, मलिंगा और नितीश ने 2-2 विकेट लिए।

कोलकाता नाइट राइडर्स को फिन एलन ने दमदार शुरुआत दिलाई। लेकिन वह दूसरे ओवर में ही पवेलियन लौट गए। फिन ने 7 गेंद में 28 रन की तूफानी पारी खेली। अजिंक्य रहाणे 10 गेंद में 8 रन ही बना सके। कैमरन ठीन दो रन ही बना सके। वह रन आउट हुए। रघुवंशी 29 गेंद में 52 रन बनाए। अनुकूल खाता नहीं खोल सके।

रिंकू सिंह 25 गेंद में 35 रन बनाकर पवेलियन लौटे। सुनील नरेन 4 गेंद में 12 रन बनाकर आउट हुए। रमनदीप 9 गेंद में 10 रन ही बना सके। त्यागी ने 5 रन बनाए। वरुण खाता नहीं खोल सके। वैभव एक रन पर नाबाद रहे। सनराइजर्स के लिए जयदेव उनादकट ने तीन और इशान मलिंगा ने दो विकेट लिए। सनराइजर्स हैदराबाद ने कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ ईडन गार्डन्स में पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 226 रन बनाए। हैदराबाद की ओर से हेनरिक क्लासेन ने सर्वाधिक 52 रन बनाए। पहले बैटिंग करने उतरी हैदराबाद की टीम को अच्छी शुरुआत मिली। ट्रेविस हेड और अभिषेक शर्मा के बीच पहले विकेट के लिए 82 रन की साझेदारी हुई। ट्रेविस हेड 21 गेंद में 46 रन बनाकर आउट हुए। कप्तान ईशान किशन ने 9 गेंद में 14 रन बनाए। अभिषेक शर्मा 21 गेंद में 48 रन बनाकर पवेलियन लौटे। किशन-अभिषेक को ब्लेसिंग मुजरबानी ने आउट किया। अनिकेत वर्मा एक रन ही बना सके। नितीश रेड्डी 24 गेंद में 39 रन बनाकर आउट हुए। उन्होंने क्लासेन के साथ बड़ी साझेदारी की। सालिल खाता नहीं खोल सके। हेनरिक क्लासेन 35 गेंद में 52 रन बनाकर आउट हुए।

फीफा ने फाइनल की टिकट की कीमत 10,990 डॉलर तक बढ़ाई

नई दिल्ली, 2 अप्रैल। फीफा ने 11 जून से अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको में होने वाले वर्ल्ड कप फुटबॉल टूर्नामेंट की 48 टीमों के तय हो जाने के बाद फाइनल के लिए टिकट की कीमत का ऐलान किया है। वहीं एक टिकट की अधिकतम कीमत बढ़ाकर 10,990 अमेरिकी डॉलर कर दी है। दिसंबर में टूर्नामेंट के ड्रॉ के बाद जब फीफा ने टिकट बेचे थे तब श्रेणी एक के टिकट की कीमत 8,680 डॉलर थी।वहीं न्यू जर्सी के ईस्ट रदरफोर्ड स्थित मेटलाइफ स्टेडियम में 19 जुलाई को होने वाले फाइनल मैच के लिए फीफा के श्रेणी दो के टिकटों की कीमत 7,380 डॉलर कर दी गई है, जो पहले 5,575 डॉलर थी। इसी तरह से श्रेणी तीन के टिकटों की कीमत 5,785 डॉलर कर दी गई है जो पहले की कीमत से 4,185 डॉलर अधिक है।

बुधवार रात तक ग्रुप चरण के 72 मैचों में से 17 मैचों के टिकट बिक्री के लिए उपलब्ध थे, जबकि नॉकआउट चरण के किसी भी मैच के टिकट बिक्री के लिए उपलब्ध नहीं थे। फीफा फुटबॉल के इस सबसे बड़े टूर्नामेंट के लिए गतिशील मूल्य निर्धारण का उपयोग कर रहा है। यह टूर्नामेंट अमेरिका के 11 शहरों के अलावा मैक्सिको के तीन और कनाडा के दो शहरों में खेला जाएगा।

इस लीग में बिताया हर पल नापसंद किया : एंडरसन

नई दिल्ली, 2 अप्रैल। इंग्लैंड के दिग्गज तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन का ताजा बयान चर्चा का बड़ा विषय बन गया है और इसने सौ गेंदों वाले नए प्रारूप पर सवाल खड़े कर दिए हैं। एंडरसन ने साफ तौर पर कहा है कि पिछले साल जब उन्होंने इस लीग में हिस्सा लिया था, तब उन्हें इसमें खेलना बिल्कुल पसंद नहीं आया था। टेस्ट क्रिकेट में सात सौ से ज्यादा विकेट लेने वाले एंडरसन को अब तक के सबसे महान तेज गेंदबाजों में गिना जाता है। ऐसे में उनका यह बयान उस टूर्नामेंट के लिए झटका माना जा रहा है, जिसे लोकप्रिय बनाने के लिए इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड लगातार कोशिश कर रहा है।

एंडरसन ने कहा कि उन्होंने इस लीग में बिताया हर पल नापसंद किया और अब वह इस समय का इस्तेमाल आराम करने या अपनी फिटनेस पर ध्यान देने में करना चाहते हैं। गौरतलब है कि उन्होंने यह भी कहा कि इस साल जब यह टूर्नामेंट चलेगा, तब वह कहीं छुट्टी पर रहना पसंद करेंगे।

धोनी जल्द करेंगे मैदान पर वापसी!

नई दिल्ली, 2 अप्रैल। आईपीएल 2026 के पहले दो हफ्ते तक एमएस धोनी के खेलने की संभावना नहीं थी। इस बात की पुष्टि खुद चेन्नई सुपर किंग्स यानी सीएसके ने की थी। हालांकि, अब फ्रेंचाइजी ने फैंस को अच्छी खबर दी है। दरअसल, आधिकारिक तौर पर अभी धोनी की वापसी की खबर नहीं है लेकिन जो वीडियो सीएसके ने शेयर किया है उसे देखकर लगता है कि एमएस धोनी समय से पहले भी वापसी कर सकते हैं। दरअसल, आईपीएल 2026 से ठीक पहले सीएसके ने बताया था कि काफ स्ट्रेन के कारण से पहले दो हफ्ते तक टूर्नामेंट से बाहर रहेंगे। हालांकि, अब जो वीडियो सामने आया है उसमें एमएस धोनी अपने किट बैग के साथ नेट्स में जाते हुए दिख रहे हैं। इससे फैंस अंदाजा लगा रहे हैं कि एमएस धोनी की मैदान पर वापसी उन्हें जल्द देखने को मिल सकती है। हालांकि, अगर आप गौर से वीडियो देखेंगे तो पाएंगे कि थोड़ी बहुत लचक उनके पैर में अभी भी है।

वीडियो में देखा जा सकता है कि वे एक शख्स को अपने साथ लेकर जा रहे हैं। जाहिर है कि वह सपोर्ट स्टाफ का हिस्सा होगा। कैमरामैनसे दूर रहने की सलाह भी धोनी उस शख्स को देते हैं जबकि कैप्शन में तमिल में सीएसके ने लिखा है कि लाखों में एक।

फिलहाल, चेन्नई सुपर किंग्स को पहले मैच में राजस्थान रॉयल्स की तरफ से करारी शिकस्त मिली। लेकिन चेन्नई अब अपने होम ग्राउंड पर पहला मैच खेलने वाली है। हालांकि, स्टार स्पोर्ट्स के वीडियो में सा लग रहा है कि एमएस धोनी सिर्फ खुद को टेस्ट करने के लिए नेट्स में आए हैं।

फीडे कैंडिडेट्स में बड़ा उलटफेर, युवा सिंदारोव ने दिग्गज कारुआना को हराकर खिताब की रेस को रोमांचक बनाया

नई दिल्ली, 2 अप्रैल। फीडे कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में एक बार फिर युवा प्रतिभा जावोखिर सिंदारोव ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा। बता दें कि उन्होंने दुनिया के शीर्ष खिलाड़ियों में शामिल फेबियानो कारुआना को हराकर टूर्नामेंट में अपनी तीसरी जीत दर्ज की है, जिससे खिताब की दौड़ में उनकी स्थिति काफी मजबूत हो गई है।

मौजूद जानकारी के अनुसार यह मुकाबला राउंड का सबसे बड़ा आकर्षण रहा, जहां काले मोहरों से खेलते हुए कारुआना ने शुरुआत में मजबूत रणनीति अपनाई, लेकिन सिंदारोव की तैयारी के सामने वह असहज नजर आए। गौरतलब है कि शुरुआती चालों में ही सिंदारोव ने बढ़त बना ली थी और समय के दबाव में कारुआना की स्थिति कमजोर होती चली गई।

खेल का निर्णायक मोड़ 17वीं चाल पर आया, जब कारुआना की एक चाल ने उनकी स्थिति और मुश्किल बना दी। इसके बाद सिंदारोव ने आक्रामक अंदाज में खेलते हुए बढ़त को जीत में बदल दिया। मैच के बाद उन्होंने कहा कि उनकी तैयारी ने उन्हें इस जीत तक पहुंचाया है और वह अपने प्रदर्शन से संतुष्ट हैं।

अन्य मुकाबलों की बात करें तो अनीश गिरी ने आंद्रे एसिपेंको को हराकर शानदार जीत दर्ज की है। बता दें कि इस मुकाबले में दोनों खिलाड़ियों ने आक्रामक रणनीति अपनाई, लेकिन एक गलती एसिपेंको पर भारी पड़ गई। मौजूद जानकारी के अनुसार गिरी ने मौके का फायदा उठाते हुए बढ़त बनाई और उसे अंत तक कायम रखा।

आठ साल में पहली बार जिम्बाब्वे का दौरा करेगी ऑस्ट्रेलियाई टीम, विश्वकप से पहले खेलेगी वनडे सीरीज

नई दिल्ली, 2 अप्रैल। ऑस्ट्रेलिया की टीम अगले साल होने वाले वनडे विश्व कप के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है। टीम इसकी तैयारियों के लिए इस साल सितंबर में जिम्बाब्वे का दौरा करेगी। जिम्बाब्वे क्रिकेट इस साल सितंबर में ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम की मेजबानी करेगी। इस दौरान तीन मुकाबलों की वनडे सीरीज खेली जानी है। यह एक आठ साल में ऑस्ट्रेलिया का इस देश का पहला वनडे दौरा होगा। जिम्बाब्वे और ऑस्ट्रेलिया के बीच वनडे सीरीज का पहला मैच 15 सितंबर को खेला जाएगा, जिसके बाद 18 सितंबर को दूसरे मैच का आयोजन होगा। सीरीज का अंतिम मैच 20 सितंबर को आयोजित होगा। सभी मैच हरारे स्पोर्ट्स क्लब में खेले जाएंगे।

विश्व कप की तैयारी के लिए अहम होगा दौरा : यह सीरीज आईसीसी पुरुष क्रिकेट वर्ल्ड कप 2027 की तैयारी को लेकर जिम्बाब्वे के लिए एक अहम हिस्सा है, जिसकी सह-मेजबानी जिम्बाब्वे, दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया के साथ मिलकर करेगा। जिम्बाब्वे क्रिकेट के मैनेजिंग डायरेक्टर गिवमोर माकोनी के मुताबिक, यह दौरा टीम के लिए एक अहम मोड़ पर आया है। उन्होंने कहा, हम ऑस्ट्रेलिया का जिम्बाब्वे में फिर से स्वागत करके बहुत खुश हैं। उम्मीद है कि यह एक बेहद कड़े मुकाबले वाली वनडे सीरीज होगी। इस स्तर के मैच एक टीम के तौर पर हमारे लिए बहुत जरूरी हैं।

रासी वान डेर डुसेन ने लिया संन्यास

जोहानिसबर्ग, 2 अप्रैल। दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज रासी वान डेर डुसेन ने इस साल केंद्रीय अनुबंध में जगह नहीं मिलने के बाद गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की, लेकिन कहा कि वह अपनी घरेलू टीम लायंस की तरफ से खेलते रहेंगे। जोहानिसबर्ग के 37 वर्षीय खिलाड़ी वान डेर डुसेन ने पिछले साल मार्च से दक्षिण अफ्रीका की तरफ से कोई मैच नहीं खेला था। उन्होंने 2018 में 29 साल की उम्र में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया था तथा 18 टेस्ट, 71 वनडे और 57 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले।

भदौरिया एकेडमी तारिक क्रिकेट एकेडमी जीती, तवीश व अभिषेक का नाबाद अर्धशतक

जयपुर, 2 अप्रैल। चंबल स्पोर्ट्स द्वारा आयोजित अंडर 16 स्टेट लेवल भारती कंवर मेमोरियल वनडे क्रिकेट लीग में दिन का पहला मुकाबला नेशनल क्रिकेट ग्राउंड पर तारीक क्रिकेट अकादमी व रॉयल क्रिकेट अकादमी के मध्य खेला गया। जिसमें रॉयल क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 32 ओवर में 119 रन पर ऑल आउट हो गई।

जिसमें धैर्य मानसिंह ने 51 रन व हर्ष जाखड़ ने 14 रनों का योगदान दिया। तारीक क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में रयान खान ने चार विकेट व विनय शर्मा ने तीन विकेट व मोहन सैनी ने दो विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी तारीक क्रिकेट अकादमी 9.5 ओवर में बिना विकेट खोए 123 रन बनाकर मुकाबला जीत लिया। जिसमें तवीश शर्मा ने नाबाद 74 रन व चेतन मीणा ने नाबाद 42 रनों की पारी खेली। तारीक क्रिकेट अकादमी ने 10 विकेट से मुकाबला जीता।

अन्य मैच नारायणा क्रिकेट ग्राउंड पर भदोरिया क्रिकेट अकादमी व जयपुरिया क्रिकेट अकादमी के मध्य खेला गया। जिसमें भदोरिया क्रिकेट अकादमी पहले बल्लेबाजी करते हुए 32.2 औवर में 235 रनों पर ऑल आउट हो गई। जिसमें अनमोल शर्मा ने 78 रन व कुश सोलंकी ने 44 रन व आदित्य शर्मा ने 29 रनों की पारी खेली। जयपुरिया क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में अभयराज धनखड़ ने चार विकेट व लक्ष्यराज पारीक ने दो विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी जयपुरिया क्रिकेट अकादमी 43.5 ओवर में 152 रनों पर ऑल आउट हो गई। जिसमें अभिषेक बालोत ने नाबाद 78 रनो की पारी खेली। भदोरिया क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में आरव चोपड़ा व योगेंद्र को दो-दो विकेट मिले। भदोरिया क्रिकेट अकादमी ने 83 रन से मुकाबला जीता।

यति क्रिकेट अकादमी जीती

जयपुर, 2 अप्रैल। अंडर-12 पिंकसिटी कप में देवेंद्र शेखावत क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 40 ओवर में 207 रन 9 विकेट के नुकसान पर बनाएं। भूमिका ने 70 और जयदीप यादव ने 38 रनों का योगदान दिया! यति क्रिकेट अकादमी की ओर से दक्ष शेखावत ने 2 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी यति क्रिकेट अकादमी ने 37 ओवर में 210 रन 3 विकेट के नुकसान पर बना कर जीत हासिल कर ली। जय प्रताप ने 116 और यशवर्धन ने 39 रनों का योगदान दिया।मैन ऑफ़ द मैच जय प्रताप को चुना गया।

राजस्थान के गौरव, शिफॉन, रोहन, शोभाग बीसीसीआई अंडर-16 हाई परफॉरमेंस कैम्प में चयन

जयपुर, 2 अप्रैल। बीसीसीआई की राष्ट्रिय अंडर 16 क्रिकेट प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करने वाले राजस्थान के युवा प्रतिभावान खिलाडी गौरव सैनी, शिफॉन खान , रोहन चौधरी , शोभाग सिंह भाटी को बीसीसीआई की आल इंडिया जूनियर चयन कमेटी ने बीसीसीआई द्वारा आयोजित होने वाले अंडर 16 हाई परफॉरमेंस प्रशिक्षण शिविर हेतु चयनित किया गया है। बीसीसीआई सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस केंद्र :- शिफॉन खान, अहमदाबाद, गौरव सैनी, देहरादून, रोहन चौधरी, अनंतपुर, शोभाग सिंह भाटी, जयपुर। आगामी 11 मई से दिनांक 6 जून तक आयोजित होने वाले अंडर 16 हाई परफॉरमेंस कैम्प में भाग लेंगे।

चंबल स्पोर्ट्स ने जयपुर क्रिकेट एकेडमी को हराया

जयपुर, 2अप्रैल। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित तथा एल वी फार्मा द्वारा प्रायोजित महिला ए डिवीजन लीग में आज खेले गए मैचों में चम्बल स्पोर्ट्स ने जयपुर क्रिकेट एकेडमी 4 विकेट से हराया।

के एल सैनी स्टेडियम पर खेले मैच में जयपुर क्रिकेट एकेडमी ने टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए शिवानी चौधरी के 38 रन, संजना सोनी के 31 रन, सीमा जाट के 84 रन, वेदिका सिंह के 40 रन व पर्ल बामनावत के 11 रनो से 50 ओवर में 9 विकेट पर 235 रन बनाए।

चंबल स्पोर्ट्स के लिए दृष्टि शर्मा ने 43 पर 3, अंशी ने 30 पर 2, डिम्पल शेखावत व पारुल शर्मा ने एक - एक विकेट लिया।

जवाबी पारी में चंबल स्पोर्ट्स ने भाविनी के 37 रन, निशा गुर्जर के 14 रन, अर्शील के नाबाद 95 रन। व अर्चना योगी के नाबाद 47 रनो की पारियों से 47.1 ओवर में 6 विकेट पर 238 रन बनाकर मैच जीत लिया। जयपुर क्रिकेट एकेडमी के लिए सिद्धि शर्मा ने 41 पर 4, सीमा जाट ने 41 पर 2 विकेट लिए।

मोंटी जयसवाल की गेंदबाजी से नीरजा मोदी एकेडमी तथा जश्न रमाना के ऑलराउंड प्रदर्शन से शास्त्री एकेडमी से पूर्व क्वार्टर फाइनल में

जयपुर, 2 अप्रैल। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27 वीं नवीन नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत इन्स्पायर ग्राउन्ड पर खेले गये नीरजा मोदी क्रिकेट एकेडमी ने मोन्टी जयसवाल 15 रन पर 4 विकेट, निखिल कोहली 9 रन पर 2 विकेट तथा अर्श रावत 17 रन पर 2 विकेट की शानदार गेंदबाजी तथा चिराग शर्मा 69 रन नाबाद की बदोलत एलिट क्रिकेट अकेडमी को 7 विकिट के हसकर पूर्व क्वार्टर फाईल में प्रवेश किया।

नैना क्रिकेट ग्राउन्ड जगतपुरा में खखेले गये एक अन्य मुकाबले में जश्न रमाना 42 रन नाबाद व 19 रन पर 2 विकेट ऑल राउन्ड प्रदर्शन तथा अभिषेक वर्मा 15 रन पर 3 विकेट, अल्तमश शेख 17 रन पर 2 विकेट व राज शेखर सिंह 26 रन पर 2 विकेट की शानदार गेंदबाजी से शास्त्री क्रिकेट एकेडमी ने जयपुरिया विद्यालय को एक तरफा मुकाबले ने 9 विकेट से हराकर पूर्व क्वार्टर फाईनल में प्रवेश किया। इंस्पायर ग्राउन्ड पर एलिट क्रिकिट अकेडमी बल्लेबाजी करते हुए शुभम शर्मा 42 रन वरून 26 रन को छोड़कर कोई भी बल्लेबाज निरजा मोदी अकेडमी के गेंदाबाजो मोन्टी जयसवाल 15 रन पर 4 विकिट, निखिल कोहली 9 रन पर 2 विकिट तथा अर्श रावत 17 रन पर 2 विकेट के समक्ष नहीं टीक सके और पूरी टीम 16.1 अवर में 99 रन पर सिमट गये। जवाबी पारी में चिराग शर्मा 69 रन नाबाद (40 गेंद, 3 चौके, 6 छक्के) अंशु डागर 18 रन नाबाद की बदोलत विजय लक्ष्य 102 रन 3 विकेट खोकर 12.5 अवर में हासिल कर 7 विकेट से आसान जीत दर्ज कर ली। एलिट अकेडमी की और से शुभम शर्मा 2 तथा सजज्न शर्मा 1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे।

नैना अकेडमी पर खेले गये एक अन्य मुकाबले में जयपुरिया अकेडमी की और से पहले बल्लेबाजी करते हुए हार्दिक कुक्कड 32 रन तथा हेमन्य भारदवाज 18 रन को छोडकर कोई भी बल्लेबाज अभिषेक वर्मा 15 रन पर 3 विकेट, अल्तमश शेख 17 रन पर 2 विकेट व राज शेखर सिंह 26 रन पर 2 विकेट जश्न रमाना 19 रन पर 2 विकेट की गेंदबाजी के समक्ष नहीं टीक सके और पूरी टीम 184 अवर में 104 रन पर सिमट गई। जवाबी पारी में शास्त्री क्रिकेट अकेडमी में जश्न रमाना 42 रन नाबाद (16 गेंद, 6 चौके, 2 छक्के) मोहम्मद अनिस 48 रन (18 गेंद, 5 बीके 4 छक्के) की मदद से विजय लक्ष्य 105 रन 1 विकेट खोकर 6.5 अवर में हासिल कर 9 विकेट से 1 तरफा जीत हासिल की। इस मैच में मेन ऑफ द मैच जश्न रमाना शास्त्री क्रिकेट अकेडमी रहे।

जोधपुर नगर निगम

क्रमांकः– SBM / 2025–26 / 8899 दिनांकः– 30.03.2026

:: अल्पकालीन ई–निविदा सूचना ::

(UB NO. DLB2526WSOB40890)

नगर निगम जोधपुर की ओर से विभिन्न सिविल कार्यो हेतु ऑनलाईन ई–निविदाएं आमंत्रित की जाती है। ई–निविदा से संबंधित कार्यो की विस्तृत जानकारी, निविदा की शर्ते आदि http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in एवं https://lsg.Rajasthan.gov.in/mcjs पर देखी जा सकती है।

आयुक्त
नगर निगम जोधपुर

राज.संवाद / सी / 26 / 170

राजस्थान सरकार

कार्यालय नगर पालिका, सादड़ी (जिला–पाली) राज.

पताः मैन बस स्टेण्ड, सादड़ी (आपकी सेवा में सदैव तत्पर)

Ph.-02934-285022 email: npsadri1979@yahoo.com, gmail.com

क्रमांक : न.पा.सा. / 2026 / 5788–5790 दिनांक 30.03.2026

-:: Notice Inviting Bid ::-

Bid for subject matters of procurement are invited from intreseted bidders upto (date)& (time). Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal. (https://sppp.rajasthan.gov.in, eproc.rajasthan.gov.in) of the state departmental website.

UBN NO :- DLB2627WSOB00083 UBN NO :- DLB2627WSOB00084

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका सादड़ी

राज.संवाद / सी / 26 / 235

अजमेर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, अजमेर

पटेल स्टेडियम, बी-ब्लॉक, अजमेर (राज.), ई-मेल: asclajmercity@gmail.com टेलीफोन: 0145-2971922

क्रमांक :- ASCL-AJMER/2026-27/01 दिनांक :- 01/04/2026

खुली बोली आमंत्रण सूचना 106/2026-27

कार्यालय में 01 वर्ष के लिए संविदा के आधार पर छः कम्प्यूटर मय प्रशिक्षित कार्मिक / कम्प्युटर ऑपरेटर की सेवा उपलब्ध करवाने हेतु पंजीकृत बोली दाता/ संवेदक से खुली बोली दिनांक 15.04.2026 को अपरान्हः 1.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। विस्तृत बोली आमंत्रण सूचना एवं खुली बोली दस्तावेज वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

UBN : ASM2627SSOB00001

अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता
अजमेर स्मार्ट सिटी लिमिटेड

राज.संवाद/सी/26/206

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3831 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 30/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 09.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40796	2026_DLB_549293_1	14.90

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 225

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3798 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 19/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 08.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40768	2026_DLB_549010_1	14.88

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 148

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3790 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 18/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 08.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40766	2026_DLB_549010_1	14.86

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 145

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3806 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 23/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 09.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40778	2026_DLB_549129_1	25.45

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 149

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3794 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 17/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 08.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40765	2026_DLB_548999_1	21.81

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 146

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3814 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 27/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 09.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40792	2026_DLB_549196_1	24.86

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 150

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3786 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 20/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 08.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40769	2026_DLB_549066_1	11.34

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 147

Rajasthan Medical Services Corporation Ltd.

D-Block, Swasthya Bhawan, C-Scheme, Jaipur - 302005

Ph. No. 0141-2223887, Fax No. 0141-2228065, E-Mail-edepmrmsc-rj@nic.in

Ref. No. : F-8( ) RMSC/EPM/M-4/NIB-933/2025-26/1935 Dated :- 30/03/2026

CORRIGENDUM / ADDENDUM

Bid for item:

1. Deep Freezer, Fowler Bed, Stead Bed, Foot Step, Syringe Infusion Pump, Glucostrip & Pulse Oxymeter (Handheld) ,
2. White Box (Sharp Container), & Transport Trolley (Wheel Barrow) Reserve for MSE, Rajasthan Only

are invited from interested bidders up to Date: 16-04-2026 : 06:00 P.M. Other particulars of the bid may be visited on Procurement portal website https://sppp.rajasthan.gov.in or www.dipronline.org or https://eproc.rajasthan.gov.in or website http://rmsc.health.rajasthan.gov.in.

UBN : MSC2526GLOB00056

Executive Director (EPM)
Rajasthan Medical Services Corporation

Raj.Samwad/C/26/194

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3782 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 22/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 08.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40775	2026_DLB_549109_1	11.34
2	DLB2526WSOB40776	2026_DLB_549109_2	6.89
3	DLB2526WSOB40777	2026_DLB_549109_3	5.13

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 152

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बसेडी, जिला–धौलपुर (राज.)

क्रमांकः–न.प.ब. / निर्माण / 2025–26 / 3802 दिनांकः– 30.03.2026

ई–निविदा सूचना संख्या 21/2025–26 आमंत्रण सूचना

नगर पालिका बसेडी द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी के पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड दिनांक 08.04.2026 एवं वित्तीय बिड सारणी में दर्शायी गई दिनांक एवं समय को इस कार्यालय में खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन को अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर निविदा खोली जावेगी। निविदा के संबंध में अधिक जानकारी हेतु http://sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

Sr.No.	UBN no.	Tender Id	Estimated Cost (in Lacs)
1	DLB2526WSOB40770	2026_DLB_549070_1	5.47
2	DLB2526WSOB40771	2026_DLB_549070_2	19.44
3	DLB2526WSOB40772	2026_DLB_549070_3	5.63

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका बसेडी

राज.संवाद / सी / 26 / 151

माय भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म पर राज्य के 17 लाख युवाओं का पंजीयन- भजनलाल

मुख्यमंत्री ने इस प्लेटफॉर्म के तहत प्रदेश में चल रही गतिविधियों की समीक्षा की

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरुवार को मुख्यमंत्री निवास पर "माय भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म" के तहत प्रदेश में हो रही गतिविधियों की समीक्षा की।

- केन्द्र सरकार के अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को प्रस्तुतिकरण में बताया कि भारत यंग लीडर्स डायलॉग, विकसित भारत युवा कनेक्ट, विकसित भारत पद यात्राएं, नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत, यंग प्रोफेशनल राउन्ड टेबल और माय भारत बजट क्वैस्ट जैसे विभिन्न कैम्पेन व कार्यक्रम इस प्लेटफॉर्म पर आयोजित होते हैं।

जयपुर, 2 अप्रेल। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत' के विज़न को साकार करने में युवा शक्ति की भूमिका सबसे अहम है। प्रधानमंत्री की मंशा है कि युवाओं की ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग किया जाए। "माय भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म" देश की इसी युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनाने का सशक्त माध्यम बन रहा है।

उन्होंने कहा कि इस प्लेटफॉर्म पर राजस्थान में 17 लाख से अधिक पंजीकरण हुए हैं। हमारी डबल इंजन की सरकार युवाओं को कौशल विकास, रोजगार से जोड़ने और उनकी प्रतिभा को अवसर देने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। शर्मा गुरुवार को मुख्यमंत्री निवास पर "माय भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म" के तहत प्रदेश में हो रही गतिविधियों की समीक्षा के लिए आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि युवाओं में नशे की प्रवृत्ति की रोकथाम के लिये नशा-मुक्ति की दिशा में भी गतिविधियाँ संचालित की जाएं।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि युवाओं की अधिक से अधिक सहभागिता सुनिश्चित करते हुए नशा मुक्ति, फिटनेस और सामाजिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से 'फिट राजस्थान, हिट राजस्थान' के विज़न को हर गांव और शहर तक पहुंचाया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के कार्यकाल में पेपरलीक और भ्रष्टाचार जैसी घटनाओं से युवाओं के सपनों पर कुठाराघात हुआ। अब भर्ती परीक्षाएं पूरी पारदर्शिता और समयबद्ध रूप से आयोजित हो रही हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार पांच साल में 4 लाख सरकारी नौकरी के लक्ष्य की दिशा में काम कर रही है। अब तक 1 लाख 25 हजार नियुक्तियां दी जा चुकी हैं तथा 1 लाख से ज्यादा पदों का भर्ती कैलेण्डर जारी किया जा चुका है।

बैठक में प्रस्तुतीकरण के माध्यम से केन्द्र सरकार के अधिकारियों ने बताया कि "माय भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म" युवाओं को सरकार से सीधे जोड़ने का सशक्त डिजिटल माध्यम है। इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग, विकसित भारत युवा कनेक्ट, विकसित भारत पद यात्राएं, नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत, यंग प्रोफेशनल राउंडटेबल और माय भारत बजट क्वेस्ट जैसे विभिन्न कैम्पेन और कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों से युवा अधिक से अधिक जुड़ रहे हैं, जिससे विकसित भारत के विजन को गति मिली है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने प्रदेश से बने विकसित भारत यंग लीडर्स से संवाद भी किया। बैठक में मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास सहित, केन्द्र व राज्य सरकार के अधिकारीगण एवं यंग लीडर्स उपस्थित थे।

30 जून तक पैट्रोकेमिकल उत्पादों से कस्टम ड्यूटी हटाई

पश्चिम एशिया में जारी जंग के मद्देनज़र सरकार ने बड़ी राहत दी

- इन उत्पादों में एसिटिक एसिड, एपॉक्सी रेजिन, मेथेनॉल, अमोनिया, एथिलिन पॉलिमर्स आदि शामिल है।

नई दिल्ली, 02 अप्रैल। केन्द्र सरकार ने पश्चिम एशिया में जारी जंग के बीच, पेट्रोकेमिकल उत्पादों का मुख्य रॉ मटेरियल के रूप में इस्तेमाल करने वाले उद्योगों को बड़ी राहत देने का ऐलान किया है। इसके तहत केन्द्र सरकार ने 40 प्रमुख पेट्रोकेमिकल उत्पादों से अगले तीन महीने तक के लिए पूरी तरह से कस्टम ड्यूटी हटाने की घोषणा की है। केन्द्र सरकार के इस कदम का उद्देश्य कच्चे माल की कीमत में होने वाली बेतहाशा वृद्धि से भारतीय मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को सुरक्षित रखना है।

अमेरिका-इज़रायल तथा ईरान के बीच जारी जंग के दौरान केन्द्रसरकार द्वारा लिए गए इस फैसले से फार्मास्यूटिकल, ऑटो कॉम्पोनेंट्स, प्लास्टिक, टेक्सटाइल, पैकेजिंग और केमिकल मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में काम कर रहे उद्योगों को काफी फायदा होगा। कस्टम ड्यूटी हटाने से इन उद्योगों की उत्पादन लागत में गिरावट आएगी और आम आदमी को महंगाई के बोझ से कुछ हद तक राहत मिल सकेगी।

इस संबंध में उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार, इंडस्ट्रियल रॉ मटेरियल के रूप में एसिटिक एसिड, एपॉक्सी रेजिन, प्यूरीफाइड टैरेफ्थैलिक एसिड, मेथेनॉल, फिनोल, टॉल्यून, एनहाइड्स अमोनिया, एथिलीन पॉलीमर्स और कई तरह के फॉर्मल्डिहाइड पर लगने वाली कस्टम ड्यूटी को 30 जून तक के लिए पूरी तरह से खत्म कर दिया गया है।

उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार ने इन अहम पेट्रोकेमिकल उत्पादों के इंपोर्ट से कस्टम ड्यूटी हटाने का फैसला ऐसे समय में लिया है, जब पश्चिमी एशिया में जियो-पॉलिटिकल टेंशन चरम पर पहुंचा हुआ है। इस टेंशन का असर दुनिया भर में अहम पेट्रोकेमिकल कच्चे माल की उपलब्धता पर पड़ना शुरू हो गया है। अमेरिका और इज़रायल तथा ईरान के बीच चल रही लड़ाई के चलते वैश्विक सप्लाई चेन को भी झटका लगा है, जिसकी वजह से इन उत्पादों की कीमत में भी तेजी आने लगी है। ऐसे में कस्टम ड्यूटी हटा कर केन्द्र सरकार भारतीय उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चे माल की लगातार सप्लाई सुनिश्चित करना चाहती है।

इस संबंध में बताया गया है कि कस्टम ड्यूटी में इस छूट का उद्देश्य सप्लाई को बनाए रखने और वैल्यू चेन में कीमतों में बढ़ोतरी को रोकना है। इस कदम से केन्द्र सरकार को यह उम्मीद भी है कि एंड कंज्यूमर्स के लिए कीमतों में स्थिरता आएगी, क्योंकि कच्चे माल की लागत में कमी से कंपनियों को उपभोक्ताओं पर बढ़ी हुई कीमतें का दबाव नहीं डालना पड़ेगा।

आईपैक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

काम देख रही है। आईपैक से पहले प्रशांत किशोर भी जुड़े रहे हैं। हालांकि छापेमारी के दौरान क्या कुछ मिला है, इसकी जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

प्रवर्तन निदेशालय ने ममता बनर्जी का चुनाव प्रचार संभाल रही आई पैक नई दिल्ली, बेंगलुरु और हैदराबाद के ऑफिस में छापेमारी की। बेंगलुरु में आईपैक के डायरेक्ट ऋषिकांत सिंह के आवास पर भी रेड हुई। ईडी सूत्रों के मुताबिक, कोयला तस्करी मामले की जांच के लिए आई पैक के ठिकानों को खंगाला गया है।

अदालती आदेश के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आयोग अपने आप ही चुनाव के कार्यक्रम को 15 तारीख से आगे बढ़ाने का फैसला कैसे ले सकता है, जबकि इस संदर्भ में न तो अदालत में कोई आवेदन पेश किया गया है और न ही अदालत ने कोई अनुमति दी है।

सुनवाई के दौरान अदालत ने महाअधिवक्ता को भी अदालत में उपस्थित होने का आग्रह किया। महाधिवक्ता ने अदालत को बताया कि राज्य सरकार कुछ ही दिनों में चुनाव के कार्यक्रम को 15 अप्रैल से आगे बढ़ाने के संदर्भ में आवेदन प्रस्तुत करने जा रही थी। परंतु आयोग की ओर से चुनाव कार्यक्रम कैसे और किस प्रकार से तय किया जा रहा है, इसकी जानकारी उन्हें नहीं है। अदालत ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि राज्य सरकार व चुनाव आयोग चुनाव कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के संदर्भ में अपना आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं, परंतु वर्तमान में अदालत के समक्ष ऐसा कोई भी आवेदन पेश नहीं किया गया है। अदालत ने आगे कहा कि प्रदेश के चुनाव आयोग को इसका जवाब भी देना पड़ेगा कि उन्होंने चुनाव स्वत: ही आगे कैसे बढ़ाया, जबकि अदालती आदेश इसके बिल्कुल विपरीत थे। इसके साथ ही, अदालत ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त और मुख्य चुनाव अधिकारी को अवमानना का नोटिस जारी करा है।

आईआरजीसी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के दौरान हुई। ईरान के सरकारी मीडिया ने दावा किया कि ब्रिगेडियर जनरल फतह अलीजादेह की जान दुश्मनों के हवाई हमले में गई है।

मोहम्मद अली फतह अलीजादेह कोई साधारण फौजी नहीं थे। वे आईआरजीसी की उस स्पेशल वॉलंटियर यूनिट की कमान संभाल रहे थे, जो गुरिल्ला युद्ध और बेहद कठिन ऑपरेशंस को अंजाम देने के लिए जानी जाती है। इस यूनिट को सीधे तौर पर फतेहिन कहा जाता है।

सीरिया के गृहयुद्ध में राष्ट्रपति बशर अल-असद की सरकार को बचाने और आतंकियों से लोहा लेने के लिए इसी फतेहिन यूनिट को मैदान में उतारा गया था।

फतह अलीजादेह जैसे अनुभवी कमांडर का मारा जाना ईरानी के लिए बड़ा क्षित है।

मिडिल ईस्ट के सबसे बड़े ब्रिज पर अमेरिका का हमला

तेहरान, 02 अप्रैल। ईरान की राजधानी तेहरान को पश्चिमी शहर कराज से जोड़ने वाले एक 'बी1 हाईवे ब्रिज' पर गुरुवार को हवाई हमला किया गया। ईरानी न्यूज़ एजेंसी फार्स के मुताबिक इस हमले में कई लोग घायल हुए हैं और आसपास के इलाकों में भी नुकसान हुआ है।

यह पुल इसी साल शुरू हुआ था और इसे मिडिल ईस्ट का सबसे ऊंचा पुल माना जाता है। करीब 1050 मीटर लंबा और

- 3800 करोड़ रु. की लागत से बना यह पुल तेहरान को ईरान के उत्तरी भाग से जोड़ता है।

136 मीटर ऊंचे पिलर वाला यह प्रोजेक्ट करीब 400 मिलियन डॉलर में बना था।

इसका मकसद तेहरान को उत्तरी इलाकों से जोड़ना और व्यापार को आसान बनाना था। रिपोर्ट के मुताबिक कराज के अजीमियेह इलाके और कराज नॉर्दर्न बायपास पर इस पुल को निशाना बनाया गया।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यह हमला अमेरिका और इजराइल की तरफ से किया गया है।

यह पुल ईरान बहुत अहम इंफ्रास्ट्रक्चर माना जाता है, इसलिए इसके नुकसान से ट्रैफिक और व्यापार पर बड़ा असर पड़ सकता है।

पश्चिम एशिया संकट पर कांग्रेस के आनंद शर्मा ने भारत की कूटनीति को सराहा

इससे पहले शशि थरुर भी भारतीय नीति की सराहना कर चुके हैं

- इसके विपरीत कांग्रेस नेतृत्व लगातार भारतीय कूटनीति का विरोध कर रहा है।
- एक अन्य नेता कमलनाथ ने भी कहा कि एलपीजी संकट नहीं है।

नई दिल्ली, 02 अप्रैल। शशि थरूर के बाद अब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पूर्व केन्द्रीय मंत्री आनंद शर्मा ने पश्चिम एशिया के ताजा संकट में भारत की कूटनीति को परिपक्व और कुशल बताते हुए कहा है कि इसने संभावित खतरों से सफलतापूर्वक बचाव किया है।

इस कूटनीतिक पहल का समर्थन करते हुए उन्होंने यह भी कहा है कि इस मामले में भारत की प्रतिक्रिया को राष्ट्रीय आम सहमति और दृढ़ संकल्प का समर्थन मिलना चाहिए। शर्मा का यह बयान अमेरिका-इज़रायल तथा ईरान के बीच जारी युद्ध को लेकर कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के रूख से अलग है।

लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस इस युद्ध के दौरान भारत की कोई कूटनीतिक भूमिका नहीं होने से लेकर, एलपीजी रसोई गैस, डीजल-पेट्रोल की कमी होने का मुद्दा उठाते हुए सरकार की आलोचना करते रहे हैं। रोचक तथ्य यह है कि पार्टी के एक दूसरे बड़े नेता कमलनाथ ने भी एलपीजी की किल्लत को केवल अटकल बताया और कहा कि कोई कमी नहीं है। गुरुवार को आनंद शर्मा ने एक बयान में कहा कि ईरान पर अमेरिका और इज़रायल के अनुचित हमले के बाद दुनिया भर में उथल-पुथल मच गई है और अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचा है।

शर्मा ने कहा कि भारत के खाड़ी देशों के साथ ऐतिहासिक संबंध हैं और ईरान से सभ्यतागत रिश्ते हैं। पेट्रोलियम, एलपीजी और पीएनजी जैसी महत्वपूर्ण ऊर्जा आपूर्तियों और 200 अरब डॉलर के व्यापार के अलावा, एक करोड़ से ज्यादा भारतीय प्रवासियों के हितों की सुरक्षा के साथ लगभग 60 प्रतिशत विदेशी मुद्रा के आने के साधन का भी ध्यान में रखना जरूरी है। इस संकट से निपटने में भारत की कूटनीति काफी परिपक्व और कुशल रही है, जिसने संभावित खतरों से सफलतापूर्वक बचाव किया है।

अपने बयान को सही ठहराते हुए बातचीत में कहा कि उन्होंने सरकार के संदर्भ में नहीं, भारत की कूटनीति की कुशलता की बात की है, जिसमें हमारे राजनयिकों की बड़ी भूमिका है। पश्चिम एशिया संकट पर सर्वदलीय बैठक बुलाने की सरकार की पहल को सही ठहराते हुए शर्मा ने कहा कि इस मामले में भारत की प्रतिक्रिया को राष्ट्रीय आम सहमति और दृढ़ संकल्प का समर्थन मिलना चाहिए।

होर्मुज़ स्ट्रेट पर ब्रिटेन में 60 देशों की मीटिंग

भारत का प्रतिनिधित्व विक्रम मिसरी ने किया

- भारत ने मीटिंग में भारतीयों की सुरक्षा का मुद्दा उठाया और कहा कि भारत इकलौता देश है जिसने अपने जांबाज़ नाविकों को खोया है।

नई दिल्ली, 02 अप्रैल। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर की पहल पर करीब 60 से अधिक देशों के विदेश मंत्रियों ने ऑनलाइन तरीके से होर्मुज़ संकट पर गुरुवार को चर्चा की। सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व विक्रम मिसरी ने किया और अध्यक्षता ब्रिटेन के विदेश मंत्री यवेट कूपर ने की। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य ईरान की ओर से होर्मुज़ स्ट्रेट की आंशिक नाकाबंदी के मद्देनजर सुरक्षित समुद्री परिवहन सुनिश्चित करना था।

मिसरी ने वर्चुअल माध्यम से चर्चा में भाग लेते हुए क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय समुद्री परिवहन मार्गों की सुरक्षा पर नई दिल्ली का रुख स्पष्ट किया।

उन्होंने दुनियाभर के देशों के सामने कहा कि अंतरराष्ट्रीय समुद्री रास्तों पर जहाजों की बेरोकटोक आवाजाही हर देश का हक है। इससे कोई समझौता नहीं हो सकता। विदेश सचिव ने चिंता जताई कि इस पूरे संकट का सीधा असर भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर पड़ रहा है।

ब्रिटेन की ओर से बुलाई गई बैठक में भारत ने भारतीय नागरिकों की सुरक्षा का मुद्दा उठाया। विदेश सचिव ने कहा कि खाड़ी क्षेत्र में व्यापारिक जहाजों पर हुए हमलों में भारत इकलौता ऐसा देश है, जिसने अपने जांबाज नाविकों को खोया है। उन्होंने कहा कि इस समस्या का हल और अधिक युद्ध नहीं है। अगर दुनिया को इस संकट से बाहर निकलना है, तो सभी पक्षों को तुरंत हथियारों को शांत कर बातचीत की मेज पर लौटना होगा।

वहीं, बैठक के बारे में ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने कहा, होर्मुज़ से जहाजरानी सेवाओं को फिर से शुरू करना आसान नहीं होगा और इसके लिए समुद्री उद्योग साझेदारी के अलावा, सैन्य शक्ति और राजनयिक गतिविधियों का एक संयुक्त मोर्चा आवश्यक होगा। स्टार्मर अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की उस अपील को स्पष्ट नकार चुके हैं कि ब्रिटेन व यूरोप के अन्य देशों को होर्मुज़ खुलवाने के लिए सेना का इस्तेमाल करना चाहिए।

इस बीच, चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने चेतावनी दी कि होर्मुज़ जलडमरूमध्य से आवागमन का मुद्दा ईरान युद्ध का ही परिणाम है और जब तक लड़ाई जारी रहेगी, जलडमरूमध्य स्थिर नहीं रहेगा। वांग यी ने सऊदी अरब के विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान अल सऊद से फोन पर बातचीत के दौरान ये टिप्पणियां कीं, जिसमें उन्होंने शीघ्र युद्धविराम का भी आ ान किया।

ऑस्ट्रिया ने भी अमेरिका को एयरस्पेस देने से इन्कार किया

नई दिल्ली, 02 अप्रैल। ईरान और यूएस -इजरायल के बीच 28 फरवरी से शुरू हुई जंग थमने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। हालांकि, कई देश युद्ध विराम की कोशिश कर रहे हैं।

ऐसे समय में अमेरिका को झटका लगा है। अब ऑस्ट्रिया ने ईरान के खिलाफ युद्ध में अमेरिका की मदद करने से इनकार कर दिया है। ऑस्ट्रिया ने अमेरिका द्वारा ईरान के खिलाफ युद्ध में इस्तेमाल के लिए अपना एयरस्पेस बंद कर दिया है।

ऑस्ट्रिया ने ईरान से जुड़े सैन्य ऑपरेशनों के लिए अपने एयरस्पेस के इस्तेमाल की अमेरिकी मांग ठुकरा दी है। ऑस्ट्रिया के रक्षा मंत्रालय के अनुसार, यह फैसला देश के सख्त तटस्थता कानून के तहत लिया गया है।

ट्रंप ने अमेरिकी जनता से कहा, हम जीत गए हैं

अमेरिका की जनता को संबोधित करते हुए ट्रंप ने ईरान को नष्ट करने का दावा किया

- ट्रंप ने कहा कि ईरान की सेना इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स का कंट्रोल खत्म हो रहा है।

वॉशिंगटन, 02 अप्रैल। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ईरान के खिलाफ चल रहे युद्ध पर देश को संबोधित किया है। भारतीय समयानुसार, गुरुवार सुबह साढ़े छह बजे उन्होंने अपने भाषण में कहा कि ईरान के खिलाफ अमेरिका का सैन्य अभियान सफल रहा है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी फौज ने बहुत कामयाबी के साथ ईरान की सैन्य क्षमताओं को खत्म करते हुए उनकी परमाणु हथियार हासिल करने की उम्मीद को खत्म किया है। उन्होंने ईरान में अमेरिका के लक्ष्य पूरे होने का ऐलान किया है।

राष्ट्र को संबोधित करते हुए डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अमेरिका की सेना ने ऑपरेशन एपिक फ्यूरी के तहत युद्ध के मैदान में तेज, निर्णायक और जबरदस्त जीत हासिल की है। यह एक ऐसी जीत है, जो बहुत कम लोगों ने पहले कभी देखी होगी। ईरान की नौसेना खत्म हो चुकी है, उनकी वायुसेना तबाह हो चुकी है और उनके ज्यादातर नेता अब मारे जा चुके हैं। डॉनल्ड ट्रंप ने दावा किया ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स का कंट्रोल पूरी तरह से खत्म किया जा रहा है। मिसाइल और ड्रोन लॉन्च करने की उनकी क्षमता में भारी कमी आई है। उनकी हथियारों की फैक्टरियां तथा रॉकेट लॉन्चर टुकड़े-टुकड़े किए जा रहे हैं। अब उनमें से बहुत ही कम बचे रह गए हैं।

सात जजों को नौ घंटे बंधक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के एक समूह ने न्यायिक अधिकारियों के कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया, जो एसआईआर से संबंधित जरूरी कार्य कर रहे थे।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि पश्चिम बंगाल में हर चीज "राजनीतिक" हो चुकी है, जिसके कारण प्रशासन पर से लोगों का विश्वास पूरी तरह उठ गया है। सवाल यह है कि राज्य में बढ़ती अराजकता और हमलों के बावजूद केन्द्र सरकार कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठा रही है।

निकृष्ट किस्म की हिंसा की इन घटनाओं के बावजूद, आरोप है कि ममता बनर्जी खुले मंचों से और उकसाने वाले बयान दे रही हैं। उन्होंने कांग्रेस, ओवैसी, माकपा तथा भाजपा पर इन घटनाओं को भड़काने का आरोप लगाया है।

बताया गया कि उन्होंने लोगों, विशेष रूप से महिलाओं, से अपील की कि जो भी उनके पास उपलब्ध हो, उसके साथ बाहर निकलें और एसआईआर कार्य को रोकें। उन्होंने यह भी कहा कि "हमारी माताएं और बहनें चुप क्यों हैं?" और वादा किया कि पश्चिम बंगाल में एसआईआर का काम नहीं होने दिया जाएगा।

ममता बनर्जी हर कदम पर गैर-जिम्मेदारी और उकसावे की राजनीति को बढ़ाती रही हैं। हाल ही में उन्होंने एक सार्वजनिक मंच से कहा कि अगर वे नहीं होतीं, तो बंगाल में बहुसंख्यक समुदाय (हिंदू) जीवित नहीं रहता। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि उनके बिना, यह समुदाय दूसरे समुदाय के हमलों का शिकार हो सकता है।

इसके बाद से वे किसी भी कीमत पर एसआईआर (मतदाता सूची पुनरीक्षण) कार्य को रोकने के लिए संगठित प्रयास करती नज़र आई हैं। राज्य के शीर्ष राजनीतिक स्तर से दिए गए ऐसे बयानों के बाद लोगों में टकराव का माहौल बन गया है।

चार न्यायिक अधिकारी एसआईआर के तहत मतदाता सूची सुधार का काम कर रहे थे। इन अधिकारियों को भीड़ ने उनके कार्यालय में घेरकर रोक लिया, जो कथित तौर पर ममता बनर्जी के आ ान के अनुरूप ही हुआ।

इन न्यायिक अधिकारियों ने पहले ही राज्य प्रशासन और कलकत्ता उच्च न्यायालय को उस क्षेत्र में अपनी असुरक्षा के बारे में सूचित किया था, जहां वे कार्य कर रहे थे।

उन्होंने अपने कार्यस्थल को किसी सुरक्षित स्थान पर स्थानांतरित करने का अनुरोध भी किया था, लेकिन उनकी मांग को राज्य प्रशासन तक ठीक से पहुंचाया ही नहीं गया।

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने स्वयं राज्य प्रशासन को सुरक्षा देने में विफल रहने पर कड़ी फटकार लगाई है। अदालत ने सवाल उठाया कि यदि न्यायिक अधिकारियों को ही सुरक्षा नहीं दी जा सकती, तो स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कैसे कराए जा सकते हैं।

पूरा कार्य कलकत्ता उच्च न्यायालय के निर्देशों के तहत किया जा रहा है।

आप ने राघव चड्ढा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लोकसभा के 128 और राज्यसभा के 63 सांसदों ने हस्ताक्षर किए थे, तब पंजाब से राज्यसभा सांसद चड्ढा ने कथित तौर पर उस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था।

सूत्रों का कहना है कि कई मौकों पर चड्ढा सदन में बने रहे, जबकि आप सहित, विपक्ष के अन्य सदस्य वॉकआउट कर गए थे।

वर्ष 2025 के दिल्ली चुनावों में आप की हार के बाद चड्ढा ने पार्टी के भीतर तो लो प्रोफाइल रखा और केवल व्यापक जनहित के मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित रखा था।

बताया जाता है कि चड्ढा ने आप संस्थापक अरविन्द केजरीवाल और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के कथित शराब घोटाले में बरी होने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। हाल ही में केजरीवाल द्वारा भाजपा के खिलाफ संबोधित की गई एक प्रेस कॉन्फ्रेंस और जनसभा में भी वे अनुपस्थित रहे। एक सूत्र ने कहा, "वे अपना अलग एजेंडा चला रहे थे।"

हाल ही में चड्ढा ने भारत में पितृत्व अवकाश को कानूनी अधिकार बनाने की मांग उठाकर सुर्खियां बटोरी थीं। उनका कहना था कि बच्चे के जन्म पर माता-पिता, दोनों को बधाई दी जाती है, लेकिन देखभाल की जिम्मेदारी मुख्यत: मा ता पर आ जाती है। उन्होंने कहा कि पालन-पोषण की जिम्मेदारियां समान रूप से साझा होनी चाहिए और यह चीज कानूनों में भी प्रतिबिम्बित होनी चाहिये।

हवाई अड्डों पर महंगे खाने के खिलाफ उनकी पहल के चलते 'उड़ान यात्री कैफे' जैसे किफायती फूड काउंटर शुरू किए गए, जिससे यात्रियों को सस्ता खाना मिल सके। इसे उपभोक्ता अधिकारों की जीत बताया गया है।

सूत्रों के अनुसार, पार्टी के इस फैसले से नाराज चड्ढा भाजपा नेतृत्व के संपर्क में हैं और उनके भगवा दल में शामिल होने की संभावना जताई जा रही है।

एसआई ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एडवोकेट पीबी सुरेश ने दलील देते हुए कहा कि कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने 9 जनवरी 2026 को हाईकोर्ट को निर्देश दिया था कि वह 31 मार्च से पहले प्रार्थियों का मामला तय करे और उनके अधिकारों को संरक्षित रखे।

खंडपीठ ने उनकी अपीलों पर पक्षकारों की बहस सुनकर गत 19 जनवरी को फैसला सुरक्षित रख लिया था। ऐसे में भर्ती परीक्षा होने से प्रार्थी पक्ष के अधिकार प्रभावित होंगे। इसके जवाब में राज्य सरकार की ओर से एएजी शिवमंगल शर्मा ने कहा कि इस भर्ती परीक्षा में हजारों अभ्यर्थी शामिल होने जा रहे हैं।

राज्य सरकार ने भर्ती की सभी जरूरी प्रशासनिक एवं व्यवस्थागत तैयारियां पूरी कर ली हैं।

ऐसे में इस स्तर पर भर्ती परीक्षा स्थगित करने से अव्यवस्था पैदा होगी। इसलिए भर्ती परीक्षा स्थगित नहीं की जाए।

'5037 बीघा में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मकान तोड़ने की नौबत आ जायेगी।

इस पर याचिकाकर्ता की ओर से पैरवी कर रहे अधिवक्ता पी सी भंडारी ने कहा कि राज्य सरकार को और हाउसिंग बोर्ड को अपनी जमीन बचाने का पूरा प्रयास करना चाहिये और इसी में राज्य सरकार का और आम जनता का हित है। उन्होंने कहा कि 5037 बीघा जमीन में से वह जमीन, जिस पर अतिक्रमण नहीं है, उसे बचाने का प्रयास राज्य सरकार को पूरी तरह से करना चाहिये। सुनवाई के दौरान अदालत ने एडिशनल सॉलिसीटर जनरल (ए.एस.जी.) से आश्वासन लिया कि राजस्थान सरकार व हाउसिंग बोर्ड सुनिश्चित करें कि उक्त भूखंड में शेष खुले स्थानों पर अतिक्रमण किसी भी हालत में नहीं होने दिये जायेगा। अदालत ने आदेश दिये हैं कि हाउसिंग बोर्ड व याचिकाकर्ता के वकील पूरे क्षेत्र का विस्तृत मैप बनायें, जिसमें विवादित क्षेत्र और खुले क्षेत्रों को अच्छे से अंकित किया गया हो, ताकि अतिक्रमण होने से रोका जा सके। अदालत ने इस दस्तावेज को बनाने व अदालत में पेश करने के लिये एएसजी व याचिकाकर्ता को समय दिया है और इस मामले की अगली तारीख 1 मई, 2026 तय की है।

वृद्धा से 80 ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपराध है। जिसमें कई स्तरों पर करीब ढाई दर्जन से अधिक बैंक खातों का उपयोग किया गया है।

जमानत याचिका में कहा गया था कि उसके खाते में पांच लाख रुपए आए थे और वह पीड़िता को दस लाख रुपए देकर राजीनामा कर रहा है। ऐसे में उसे अग्रिम जमानत का लाभ दिया जाए। वहीं अदालत में पेश होकर पीड़ित महिला ने कहा था कि उसे जांच एजेंसी न्याय नहीं दिला पा रही है और वह दबाव में राजीनामा कर रही है। सभी पक्षों को सुनने के बाद, अदालत ने गत 27 मार्च को जमानत याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908